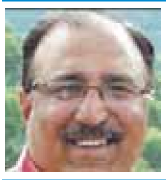
04 - सरकारी स्कूल की मजबूती में विकास की बुनियाद

05 - पीएम मोदी के मार्गदर्शन में समृद्धि की ओर मध्यप्रदेश

A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 01 नवम्बर, 2025

06 - हम मजबूत और एक रहेंगे तो प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में बुलंदियों पर पहुंचेंगे...

07 - अमृता प्रीतम का साहित्य और मानवीय संवेदना

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 40, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

सत्तर का मध्यप्रदेश और सात मंजिलें !

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

देखते ही देखते अपना मध्यप्रदेश अब 70 साल का हो गया। मनुष्य के जीवन में सत्तर की उम्र अमूमन वानप्रस्थाश्रम (राजनेताओं को छोड़कर) की होती है, लेकिन किसी देश और प्रदेश के लिए यह अंक महज एक पड़ाव भर है। एक क्षण पीछे मुड़कर देखने का और हर घड़ी आगे की ओर देखते और बढ़ते रहने का है। भारत में अधिकांश प्रदेशों की अपनी सांस्कृतिक, भाषिक और भौगोलिक अस्मिता रही है। लेकिन मध्यप्रदेश संभवतः अकेला ऐसा राज्य है, जिसकी मुख्य पहचान ही उसका भूगोल है। चूंकि वह इस विशाल देश के बीचों- बीच है, इसलिए ह्रदय प्रदेश है, सुप्त न हो, लेकिन संतोषी प्रदेश है और ह्रदय क्षेत्र होने के कारण कई बोझ, सपने और सौजन्य भी पाले हुए है। यूं मप्र कई बोलियों, उपसंस्कृतियों, समुदायों और प्राकृतिक विविधताओं का सुंदर मेल है, वहीं 'मध्यप्रदेशी' होने का ठीक-ठीक अर्थ पूछा जाए तो आज भी सिर खुजाना पड़ता है। बहरहाल सत्तर साल के इस बहुआयामी सफर के बाद इतना तो कहा ही जा सकता है कि मध्यप्रदेशी होने का भावनात्मक दृष्टि से अर्थ मध्यमार्गी होना है। सहिष्णु और समावेशी होना है। मध्यप्रदेश ने एक इकाई के रूप में अपना राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सफर 1 नवंबर 1956 को तब प्रारंभ किया था, जब उसे राजनीतिक और भौगोलिक जोड़तोड़ के बाद एक ऐसे राज्य के रूप में आकार दिया गया था, जो सात क्षेत्रीय अस्मिताओं से जुड़ता तो था, लेकिन उसकी स्वयं की अपनी अलग कोई पहचान नहीं थी। यानी यही पहचान थी कि मप्र की कोई स्वतंत्र पहचान नहीं थी। वस्तुतः बीते सात दशक मप्र की इसी 'आत्म की पहचान', स्थायी 'स्व की खोज' और एकात्मता के अन्वेषण की यात्रा है। निरपेक्ष भाव से देखें तो इस अनंत यात्रा की प्रमुख सात मंजिलें हैं, जिनमें से कुछ मध्यप्रदेश ने हासिल कर ली हैं तो कुछ की प्राप्ति के लिए उसकी जद्दोजहद और संकल्प यात्रा गतिमान है।

इस देश में मप्र अकेला ऐसा राज्य नहीं है, जिसका आधुनिक राज्य के रूप में जन्म 1 नवंबर 1956 को हुआ। आंध्रप्रदेश (अविभाजित), केरल और कर्नाटक राज्य की स्थापना भी इसी दिन हुई थी। यूं भी 1956 का साल भारतीय गणतंत्र में राज्यों के नए जन्म का साल था। भाषायी आधार पर 'राज्य पुनर्गठन आयोग' की रिपोर्ट को स्वीकार करते हुए तत्कालीन नेहरू सरकार ने इस साल कुल 14 नए राज्य और 6 केन्द्र शासित प्रदेशों के गठन को मंजूरी दी थी। इनमें से चार राज्य 1 नवंबर को वजूद में आए। हालांकि ये सब अपना 'बर्थ डे' अलग-अलग ही मनाते रहे हैं। लेकिन मप्र के अलावा बाकी तीन राज्यों के जन्म का मुख्य आधार एक भाषा और काफी हद तक समान संस्कृति थी। लेकिन मप्र में मोटे तौर पर बोली जाने वाली संपर्क भाषा भले हिंदी हो, लेकिन जिन भौगोलिक टुकड़ों को जोड़कर इसे बनाया गया था, उनकी राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक स्थिति और मानसिकता में भी काफी अंतर था। लिहाजा यह कहना गलत नहीं होगा कि 'मध्य प्रदेश' पहले बना, 'मध्यप्रदेशीपन' अब रूप ले रहा है।

जिन 'सात मंजिलों' की बात हम कर रहे हैं, उनमें से कुछ तो काफी हद तक हासिल कर ली गई हैं, जैसे कि मध्यप्रदेश की अस्मिता की खोज और उसे आत्मसात करना। मप्र बनने के चार दशकों तक यह राज्य और इसके रहवासी मालवी, बुंदेली, निमाड़ी, चंबलवासी, महाकोशली, छत्तीसगढ़ी में बंटे हुए थे। कहा जाता था कि जब तक मप्र का भावनात्मक एकीकरण नहीं होगा, तब तक यह राज्य विकास के राजमार्ग पर नहीं दौड़ सकता। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी राज्य के विकास का बड़ा कारण उसकी राजनीतिक स्थिरता, एकता, प्रबुद्ध चेतना और सांस्कृतिक आग्रह भी है। दूसरे, नवगठित मप्र का प्रशासनिक दृष्टि से भी चरित्र अलग-अलग था। कहीं वह सामंती था तो कहीं औपनिवेशिक था। सात दशकों में इतना तो हुआ है कि मध्यप्रदेश अपने उस ऊबड़-खाबड़ चरित्र से एक समतल पर तो आ गया है। भले ही दक्षता, ईमानदारी, पारदर्शिता और परफार्मेंस के पड़ाव अभी हासिल करने हैं। आज नई पीढ़ी स्वयं को मध्यप्रदेशी कहलाने में संकोच नहीं करती। मध्यप्रदेशी होने के साथ साथ अपनी आंचलिक अस्मिता बताना भी अब जरूरी नहीं है। प्रदेश का राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण कमोबेश हो चुका है, जिसमें अच्छाइयां और बुराइयां दोनो निहित हैं। शायद इसीलिए राज्य में चुनावी जनादेश प्रायः स्पष्ट रूप से आता है। इसके अलावा कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें मप्र ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। वो है- कृषि उत्पादन, खेल तथा अधोसंरचना विकास। हालांकि हम अभी भी औद्योगिक राज्य नहीं हैं। रोजगार सृजन और मानव संसाधन प्रदाता के रूप में हमारी भूमिका मिली-जुली है। हालांकि मप्र के युवा अखिल भारतीय स्तर पर कई क्षेत्रों में प्रदेश का नाम ऊंचा कर रहे हैं। लेकिन मप्र में देश की सर्वाधिक आदिवासी आबादी निवास करती है, उसे मुख्य धारा में लाने में जितनी सफलता मिलनी चाहिए थी, वह अभी तक नहीं मिली है।

लेकिन जो मंजिलें अभी अधूरी हैं, उनमें सबसे अहम है मानव विकास सूचकांक की चुभती सुइयां। स्वास्थ्या, शिक्षा, रोजगार आदि के क्षेत्र में मप्र की उपलब्धियां अभी भी अपेक्षा से बहुत कम हैं। मप्र 'बीमारू' राज्य की गिरफ्त से भले बाहर आ गया हो, लेकिन 'तीमारू' राज्य बनने के लिए उसे अपने ही पड़ोसी प्रतिद्वंद्वियों से सख्त प्रतिस्पर्द्धा करनी होगी।

मप्र उन राज्यों में से है, जिन्हें प्रकृति ने जी भर कर सौगात दी है। जैविक विविधता जबर्दस्त है। मप्र के शहर गांव ही नहीं, यहां के जंगल भी दूसरे प्राणियों को पनाह देने में पीछे नहीं हैं। चीते और डॉल्फिन इसके उदाहरण हैं। लेकिन मानव विकास के अंधाधुंध गतिविधियां मप्र के इस अलंकार पर भी डाका डाल रही हैं। भूख, गरीबी, कुपोषण और ज्यादा मातृ और शिशु मृत्यु दर अभी भी मध्यप्रदेश के सुखी राज्य बनने में बड़ा रोड़ा हैं। ये वो मुश्किल और चुनौती भरी मंजिलें हैं, जिन्हें पार कर हम देश के उन राज्यों की प्रांत में बैठ सकते हैं, जो अपेक्षाकृत विकसित और सम्पन्न का टैग लिए बैठे हैं। बावजूद राजनीतिक रूप से सरकार किसी की हो, सभी मप्र की नैया को खेने की पूरी कोशिश करते रहे हैं। चाहे रविशंकर हों या मोहन। शुक्ल हों या यादव।

सत्तर को संस्कृत में सप्तति कहते हैं और सात का अंक पूर्णांक माना जाता है, क्योंकि यह अविभाज्य है। सप्तति को भी पूर्णता और दिव्यता का प्रतीक माना गया है। लेकिन यह पूर्णता मनुष्य के साथ साथ एक राज्य के अनुभव संसार से भी जुड़ी होती है। मनुष्य ढलती उम्र में बैरागी हो सकता है, लेकिन किसी देश या राज्य के शब्दकोश अथवा स्वप्नकोश में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। यहां 'चरैवेति' ही संकल्पसूत्र है। मध्यप्रदेश की आत्मा उसकी सहिष्णुता और चरित्र समावेशिता है। 'ह्रदय प्रदेश' होने के नाते यह सभी को 'गुण दोषों' के साथ स्वीकारता है। मप्र का यह गुण नैसर्गिक और प्रकृति प्रदत्त है। यह संवर्द्धित होगा तो मध्यप्रदेश रहेगा। मध्यप्रदेश रहेगा तो ह्रदय प्रदेश भी रहेगा। ह्रदय प्रदेश रहेगा तो विकास और उत्कर्ष के सप्त सुर भी गूंजेंगे। मप्र के जन्म की यह सत्तरवीं वर्षगांठ उसके अस्तित्व और आत्मीय चरित्र की शताब्दी पूरी होने का आश्वासन भी है। बधाई मध्यप्रदेश..!

शरद की सुबह

कभी–कभी इतनी
मुलायम होती है
जैसे सुबह हो ख़रगोश
की गुलाबी आँख
जैसे सुबह हो पारिजात
के नन्हे फूल
जैसे सुबह हो
झीना–सा काँच
कभी–कभी सुबह को
सुनने और छूने में डर लगता है
कि जैसे अभी दरक जाएगा
एक गुनगुना दिन।

– विवेक चतुर्वेदी

पटेल चाहते थे पूरा कश्मीर पर नेहरू ने बांटा : मोदी

पीएम बोले-जो अंग्रेज नहीं कर पाए कांग्रेस ने किया, वंदे मातरम् का हिस्सा काटा

वडोदरा (एजेंसी)। पीएम मोदी शुक्रवार को सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के मौके पर गुजरात पहुंचे। उन्होंने नर्मदा जिले के एकता नगर में सरदार पटेल की 182 मीटर ऊंची प्रतिमा (स्टेच्यू ऑफ यूनिटी) पर पुष्पांजलि अर्पित की। एकता नगर में राष्ट्रीय एकता दिवस परेड का आयोजन हुआ। पीएम ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा- सरदार पटेल पूरे कश्मीर को भारत में मिलाना चाहते थे, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ऐसा नहीं होने दिया। कश्मीर को अलग संविधान से बांट दिया। कांग्रेस की गलती की आग में देश दशकों तक जलता रहा। पीएम ने कहा- कांग्रेस को न केवल अपनी पार्टी और सत्ता, बल्कि गुलाम मानसिकता अंग्रेजों से मिली है।

कांग्रेस को अंग्रेजों से गुलाम मानसिकता विरासत में मिली

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा– कांग्रेस को न केवल अपनी पार्टी और सत्ता अंग्रेजों से विरासत में मिली, बल्कि गुलाम मानसिकता को भी आत्मसात किया। कुछ ही दिनों में वंदे मातरम् अपनी 150वीं वर्षगांठ मनाई जाएगी। जब अंग्रेजों ने 1905 में बंगाल का विभाजन किया, तो इसके विरोध में वंदे मातरम् नागरिकों की आवाज बना। मोदी ने कहा– अंग्रेजों ने वंदे मातरम् बोलने पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की। वे कभी सफल नहीं हुए। वंदे मातरम् का मंत्र भारत के हर कोने में गूंजता रहा। जो काम अंग्रेज करने में विफल रहे, कांग्रेस ने हासिल किया। कांग्रेस ने धार्मिक आधार पर वंदे मातरम् के एक हिस्से को हटा दिया।

राष्ट्रहित प्रथम के विचार पर सदैव अडिग रहे सरदार पटेल : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सरदार पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व, अटूट इच्छाशक्ति और अदम्य देश भक्ति ने देश को एक सूत्र में बांधा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व, अटूट इच्छाशक्ति और अदम्य देश भक्ति ने आज़ादी के बाद बिखरे हुए भारत को एक सूत्र में बांधने के लिए 562 रियासतों का विलय कराया। भारत को एक राष्ट्र में संगठित करने का उनका कार्य इतिहास की सबसे उल्लेखनीय प्रशासनिक उपलब्धियों में गिना जाता है। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व में कठोरता और करुणा का अद्भुत संगम लिए वे जहाँ एक ओर राष्ट्रहित प्रथम के पक्ष पर सदैव अडिग थे, वहीं देश की जनता के प्रति वे गहरी संवेदना रखते थे। वे जनता की नब्ज़ समझते थे। सरदार पटेल ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि सच्चा नेतृत्व, स्पष्ट वक्तव्य, निर्णायक कार्यों, स्थिर बुद्धि, लौह संकल्प और शक्तिशाली निर्णयों से पहचाना जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150 वीं जयंती के अवसर पर एक दौड़ देश की एकता और अखंडता के लिए रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम के अवसर पर शौर्य स्मारक में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थितजन को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई और रन फॉर यूनिटी को झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और भारत माता एवं सरदार पटेल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर देश भक्तिपूर्ण गीतों की धुनें प्रस्तुत की गईं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरदार पटेल मूलतः एक साधारण किसान परिवार से थे। उनके बड़े भाई विठ्ठल भाई पटेल थे। दोनों भाइयों ने अपने-अपने क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया। वल्लभभाई ने अपने भाई के कहने पर विदेश जाकर कानून की शिक्षा प्राप्त की। वे भारतीय राजनीति में एक मिसाल थे, उन्होंने किसानों के साथ हुए अन्याय को देख गांधी जी के आंदोलन में सक्रियता से भाग लेना आरंभ किया। बारडोली आंदोलन के बाद उन्हें सरदार की उपाधि मिली। फिर चाहे नमक आंदोलन हो या भारत छोड़ो आंदोलन, सरदार वल्लभभाई पटेल हर आंदोलन की रीढ़ बन गए। स्वतंत्रता संग्राम में सरदार पटेल का योगदान वास्तव में अद्वितीय था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की आज़ादी के समय जब अंग्रेज़ों ने यह तय कर लिया कि अब उन्हें देश छोड़ना है, तो उन्होंने भारत को टुकड़ों में बाँटने का भयावह षड्यंत्र रचा। अंग्रेजों को यह ज्ञात था कि अगर भारत एकजुट रहा तो वह दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति बन जाएगा। अतः अंग्रेजों ने भारत की 562 रियासतों को स्वतंत्र छोड़ने की योजना बनाई। इन रियासतों में हमारा भोपाल भी शामिल था। कई रियासतों के राजा-महाराजा अपनी सेना, संपत्ति और सत्ता के साथ स्वतंत्र राज्य बन सकते थे। हैदराबाद, जूनागढ़, भोपाल जैसी कई रियासतों ने भारत में शामिल होने से मना कर दिया था, कुछ रियासतें स्पष्टतः पाकिस्तान की ओर झुकाव दिखा रही थीं।

मध्यप्रदेश में निवेश, नवाचार और रोजगार के संकल्प का अभ्युदय

ब्लॉग

डॉ. मोहन यादव
(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

मध्यप्रदेश आज अपनी स्थापना के 70वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। एक नवंबर 1956 को अस्तित्व में आये मध्यप्रदेश में विकास की नई यात्रा विगत दो दशकों से आरंभ हुई, जो प्रदेश को देश में अग्रणी राज्य बनाने की संभावनाओं तक पहुंच गई है। यह सुखद संयोग है कि आज देवउठनी ग्यारस के पावन अवसर पर राज्योत्सव का आयोजन किया जा रहा है। हमारे तीज, त्यौहार और परंपराएं हमारी संस्कृति का आधार हैं। उत्सव के आनंद से ही भविष्य निर्माण के भाव निर्मित होते हैं। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रदेश में सभी त्यौहारों को व्यापक स्वरूप में मनाया जा रहा है। अपने त्यौहारों का सांस्कृतिक संदर्भ ही हमें पुरातन से नूतन की प्रेरणा देता है।

हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत का ह्दय मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। हमें मां नर्मदा, चंबल, पार्वती, शिप्रा नदियों का सान्निध्य और बाबा महाकाल का आशीर्वाद प्राप्त है। यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य जी की तपोस्थली है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने चित्रकूट में लंबा समय व्यतीत किया है। इतिहास प्रसिद्ध राजा नल, भर्तृहरि, विक्रमादित्य की जन्म स्थली भी मध्यप्रदेश रही है। सम्राट विक्रमादित्य ने ही शकों के आतंक से भारत को मुक्त किया था। संसार की पहली वैज्ञानिक कालगणना 'विक्रम संवत्' का आरंभ भी मध्यप्रदेश के उज्जैन से हुआ था।

मुझे बताते हुए प्रसन्नता है कि हम अपने ऐतिहासिक गौरव की दिव्यता और प्राकृतिक भव्यता के साथ विरासत से विकास की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को विश्व में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए विकसित भारत निर्माण का संकल्प दिया है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हमारा देश विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री जी के इस संकल्प को साकार करने और विकसित भारत निर्माण के लिए मध्यप्रदेश में निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। प्रदेश में उद्योग वर्ष मनाने के साथ राज्योत्सव की थीम 'उद्योग और रोज़गार' रखी गई है। इसमें प्रदेश के सतत विकास, सांस्कृतिक समृद्धि और जनभागीदारी का भाव है।

यशस्वी प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हमें निवेश और औद्योगिक विकास की यात्रा को परिणाम में बदलने का अवसर प्राप्त हो रहा है। विविधता से समृद्ध मध्यप्रदेश के हर क्षेत्र की अपनी विशेषता, क्षमता और दक्षता है, जिसमें अनंत संभावनाएं हैं। इसी को केन्द्र में रखकर हमने प्रदेश में रीजनल इन्वेस्टर्स समिट का नवाचार किया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रदेश के हर क्षेत्र का कौशल और उद्योग इसमें शामिल हुआ है। व्यापार को सरल बनाने और निवेशकों से सीधे संवाद के लिए हमने मार्च 2024 से उज्जैन से निवेश यात्रा शुरू की और फिर जबलपुर, ग्वालियर, सागर, रीवा, शहडोल, नर्मदापुरम, मुंबई, कोयंबटूर, बेंगलुरु, पुणे, दिल्ली, यूके, जर्मनी, जापान, दुबई तक इसे विस्तार दिया। विभिन्न सम्मेलनों, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय रोड-शो के माध्यम से मध्यप्रदेश के निवेश में कई गुना वृद्धि हुई है।

निवेशकों को एक सक्षम, सरल और सुरक्षित वातावरण प्रदान किया गया है। प्रदेश में इनोवेशन हब, स्टार्टअप पॉलिसी, फंडिंग सपोर्ट और इन्क्यूबेशन नेटवर्क स्थापित कर देश की स्टार्टअप क्रांति को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि मध्यप्रदेश ने पिछले एक वर्ष में औद्योगिक निवेश के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों ने प्रदेश में निवेश के प्रति गहरी रुचि दिखाई है। खनिज कॉन्क्लेव में प्रदेश को 56 हजार करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिले, जो खनिज नीति और प्रशासनिक सरलता का परिणाम हैं। आईटी पार्क, इलेक्ट्रॉनिक निर्माण इकाइयां और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में भी निवेश को प्रोत्साहन मिला है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष है कि प्रदेश एक ऐसे परिवर्तनकाल से गुजर रहा है जहां निवेश, नवाचार और रोज़गार आधार स्तंभ हैं। लगभग दो वर्षों में प्रदेश ने उद्योग, कृषि, दुग्ध उत्पादन, पर्यावरण, ऊर्जा और सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

भारत के समग्र विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हमें गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी (ज्ञान) के सम्मान का मंत्र दिया है। विकास के इन आधार स्तंभ के अनुरूप प्रदेश विकास और कल्याण के लिए युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन के तहत कार्य किया जा रहा है।

गरीब कल्याण मिशन में स्वरोज़गार और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सुविधा आदि की दिशा में कार्य किया जा रहा है। मध्यप्रदेश कौशल विकास मिशन और स्टार्टअप नीति 2025 ने युवाओं को जॉब सीकर से जॉब क्रिएटर में परिवर्तित किया है। कौशल विकास मिशन के माध्यम से युवाओं को उद्योग-आधारित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रोज़गार मेले, अप्रेंटिसशिप कार्यक्रम और डिजिटल स्किल सर्टिफिकेशन जैसे प्रयास युवाओं को रोज़गार से जोड़ रहे हैं। रोज़गार सृजन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। शासकीय और निजी क्षेत्रों में युवाओं के लिए स्थायी, कुशल और सम्मानजनक अवसर उपलब्ध किये जा रहे हैं। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने शासकीय भर्ती का कैलेण्डर जारी किया और उसके अनुरूप भर्ती प्रक्रिया भी आरंभ हो गई है।

कृषि क्षेत्र को नवाचार के साथ सशक्त बनाने की दिशा में एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ है। प्रदेश सरकार ने ड्रोन आधारित फसल निरीक्षण, स्मार्ट सिंचाई प्रणाली और कृषि उत्पाद मूल्य संवर्धन पर विशेष फोकस किया है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और मुख्यमंत्री खेत-तालाब योजना सहित अन्य प्रयासों से किसानों के लिए सिंचाई क्षेत्र बढ़ाने का लगातार प्रयत्न किया जा रहा है। केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना से प्रदेश के किसानों को सिंचाई और पानी की सुविधा व्यापक स्तर पर उपलब्ध होगी। प्रदेश में सिंचाई का रकबा 52 लाख हेक्टेयर से अधिक हो चुका है। इसे दोगुना करने का लक्ष्य है। आगामी 3 वर्षों में सिंचाई क्षेत्र का रकबा 100 लाख हेक्टेयर करने की योजना है। कृषि उपज का प्रत्यक्ष भुगतान, ऑनलाइन मंडी व्यवस्था और जैविक खेती के प्रोत्साहन ने अन्नदाताओं की आय में वृद्धि की है। मध्यप्रदेश गेहूं, सोयाबीन, चना और मसालों के उत्पादन में अग्रणी प्रदेश हैं।

महिला सशक्तिकरण को आर्थिक स्वावलंबन से जोड़ने की दिशा में नारी शक्ति मिशन परिवर्तनकारी सिद्ध हो रहा है। लाड़ली बहना योजना के माध्यम से लाखों महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा मिली है। महिला उद्यमिता नीति के तहत महिलाओं को लघु उद्योग, डेयरी, हस्तशिल्प और सेवा क्षेत्र में अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। महिलाओं द्वारा संचालित स्व-सहायता समूह को वित्तीय सहायता और बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है। यह मिशन नारी शक्ति ही नहीं बल्कि नये भारत की आधारशिला है।

गौ-धन हमारी अर्थव्यवस्था का स्थायी स्तंभ बने इसके लिए हमने गौ-संवर्धन और दुग्ध उत्पादन को आर्थिक नवाचार का केंद्र बनाया है। मुख्यमंत्री गौ-संवर्धन मिशन के तहत प्रदेशभर में गौ-अभयारण्य और गौ-सेवा केंद्रों की स्थापना की गई है। लगभग दो वर्षों में प्रदेश ने दुग्ध उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि हासिल की है।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन और प्रदेशवासियों के सहयोग और संबल से कल्याणकारी नीतियों और निर्णयों को अमल में लाने में सफलता प्राप्त हुई है। मध्यप्रदेश की स्वर्णिम यात्रा सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के साथ आगे बढ़ रही है। गरीब के चेहरे पर मुस्कान, किसान की खुशहाली, नारी का सम्मान और युवाओं का उज्ज्वल भविष्य हमारा संकल्प भी है और लक्ष्य भी। आइये, हम सब मिलकर समग्र विकास के साथ आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाएं और विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनें।

प्रदेशवासियों को मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस की मंगलकामनाएं...।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 01 नवम्बर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

आवारा कुत्तों पर एससी ने सरकारों से फिर मांगा जवाब

● कहा-देश के सभी राज्यों के मुख्य सचिव अब तक सो रहे ● कहा-हमारे आदेश का सम्मान नहीं, आने दीजिए, हम निपटेंगे

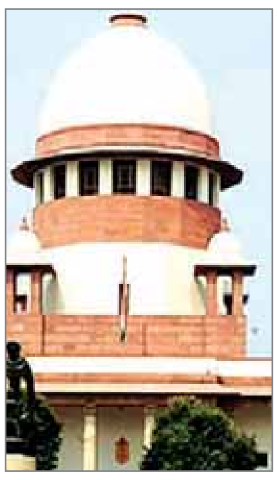

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को आवारा कुत्तों से जुड़े केस में सुनवाई करते हुए सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को व्यक्तिगत रूप से पेश होने से छूट देने की याचिका खारिज कर दी। जस्टिस नाथ ने कहा, जब हम मुख्य सचिवों से हलफनामा दाखिल करने के लिए कहते हैं, तो वे इस पर चुप्पी साधे रहते हैं। हमारे आदेश का कोई सम्मान नहीं है। तो ठीक है, उन्हें आने दीजिए। हम उनसे निपट लेंगे। दरअसल,

सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य सचिवों को 3 नवंबर को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का आदेश दिया है। इससे पहले 27 अक्टूबर को कोर्ट ने पश्चिम बंगाल और तेलंगाना को छोड़ सभी राज्यों के मुख्य सचिवों से जवाब मांगा था। सुप्रीम कोर्ट आवारा कुत्तों के काटने से होने वाले रेबीज के बारे में एक मीडिया रिपोर्ट पर एक्शन लेते 28 जुलाई से मामले की सुनवाई कर रहा है। 22 अगस्त को हुई पिछली सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों से जुड़े केस का दायरा दिल्ली-एनसीआर से बढ़ाकर पूरे देश में कर दिया था और सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को इसमें पार्टी बनाने का निर्देश दिया था। कोर्ट ने कहा था, जिन कुत्तों को पकड़ा जाता है, उनकी नसबंदी और टीकाकरण कर जहां से उठाया है, वहीं वापस छोड़ दिया जाए।

भारत और चीन बॉर्डर पर भारी बर्फबारी, सिक्किम में रेड अलर्ट

मोन्था तूफान के असर से छत्तीसगढ़ में बारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-चीन सीमा के लगे इलाकों में शुक्रवार को भारी बर्फबारी हुई, जिससे पूरे सिक्किम में तापमान में भारी गिरावट आई। कई ऊंचाई वाले इलाकों में पारा जीरो से नीचे चला गया, जिससे इन रास्तों पर यातायात प्रभावित हो गया है। नाथुला, कुपुप और त्सोम्गो (चांगू) झील और उसके आसपास सुबह से ही भारी से बहुत भारी बर्फबारी दर्ज की गई। आईएमडी ने सिक्किम के लिए रेड अलर्ट जारी किया है, जिसमें अगले 24 घंटों में मौसम की खराब होने की चेतावनी है। अधिकारियों ने पर्यटकों और ट्रांसपोटर्स से ऊंचाई वाले इलाकों

की यात्रा न करने की सलाह दी है क्योंकि बर्फ जमा होने के कारण सड़कें फिसलन भरी हो गई हैं। सीमा सड़क संगठन की टीमें बर्फ हटाने के लिए लगातार काम कर रही हैं। बंगाल के कई जिलों में अगले 24 घंटों में मध्यम बारिश की चेतावनी जारी की है। चक्रवाती तूफान मोन्था का असर छत्तीसगढ़ पर बना हुआ है।

पूर्व क्रिकेटर अजहर तेलंगाना मंत्रिमंडल में किए गए शामिल

रेड्डी सरकार पर साधा निशाना

हैदराबाद (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान और कांग्रेस नेता मोहम्मद अजहरुद्दीन ने शुक्रवार को तेलंगाना सरकार में मंत्री पद की शपथ ली। राज भवन की तरफ से जारी सूचना के मुताबिक राज्यपाल जिष्णु देव

वर्मा ने मुख्यमंत्री सहित कई महत्वपूर्ण नेताओं की उपस्थिति में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान को शपथ दिलाई। अजहरुद्दीन के शामिल होने से मंत्रिमंडल में कुल सदस्यों की संख्या 16 हो गई है, जबकि दो और जगह खाली हैं। विधानसभा सदस्यों की संख्या के अनुसार, तेलंगाना में अधिकतम 18 मंत्री हो सकते हैं। पूर्व क्रिकेटर को मंत्रिमंडल में शामिल करने के निर्णय को भाजपा ने चुनावी फैसला करार देते हुए इसका विरोध किया है। भाजपा नेता शशिधर रेड्डी ने कहा, मोहम्मद अजहरुद्दीन को कैबिनेट में जगह देने का प्रस्ताव आगामी जुबली हिल्स उपचुनाव में मतदाताओं के एक वर्ग को लुभाने और उनके वोट हासिल करने की कोशिश के अलावा और कुछ नहीं है और यह आदर्श आचार संहिता का घोर उल्लंघन है। उन्होंने कहा कि हालाँकि आदर्श आचार संहिता पूरे हैदराबाद शहर पर लागू नहीं।

क्रेन हवा में अटकी, सांसद ने ऑपरेटर को थप्पड़ जड़ा

अंबेडकर प्रतिमा पर माला चढ़ाकर उतरते वक्त झटका लगा तो भड़के गणेश सिंह

सतना (नप्र)। क्रेन में बैठे सतना सांसद गणेश सिंह को झटका लगा तो वे ऑपरेटर पर भड़क गए। उसे सबके सामने थप्पड़ मार दिया। मामला शुक्रवार को सरदार पटेल जयंती पर आयोजित कार्यक्रम का है। इसका वीडियो भी सामने आया है। सांसद गणेश सिंह ने सुबह रन फॉर यूनिटी में हिस्सा लिया। इसके बाद वे सेमरिया चौक पहुंचे। यहां क्रेन के हाइड्रोलिक बॉक्स में चढ़कर अंबेडकर प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद नीचे आते समय मशीन अचानक झटके से बीच में रुक गई। सांसद कुछ देर हवा में ही अटके रहे। मशीन हिली तो असंतुलन की स्थिति बन गई।

घटना को लेकर भाजपा नेत्री नीता सोनी ने कहा कि सांसद ने तो केवल ऑपरेटर को थप्पड़ मारा है। उसके तो हाथ-पैर तोड़ देने चाहिए।

ऑपरेटर को बुलाया, थप्पड़ मार दिया- इसी बीच सांसद ने ऑपरेटर गणेश कुशवाहा को अपने पास बुलाया। उसका हाथ खींचते हुए नाराजगी जताई। फिर थप्पड़ मार दिया। गणेश कुशवाहा नगर निगम की विद्युत शाखा में मस्टर कर्मचारी है। नगर निगम की विद्युत शाखा की हाइड्रोलिक क्रेन में ही सांसद सवार थे।

घटना के समय मौके पर भाजपा कार्यकर्ता और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद थे। इनमें से किसी ने मोबाइल से पूरी घटना का वीडियो बना लिया।

ऑपरेटर बोला- क्षमता दो की, केबिन में तीन लोग चढ़े- ऑपरेटर गणेश कुशवाहा ने बताया कि हाइड्रोलिक क्रेन के केबिन की क्षमता अधिकतम दो लोगों की है। इसमें औसत 125 किलो वजन तक सहन किया जा सकता है। जब माल्यार्पण के लिए राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह और भाजपा जिला अध्यक्ष भगवती पांडेय एक साथ केबिन में चढ़े, तभी वजन अधिक होने पर आपत्ति की गई थी।

कुशवाहा ने कहा कि माल्यार्पण कराने के बाद केबिन नीचे लाया गया। राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी आसानी से उतर गईं, लेकिन सांसद गणेश सिंह के उतरने में दिक्कत हुई। समर्थकों के कहने पर केबिन को और नीचे लाया गया तो जर्क लग गया। थप्पड़ मारने की बात को उन्होंने सहज अंदाज में लेते हुए कहा कि ये सब चलता है।

कांग्रेस ने कहा- भाजपा नेता अहंकार में- कांग्रेस ने घटना को आपत्तिजनक बताया है। पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अभिनव बरौलिया ने कहा- सांसद द्वारा कर्मचारी को चांटा मारना बताता है कि भाजपाई किस तरह से दंभ और अहंकार में हैं। यह बताता है कि भाजपा, जनता और किसी की नहीं है, सिर्फ अहंकार की है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन होगी अब बेहद खास

रेलवे का पूरा प्लान तैयार, यात्रियों की बल्ले-बल्ले

नई दिल्ली (एजेंसी)। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन को और सुविधाजनक और बनाने के लिए रेलवे को कुछ सुझाव मिले हैं। बोर्ड ने रिसर्च डिजाइन एंड स्टैंडर्ड ऑर्गनाइजेशन से इन पर गौर करने को कहा है। मुख्य रेलवे सुरक्षा आयुक्त ने ट्रेन को मंजूरी देते समय कई सुरक्षा उपाय बताए। इनमें अग्निरोधी केबल, आसानी से पहुंच योग्य पैनिक बटन और वायरिंग दोष पता करने वाले उपकरण शामिल हैं। ये बदलाव यात्रियों की सुरक्षा और आराम बढ़ाने के लिए जरूरी हैं। रेलवे सुरक्षा आयुक्त ने सीसीटीवी और क्रैश हार्डेंड मेमोरी मॉड्यूल जैसे सिस्टम के लिए खास तरह की केबलों का इस्तेमाल जरूरी बताया है।

सर क्रीक से लेकर कराची तक डर का माहौल!

● भारतीय सेनाओं का 'अभ्यास त्रिशूल' शुरू, पूरे पाकिस्तान में हाई अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने गुरुवार से गुजरात के कच्छ क्षेत्र में अपनी बहुप्रतीक्षित त्रि-सेवा सैन्य अभ्यास 'एक्सरसाइज त्रिशूल 2025' की शुरुआत कर दी है। यह अभ्यास सर क्रीक से लेकर कराची तक फैले संवेदनशील सीमावर्ती इलाके में केंद्रित है, जहां भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना अपनी संयुक्त ताकत का पूर्ण प्रदर्शन कर रही है। पाकिस्तान ने इस अभ्यास के मद्देनजर अपनी हवाई सीमाओं पर प्रतिबंध लगा दिए हैं और पूरे सैन्य तंत्र को हाई अलर्ट पर रखा है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यह अभ्यास न केवल भारत की सैन्य तैयारी का प्रदर्शन है, बल्कि पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश भी है कि सर क्रीक क्षेत्र में कोई भी साहसिक कदम इतिहास और भूगोल दोनों बदल देगा। एक्सरसाइज त्रिशूल 30 अक्टूबर से 10 नवंबर तक चलेगी।

नौसेना से शुरुआत, वायुसेना पर समापन

'त्रिशूल' अभ्यास का पहला चरण भारतीय नौसेना के नेतृत्व में शुरू हुआ है। इसके बाद भारतीय थलसेना दूसरा चरण संभालेगी, जबकि अंतिम चरण में भारतीय वायुसेना की निर्णायक भूमिका रहेगी। इसके साथ ही सीमा सुरक्षा बल और तटरक्षक बल भी इस अभ्यास में सहयोगी बलों के रूप में शामिल हैं, जिससे यह अभ्यास देश की समेकित राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का प्रतीक बन गया है।

- **20,000 से अधिक सैनिकों की भागीदारी-** इस सैन्य अभ्यास में 20,000 से अधिक सैनिक भाग ले रहे हैं। इनके साथ अत्याधुनिक टी-90एस और अर्जुन टैंक, अटैक हेलीकॉप्टर, मिसाइल सिस्टम, राफेल और सुखोई-30 एसयू जैसे लड़ाकू विमान, तथा नौसेना के फ्रिगेट्स और डेस्ट्रॉयर्स तैनात किए गए हैं। इन सभी के संयुक्त अभियानों के जरिए वास्तविक युद्ध परिस्थितियों का अनुकरण किया जा रहा है, ताकि सेनाओं के बीच तालमेल और दक्षता की परख हो सके। अभ्यास के शुरू होने से पहले पाकिस्तान ने कराची और लाहौर क्षेत्र में कुछ उड़ान मार्गों में बदलाव की घोषणा की थी। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम भारत के पश्चिमी मोर्चे पर गतिविधियों को देखते हुए उठाया गया है। इससे पहले, 2 अक्टूबर को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को सख्त चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था कि कराची जाने वाला एक रास्ता सर क्रीक से होकर जाता है।

देश में सारे फसाद की जड़ है आरएसएस और बीजेपी

मल्लिकार्जुन खरगे बोले-संघ को बैन कर देना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में कांग्रेस बनाम आरएसएस का विवाद तूल ही पकड़ता जा रहा है। बेटे प्रियंक खरगे के बाद अब कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी आरएसएस के कार्यक्रमों को बैन करने के राज्य सरकार के फैसले का समर्थन कर दिया है। खरगे ने कहा, मेरा निजी विचार है कि आरएसएस को बैन कर देना चाहिए क्योंकि देश में कानून व्यवस्था की ज्यादातर दिक्कतें आरएसएस-बीजेपी की वजह से ही हैं। उन्होंने कहा कि 1948 में महात्मा गांधी की हत्या के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी आरएसएस की आलोचना ही की थी। कांग्रेस अध्यक्ष ने यह दावा भी किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी झूठ को सच में बदलने में माहिर हैं। उन्होंने कहा कि पटेल ने भारत के धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक स्वरूप की रक्षा के लिए आरएसएस को प्रतिबंधित किया था। आप (भाजपा) हर चीज के लिए कांग्रेस को दोष देते हैं तो अपनी करतूत को भी देख लीजिए। खरगे ने कहा, 'सच को जितना मिटाने की कोशिश कर लो, वह नहीं मिटेगा।' उन्होंने कहा, आज सरदार पटेल की जन्म जयंती है और पूर्व पीएम इंदिरा गांधी की पुण्य तिथि है। सरदार पटेल लौह पुरुष थे तो इंदिरा गांधी आयरन लेडी थीं।

एसआईआर पर बंगाल में बिखर रहा विपक्ष का कुनबा

टीएमसी पड़ी अकेले, नहीं मिल रहा है कांग्रेस का साथ

कोलकाता (एजेंसी)। बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के खिलाफ इंडिया गठबंधन की एकजुटता पश्चिम बंगाल में बिखर सकती है। तृणमूल कांग्रेस जहां एसआईआर का खुलकर विरोध कर रही है, वहीं कांग्रेस और लेफ्ट पार्टियां बेहद सतर्क प्रतिक्रिया दे रहे हैं। कांग्रेस पूरी तरह एसआईआर के खिलाफ नहीं है। पार्टी ने चुनाव आयोग को एसआईआर पर कुछ सुझाव दिए हैं।

आयोग सुझाव नहीं मान रहा है, इसलिए पार्टी एसआईआर की प्रक्रिया का विरोध कर रही है। पश्चिम बंगाल में 2026 की पहली छमाही में विधानसभा चुनाव है। ऐसे में बिहार की तरह वहां भी राजनीतिक माहौल गर्म है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी 2011 से लगातार सत्ता में है। कांग्रेस, लेफ्ट और तृणमूल कांग्रेस के इंडिया गठबंधन के घटक दल होने के बावजूद ममता बनर्जी अपने दम पर चुनाव लड़ती रही है। ऐसी स्थिति में कांग्रेस विपक्ष की भूमिका में है। इसलिए, पार्टी फूंक-फूंककर कदम रख रही है। वहीं, तृणमूल-भाजपा इस मुद्दे पर आमने-सामने हैं। बंगाल में इस मुद्दे पर कांग्रेस न तो तृणमूल के साथ न भाजपा के साथ दिखना चाहती है।

बिहार में एनडीए का एक करोड़ नौकरी और रोजगार का वादा

केजी से लेकर पीजी तक मिलेगी फ्री शिक्षा, करोड़पति बनाने का भी एक सपना

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव के लिए एनडीए ने भी घोषणा पत्र जारी कर दिया है। इस घोषणा पत्र में महागठबंधन की तरह ही सरकारी नौकरियों पर खासा जोर दिया गया है। मेनिफेस्टो में पहली घोषणा ही यह की गई है कि फिर से सरकार बनी तो एनडीए के राज में 1 करोड़ सरकारी नौकरी एवं रोजगार प्रदान किए जाएंगे। वादा किया गया गया है कि कौशल जनगणना करके कौशल आधारित रोजगार देंगे। इसके अलावा हर जिले में मेगा स्किल सेंटर बनेगा। इसके तहत बिहार को ग्लोबल स्किल सेंटर के रूप में स्थापित करने की बात कही गई है। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत राज्य की तरफ से भी 3000 रुपये प्रति वर्ष देने का वादा किया गया है। इसका नाम कर्पूरी ठाकुर किसान सम्मान निधि रखा गया है। इसके तहत

एक तरफ किसानों को लुभाने का प्रयास है तो वहीं योजना के नामकरण से अति पिछड़ों को भी सम्मान देने की कोशिश की गई है। महिलाओं के लिए भी बड़ा ऐलान हुआ है।

- **पंचायत स्तर पर ही फसलों की खरीद का वादा-** बिहार में खेती-किसानी को मजबूत करने का भी भरोसा दिया गया है। घोषणा पत्र में कहा गया है कि पंचायत स्तर पर ही धान, गेहूं, दलहन और मक्का जैसी फसलों की एमएसपी पर खरीद की जाएगी। राज्य में ऐग्रिकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर पर 1 लाख करोड़ रुपये का निवेश करने की बात कही गई है। महागठबंधन के साथ मुकेश सहनी के दांव की भी काट करने की कोशिश हुई है। एनडीए ने ऐलान किया है कि मत्स्य पालक योजना के तहत मछुआरों को 9000 रुपये का लाभ दिया जाएगा। इसके अलावा बिहार में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रखंड स्तर पर चिलिंग व प्रोसेसिंग सेंटर बनाने का भरोसा दिया।

पाकिस्तान पर दो तरफा वार, होगा बड़ा जल प्रहार

● भारत ने सिंधु पर झटका दिया, तालिबान करेगा कुनार नदी पर मार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के साथ जारी तनाव के बीच अफगानिस्तान को भारत का साथ मिला है। भारत ने एक ओर जहां अफगानिस्तान की संप्रभुता के लिए खड़े होने की बात कही है। वहीं, कुनार नदी पर अफगानिस्तान की तरफ से बांध बनाए जाने की योजना का भी समर्थन किया है। खास बात है कि कुनार नदी पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम क्षेत्र में बहती है और बांध के कारण प्रवाह पर असर पड़ सकता है। गुरुवार को इस प्रश्न पर कि क्या भारत, अफगानिस्तान की कुनार नदी पर बांध बनाने की तालिबान सरकार की योजना में मदद करेगा, तो विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने अपनी साप्ताहिक प्रेस वार्ता में इस पर समर्थन जताया है। खास बात है कि जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ हुए सिंधु जल समझौते को स्थगित कर दिया था।

परिक्रमा

मध्यप्रदेश कांग्रेस जिला अध्यक्षों को देगी प्रशिक्षण

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं

एक ओर जहां समूचे देश की नजर इस समय बिहार में हो रहे विधानसभा चुनाव के आने वाले नतीजों की ओर लगी है क्योंकि इसका एनडीए और इंडिया गठबंधन की राजनीति पर व्यापक असर पड़ने वाला है तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस अपने विस्तार और नवसृजन अभियान की भी अनदेखी नहीं कर रही है। यही कारण है कि कभी मध्यप्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी रही सतपुड़ा की सुरम्य वादियों से घिरी हुई सतपुड़ा सुंदरी पचमढ़ी में 2 नवम्बर से 11 नवम्बर तक दस दिवसीय कांग्रेस का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है जिसमें बिहार में पहले चरण के मतदान के बाद लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पचमढ़ी आयेंगे। वे कांग्रेस के जिला अध्यक्षों से संवाद करेंगे और एक रात भी वहीं बितायेंगे। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के कार्यक्रम को भी अंतिम रुप दे दिया गया है और उनका भी पचमढ़ी प्रवास फायनल हो गया है। जिला स्तर पर जो नये अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं उन्हें संगठन को मजबूत करने के लिए यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है और इस शिविर में राजनीतिक रणनीति, संगठन संचालन, संवाद कौशल व अनुशासन पर विशेष सत्र रखे जायेंगे। पूरे मनोयोग और प्रतिबद्धता के साथ यदि जिला अध्यक्षों को काम करना है तो शारीरिक तंदुरुस्ती भी बहुत जरुरी है इसलिए इसके लिए सुबह योग और मार्शलआर्ट के सत्र भी होंगे जिससे आत्मबल और आत्म नियंत्रण का संदेश दिया जा सके। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी स्वयं व्यवस्थाओं का जायजा ले रहे हैं ताकि शिविर का अधिकाधिक लाभ कांग्रेस संगठन को मैदानी स्तर तक मजबूत बनाने में मिल सके।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के अलावा के.सी. वेनुगोपाल और अन्य वरिष्ठ नेता भी आनलाइन या प्रत्यक्ष रुप से मार्गदर्शन देंगे। इस प्रशिक्षण में जिला अध्यक्षों को बूथ प्रबंधन, मतदाता संवाद, जनसंपर्क और संगठन की मजबूती के गुर सिखाये जायेंगे वहीं योग व मार्शल आर्ट के सत्र में उन्हें आत्मविश्वास और संयम बनाये रखने का प्रशिक्षण दिया जायेगा। आजकल सोशल मीडिया की भी अहम् भूमिका हो

गयी है इसलिए जिलाध्यक्षों को सोशल मीडिया व डिजीटल प्लेटफार्म का प्रभावी उपयोग किस प्रकार किया जाए इसका भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसमें एआई टूल्स के प्रयोग, गलत सूचनाओं की पहचान और फेक न्यूज से कैसे निपटें इसके लिए भी सत्र होंगे। नेताओं को यह भी बताया जायेगा कि किस तरह जनसंवाद, सोशल मीडिया और जमीनी स्तर के कार्यक्रमों के बीच समन्वय बनाकर पार्टी के संदेश को आम जनता तक पहुचाया जाये। देखने वाली बात यही होगी कि प्रशिक्षण के बाद जब कांग्रेस जिला अध्यक्ष अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय होंगे तब वे उन मैदानी और क्षमतावान कांग्रेस कार्यकर्ताओं की तलाश कर पायेंगे जो किसी बड़े नेता या जिलाध्यक्षों के ड्राइंग रुम या उनकी गणेश परिक्रमा को तवज्जो न देते हुए केवल पार्टी के प्रति समर्पित हों और मैदानी स्तर पर उनकी मजबूत पकड़ हो।

एक ओर जहां कांग्रेस अपना जनाधार बढ़ाने के लिए बेचैन नजर आ रही है तो वहीं दूसरी ओर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आदिवासियों के साथ ही समाज के हर वर्ग का दिल जीतने के बाद अब सरकारी कर्मचारियों का भी दिल जीतने की भरसक कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने घोषणा की है कि मध्यप्रदेश में एक नया आयोग गठित होगा जो यूपीएससी की तर्ज पर परीक्षा लेगा और प्रमोशन भी करेगा। यह आयोग वेतन विसंगति, ग्रेड-पे में सुधार, पदनाम में बदलाव जैसी मांगों का परीक्षण कर सरकार को रिपोर्ट देगा और उसके आधार पर ही सुधार लागू किए जायेंगे। आयोग समय-समय पर दस लाख से ज्यादा नियमित, संविदा, आउटसोर्स, दैनिक वेतनभोगी तथा स्थायी कर्मियों के कल्याण से जुड़े कामों को देखेगा। कर्मचारियों को यह तोहफा डॉ. यादव ने मंत्रालय परिसर में आयोजित कर्मचारियों के दीपावली मिलन समारोह को सम्बोधित करते हुए दिया। मुख्यमंत्री का कहना है कि अलग-अलग पदों को भरने के लिए अलग-अलग परीक्षायें न कराना पड़े इसलिए नया आयोग गठित किया जा रहा है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी तरफ से कर्मचारियों को तोहफा दे दिया।

और यह भी

मध्य प्रदेश विधानसभा के 1 दिसंबर 2025 से 5 दिसंबर 2025 तक होने वाले विधानसभा के छोटे सत्र को लेकर राज्य विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता उमंग सिंघार ने विधानसभा सत्र की अवधि बढ़ाने की मांग की है। इस प्रकार विधानसभा के छोटे सत्र को लेकर नेता प्रतिपक्ष का कहना है कि इतने छोटे सत्र में जन- समस्याओं को नहीं उठाया जा सकता इसलिए सत्र की अवधि बढ़ाई जाए। उन्होंने मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगू भाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर को पत्र लिखकर अवधि बढ़ाने की मांग की। उनका कहना है कि सत्र में केवल चार बैठक ही हो सकेंगी तथा यह अवधि प्रदेश के ज्वलंत सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक मुद्दों पर विचार विमर्श के लिए पर्याप्त नहीं है। उनका कहना है कि प्रदेश इस समय गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है इसलिए सत्र की अवधि बढ़ाई जाए ताकि इन विषयों पर गहराई से चर्चा हो सके।

बजरंगियों ने मुस्लिम युवक को पीटा

हिंदू युवती के साथ किराए पर रह रहा था आरोपी

इंदौर। हिंदू युवती के साथ लिव इन में रह रहे वर्ग विशेष के युवक को बजरंग दल के कार्यकताओं ने जमकर पीटा। इस दौरान कार्यकताओं की पुलिस से झड़प हो गई। हालांकि, अधिकारी थाने पहुंचे, जहां बजरंग दल की शिकायत पर प्रतिबंधात्मक धाराओं में आरोपी युवक के खिलाफ कार्रवाई की गई। बजरंग दल कार्यकर्ताओं को बुधवार रात सूचना मिली थी कि पवनपुरी इलाके में रहने वाला समीर खान हिंदू युवती के साथ यहां रह रहा है। सूचना मिलने के बाद हिंदूवादी कार्यकर्ता पवनपुरी स्थित मकान पर पहुंचे। जब उन्होंने मकान मालिक से पूछताछ की तो उसने उन्हें घर के अंदर जाने से रोक दिया। इसी दौरान मौके पर पुलिस भी पहुंच गई। जब पुलिस ने समीर को घर से बाहर निकाला तो बजरंग दल के सदस्यों ने उसकी पिटाई शुरू कर दी। पुलिसकर्मियों ने किसी तरह समीर को भीड़ से बचाकर थाने पहुंचाया। रात में बजरंग दल कार्यकर्ता समीर के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर थाने में हंगामा करते रहे। उसके साथ रहने वाली युवती ने पुलिस में एफआईआर दर्ज कराने से इंकार कर दिया। दोनों करीब एक साल से साथ रह रहे हैं और उनके परिवारों को भी इस संबंध की जानकारी है। बता दें, शहर में लगातार लव जिहाद के मामले सामने आ रहे हैं। तमाम समझाइश और कार्रवाई के बाद भी युवक-युवती मानने को तैयार नहीं। आश्चर्य की बात है कि हर बार वर्ग विशेष के युवकों को बजरंग दल के कार्यकर्ता ही पकड़कर पुलिस को सौंपते हैं।

ऑनलाइन क्रिकेट का सट्टा लगाने वाले धराए

इंदौर। ऑनलाइन क्रिकेट मैच का सट्टा लगाने वाले दो युवकों को तिलक नगर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से लेपटॉप, 8 मोबाईल, माउस, चार्जर, केबल, की-बोर्ड, मॉनीटर, एक्सटेंशन बोर्ड, आदि सामान व 2200 रुपए जब्त किए हैं। पुलिस ने गोयल रेजेन्सी स्थित मकान से हरि गोयल निवासी आरेंज आडिसी मल्टी नवलखा तथा रोहित अग्रवाल निवासी 60 फीट रोड गौशाला के पास को पकड़ा।

डीएवीवी की पीजी एग्जाम अब नवंबर में

इंदौर। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी की पीजी प्रथम सेमेस्टर परीक्षाएं, जो 20 नवंबर से प्रस्तावित थीं, अब 15 दिन आगे बढ़ा दी गई हैं। यह निर्णय कॉलेज प्राचार्यों के साथ हुई बैठक में लिया गया। यूनिवर्सिटी पहली बार परंपरागत और प्रोफेशनल पीजी कोर्स की 222 परीक्षाएं एक साथ आयोजित करने जा रहा है। जानकारी अनुसार मीटिंग में कॉलेजों ने तर्क दिया कि प्रवेश प्रक्रिया मध्य सितंबर तक चली, जिससे छात्रों को तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला। उनका कहना था कि यदि परीक्षाएं मध्य दिसंबर के बाद आयोजित हों तो छात्रों को बेहतर तैयारी का अवसर मिलेगा। एमबीए के पिछले तीन वर्षों का औसत परिणाम 40 प्रतिशत से कम रहा है, जिसे देखते हुए कोर्स और मूल्यांकन प्रणाली की समीक्षा की आवश्यकता मानी गई। बैठक में परीक्षा केंद्रों की सुविधाओं, प्रश्नपत्र लीक की घटनाओं, ऑब्जर्वर नियुक्ति, नकल और आउट ऑफ सिलेबस प्रश्नों पर भी चर्चा हुई। परीक्षा के दौरान लगभग 80 हजार छात्र शामिल होंगे।

चेन झपटने वाले बदमाश गिरफ्तार

इंदौर। एरोड्रम थाना क्षेत्र में तीन दिन पहले बाइक सवारों ने महिला की चेन झपट ली थी। मामले में पुलिस ने घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज के बाद तीन आरोपियों को पकड़ लिया है। पकड़े जोन के दौरान भागने से बदमाशों के हाथ पैर में चोट आई। 27 अक्टूबर की शाम करीब 6.30 बजे लक्ष्मी नगर निवासी अर्चनाश्री सब्जी मंडी से घर लौट रही थीं। जैसे ही वह रनवे टिकट ऑफिस के सामने पहुंचीं, तभी बाइक पर सवार तीन युवक पीछे से आए और चेन झपट कर एयरपोर्ट की ओर फरार हो गए।

शराबियों ने आरक्षक से अभद्रता की, रात्रि गश्त के दौरान विवाद

इंदौर। शराब के नशे में धुत युवक को एफआरवी 17 के आरक्षकों ने रोका तो युवक विवाद करने लगे। इस दौरान युवक और उसके भाई ने आरक्षक से अभद्रता करते हुए वाहन में घुसा मारा और कहा कि हम यहीं पर शराब पीएंगे। घटना लसूड़िया थाना क्षेत्र में बुधवार रात 11.20 बजे होटल सैरेटन के पास बायपास रोड पर हुई। फरियादी (आरक्षक) अशोक कुमार ने बताया कि उन्होंने रोड किनारे वाहन में बैठकर शराब पी रहे युवक उमेश को देखा। जब उन्होंने युवक को सड़क पर शराबखोरी करने से रोका तो वह बिफर पड़ा। उसने पुलिसकर्मियों को कहा 'तुम हमें रोकने वाले कौन होते हो' कहकर धमकी दी और अपने भाई धर्मेन्द्र चौहान को फोन कर मौके पर बुला लिया। दोनों भाइयों ने मिलकर आरक्षक अशोक कुमार, आरक्षक जन्मेजय मीणा और चालक अभिषेक के साथ अभद्रता की। आरोपी उमेश ने मुक्का मारकर एफआरवी गाड़ी के पिछले दरवाजे का कांच फोड़ दिया। पुलिस के गश्ती दल को तत्काल कंट्रोल रूम को सूचना देनी पड़ी, जिसके बाद अतिरिक्त बल ने मौके पर पहुंचकर दोनों आरोपी भाइयों उमेश और धर्मेंद्र निवासी गारी पिपलिया को हिरासत में लिया। इसी थाना क्षेत्र में बाइक से आए बदमाशों ने ट्रक ड्राइवर को उसके वाहन से उतारकर पीट दिया।

किन्नर विवाद में जेल में बंद राजा हाशमी पर दुष्कर्म का केस दर्ज

प्रोडक्शन वारंट पर लाएगी पुलिस, भाई पर भी आरोप

इंदौर। किन्नर गुट के अवैध वसूली करने के मामले में सेंट्रल जेल में बंद राजा हाशमी पर युवती ने रेप केस का आरोप लगाते हुए हीरानगर थाने में केस दर्ज कराया है। युवती ने इस मामले में राजा के भाई समीर को भी दोषी माना है। अब पुलिस राजा को पूछताछ के लिए प्रोडेक्शन वारंट पर लेकर आएगी। अवैध वसूली के मामले में राजा के दो साथी अक्षय कुमायूं और पंकज जैन फरार है, जिनकी गिरफ्तारी पर 10-10 हजार रुपए का इनाम घोषित है। टीआई सुशील पटेल के मुताबिक, पीड़िता निजी कंपनी में मजदूरी करती है। उसने बताया कि 2024 में उसके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इस दौरान उसकी मुलाकात पालदा की किन्नर से हुई थी। उस किन्नर ने उसे हीरा नगर में आयोजित भंडारे में चलने को कहा और बताया कि वहां उसके गुरु रहते हैं, जो उसकी परेशानियां दूर कर देंगे। 16 अक्टूबर 2024 को पीड़िता किन्नर के साथ भंडारे में पहुंची। वहां किन्नर ने उसकी मुलाकात राजा से कराते हुए कहा कि तीन दिन बाद दोबारा आना, तब वह गुरु से मिलवाएगा। इस दौरान राजा ने उसका

मोबाइल नंबर ले लिया। तीन दिन बाद जब पीड़िता दोबारा वहां पहुंची, तो राजा उसे ऊपर के कमरे में ले गया, जहां कोई नहीं था। वहां उसने पीड़िता को पानी दिया, जिसे पीने के बाद उसे बेहोशी सी आने लगी। इसके बाद राजा ने उसके साथ गलत काम किया। होश में आने के बाद जब पीड़िता ने पुलिस में शिकायत करने की बात कही तो राजा ने पिस्तौल दिखाकर धमकाया और कहा कि उसे वही करना होगा जो वह कहेगा, तभी सब कुछ ठीक रहेगा। डर के कारण वह वहां से घर लौट गई।

भाई ने पिटाई की

कुछ दिन बाद राजा ने उसे कॉल कर मिलने बुलाया और धमकी दी कि अगर वह नहीं आई तो वह उसकी हत्या कर देगा। जब पीड़िता एमआर-10 क्षेत्र में पहुंची तो राजा ने उसकी मुलाकात अपने भाई समीर से करवाई और संबंध बनाने के लिए दबाव डाला। इनकार करने पर दोनों ने उसकी पिटाई की और धमकाया कि जब बुलाया जाए तो उसे आना होगा। करीब 5 से 6 महीने तक पीड़िता डर के कारण वहां जाती रही। इस दौरान दोनों भाइयों ने कई बार उसके साथ संबंध बनाए। बाद में राजा ने कहा कि उसे दोनों भाइयों से शादी करनी होगी और इसके लिए धर्म परिवर्तन करना पड़ेगा। विरोध करने पर राजा ने मारपीट भी की। डर के चलते पीड़िता अपने गांव चली गई। बाद में उसने यह बात महिला वकील को बताई। वकील की मदद से उसने हिंदूवादी कार्यकर्ताओं को जानकारी दी, जिसके बाद बुधवार रात में करणी सेना के पदाधिकारियों की मौजूदगी में दोनों आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

अक्टूबर के अंतिम दिनों में पारा गिरा, ठंड ने हल्की दस्तक दी

हवा की रफ्तार भी तेज रही, जिससे ठंड का असर दिखा

इंदौर। अक्टूबर के आखिरी दिनों में शहर में ठंड का असर दिखाई दिया। अंतिम दो दिन कोहरा छाने के साथ मौसम दिनभर ठंडा रहा। ठंडी हवाओं के कारण मौसम में ठंडक घुल गई। शाम को कई हिस्सों में मावठे के साथ कोहरा छा गया। इससे ठंड का असर तेज हो गया। कहीं-कहीं रिमझिम भी हुई। इस हफ्ते में यह दूसरा मौका है जब

अक्टूबर में दिन का पारा औसत से 9 डिग्री कम दर्ज हुआ। तापमान 23.2 (-9) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इसके पूर्व 26 अक्टूबर को 23.5 (-9) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। खास बात यह कि मौसम विभाग के पास अक्टूबर के दिन के तापमान के निचले स्तर का जो रिकॉर्ड है इसमें इस तरह का तापमान किसी भी शताब्दी में रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक अक्टूबर में तापमान में गिरावट आने लगती है। इंदौर में इस स्तर पर अधिकतम तापमान इतिहास में नहीं रहा। इसके पूर्व दिन का तापमान 4 डिग्री लुढ़ककर 25.1 (-7) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया। यह औसत से 7 डिग्री कम है। इसके साथ ही हवा की रफ्तार 30 किमी प्रति घंटा रही, जिससे ठंड का असर महसूस होने लगा। रात का पारा दो दिनों से 21 डिग्री पर है और हल्की ठंड है। मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान है कि हवा की रफ्तार तेज होने से आज भी दिन में ठंड का खासा असर रहेगा। अरब सागर में डिप्रेशन और बंगाल की खाड़ी में डीप डिप्रेशन के साथ उत्तरी हिस्से में एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव है।

कोहरे के कारण शारजाह और बेंगलुरु की उड़ानें डायवर्ट हुईं

तीन दिन तक बादल और बूंदाबांदी का असर रहेगा

इंदौर। शुक्रवार सुबह हुई तेज बारिश ने इंदौर और आसपास के इलाकों में मौसम का मिजाज पूरी तरह बदल दिया। लगातार रिमझिम फुहारों और ठंडी हवाओं से शहर में शीतलहर जैसी अनुभूति हुई। गुरुवार को भी शहर बादलों की चादर में ढका रहा, जिससे अधिकतम तापमान सामान्य से नौ डिग्री कम 23.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं न्यूनतम तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से पांच डिग्री अधिक था।

सुबह के समय घना कोहरा छा गया, जिससे दृश्यता 500 मीटर तक सीमित रही। इसके कारण शारजाह और बेंगलुरु से आने वाली उड़ानों को क्रमशः अहमदाबाद और भोपाल डायवर्ट करना पड़ा। शारजाह से लौटने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट में 171 यात्री, जबकि इंडिगो की बेंगलुरु फ्लाइट में 164 यात्री सवार थे। दोनों विमान दो घंटे बाद इंदौर लौटे। खराब मौसम के कारण इंदौर से शारजाह जाने वाली उड़ान करीब चार घंटे देरी से रवाना हुई। शाम की अन्य उड़ानों – गोवा, दिल्ली और पुणे – पर भी मौसम का असर देखा गया। मौसम विभाग के अनुसार, पूर्वी मध्य भारत में बने निम्न दबाव क्षेत्र और पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले तीन दिन तक बूंदाबांदी और ठंडी हवाएं जारी रहेंगी।

तीन इमली पर महापौर की नाराजगी, खुदाई रुकवाई, कार्रवाई के निर्देश

सड़क बनने से पहले सोच लेते, बनने के बाद खुदाई क्यों गई

इंदौर। शहर की सड़कों को बार-बार खोदे जाने से नाराज़ महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने शुक्रवार को तीन इमली चौराहे पर अचानक निरीक्षण कर अफसरों को जमकर फटकार लगाई। गुरुवार रात एक राहगीर ने उन्हें वीडियो भेजा था, जिसमें नई बनी सड़क पर फिर से खुदाई होती दिखाई दी। बिना किसी सूचना के महापौर सुबह मौके पर पहुंच गए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने देखा कि सड़क अभी पूरी बनी भी नहीं थी और आधे काम के बीच

ही खुदाई शुरू कर दी गई थी। मौके पर ही उन्होंने अपर आयुक्त अभय राजन, जोनल अधिकारी अतीक खान, पार्षद राजेंद्र राठौड़ और निर्माण एजेंसी के साथ कंसल्टेंट एजेंसी एसएनएस के प्रतिनिधियों को बुलाया। महापौर ने सख्त लहजे में कहा कि सड़क बनने से पहले ही योजना बना लेते, बनने के बाद खुदाई करना जनता की परेशानी और निगम की बदनामी दोनों है। जब अधिकारियों ने सफाई दी कि स्टॉर्म वॉटर लाइन डाली जा रही है, तो महापौर भड़क उठे कि क्या पहले नहीं पता था कि लाइन डालनी है! उन्होंने मौके पर ही निर्देश दिए कि कंसल्टेंट एजेंसी को ब्लैकलिस्ट कर टर्मिनेट किया जाए, साथ ही हुए नुकसान की भरपाई भी उन्हीं से वसूली जाए। महापौर ने कहा कि अब शहर को यूं बार-बार खोदने नहीं दिया जाएगा।

जनवरी से 7 अक्टूबर तक शहर में 8 करोड़ से अधिक की ड्रग पकड़ी

इंदौर। पुलिस के 'ऑपरेशन ईगल क्लॉ' नशे से दूरी है जरूरी अभियान पूरी तरह विफल हो गया। तमाम प्रयासों के बाद भी पुलिस तस्करी रोकने में पूरी तरह असफल साबित हुई है। हर सप्ताह 5 से 10 लाख रुपए का मादक पदार्थ बाहरी राज्यों, जिलों से आकर इंदौर में युवाओं को खपाया जा रहा है। पुलिस लगातार तस्करों पर कार्रवाई भी कर रही है, इसके बावजूद तस्करी पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। शहर में मादक पदार्थ ही नहीं, बल्कि अवैध शराब, भांग, महुआ लहान, कच्ची शराब के मामलों ने भी अपेक्षाकृत बढ़ोतरी की है। जनवरी से अब तक आबकारी विभाग ने कार्रवाई कर एक करोड़ से अधिक की मदिरा जब्त की है। इसमें सबसे बड़ी कार्रवाई बेटमा और एरोड्रम थाना क्षेत्र में हुई थी। यहां से लाखों की शराब जब्त की थी। क्राइम ब्रांच के अनुसार, पुलिस लगातार तस्करों पर नकेल कस रही है। तस्करों से जुड़े लोगों को भी सलाखों के पीछे धकेला जा रहा है, ताकि इसे जड़ मूल से नष्ट किया जाए। नशे से दूरी बनाने और तस्करों की जानकारी देने के लिए पुलिस ने कई अभियान चलाए थे। शिविर लगाकर लोगों को जागरूक भी किया। नशे की जानकारी देने थानों पर बॉक्स भी लगाए। लोगों को नशे के प्रति अवेयरनेस किया, फिर भी हालत जस के तस बने हुए हैं।

दो साल में मादक पदार्थों की तस्करी के केस बढ़े, कई पकड़ाए

पुलिस समझ नहीं पा रही

तस्करी के मामले साल दर साल बढ़ने से पुलिस को समझ नहीं आ रहा कि शिविर लगाने, सतत अभियान चलाने के बावजूद खरीद फरोख्त पर स्थायी रोक क्यों नहीं लग पा रही है। जबकि, मादक पदार्थ मामले में आरोप सिद्ध होने पर कई साल जेल की सलाखों के पीछे गुजरने पड़ते हैं। स्थिति यह बन गई है कि थानों में जितने केस मारपीट और अन्य वारदातों के दर्ज नहीं होते, उससे कहीं ज्यादा केस मादक पदार्थ के सामने आते हैं।

कितना मादक पदार्थ पकड़ा

एक जनवरी से 7 अक्टूबर तक पुलिस ने ब्राउन शुगर के 22 केस 37 आरोपी से 721.44 ग्राम कीमत 14 करोड़ 42 लाख 8 हजार 800 रुपए. एमडी ड्रग्स 43 केस, 74 आरोपी 1 हजार 738.47 ग्राम कीमत 5 करोड़ 21 लाख 54 हजार 100 रुपए. गांजा के 12 केस, 18 आरोपी 90.683 किलोग्राम कीमत 90 लाख 68 हजार 300, चरस के 3 केस, 5 आरोपी से 3.810 किलोग्राम कीमत 15 लाख 20 हजार, कोडीन सिरप एक केस में 5 आरोपी से 5 हजार 640 नग कोडीन सिरप कीमत 9 लाख 67 हजार 800 रुपए. अल्प्राजोलम टैबलेट के दो केस में 5 आरोपियों से 9 लाख 33 हजार 315 अल्प्राजोलम टेबल 18 लाख 90 हजार रुपए. डोडा चूरा एक केस में दो आरोपी से 10.53 ग्राम एक लाख 5 हजार 300 रुपए.का मादक पदार्थ जब्त किया है।

इस तरह कुल 84 केस में 146 आरोपियों से 8 करोड़ 13 लाख 4 हजार 300 रुपए.का मादक पदार्थ जब्त किया है। जबकि अभी वर्ष 2025 खत्म होने में दो माह शेष है। जबकि, इसके पहले वर्ष 2023 में दो केस में 8 आरोपी पकड़े और 60 लाख 80 हजार, वर्ष 2024 में 9 केस में 14 आरोपी से 48 लाख 29 हजार 800 रुपए.का मादक पदार्थ जब्त किया था। पुलिस प्रवक्ता राजेश दंडोतिया ने कहा कि पुलिस लगातार तस्करों को धरपकड़ में लगी है। बाहरी राज्यों से भी आरोपियों को पकड़ा है। लोगों में जागरूकता आने से नशे का उपयोग पहले की अपेक्षा कम करने लगे हैं।

संपादकीय

'मोंथा' की मार..

बंगाल की खाड़ी में आया चक्रवात 'मोंथा' भले ही कमजोर पड़ गया है, लेकिन वह अपने पीछे भारी तबाही छोड़ गया है। हालांकि आजकल तूफान की काफी कुछ जानकारी पहले से मिल जाने के कारण जनहानि को काफी हद तक रोक लिया जाता है। लेकिन फसलों और सम्पत्ति को भारी नुकसान पहुंचा है। मोंथा के कारण सर्वाधिक तबाही आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा में हुई है। आंध्र में तीन लोगों की मौत और करीब 1.5 लाख एकड़ फसल बर्बाद हो गई। प्रारंभिक अनुमान के अनुसार राज्य में 5 हजार 265 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। जबकि तेलंगाना में भारी बारिश से वारंगल और हनमकोंडा में दो हजार लोगों को राहत शिविरों में पहुंचाया गया है। इस बीच मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार में भी बारिश जारी है। बृहस्पतिवार को यूपी के अयोध्या, लखनऊ-कानपुर समेत 15 शहरों में रुक-रुक कर बारिश हुई। काशी में बारिश से जलभराव हो गया। मध्य प्रदेश के कई जिलों में हल्की से मध्यम बारिश हुई। वहीं, भोपाल, इंदौर-उज्जैन में तेज हवा चली। राजस्थान के जयपुर, अलवर, करौली सहित कई जिलों में बृहस्पतिवार सुबह तेज बूंदाबांदी हुई। इससे तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई। उधर, नेपाल में चक्रवात 'मोन्था' के असर से लगातार बारिश और बर्फबारी हो रही है। उधर नेपाली मौसम विभाग ने 26 जिलों में बाढ़ और भूस्खलन का अलर्ट जारी किया है। कोशी, मधेश और बागमती प्रांतों की नदियों में जलस्तर तेजी से बढ़ने की आशंका जताई गई है। विभाग ने लोगों से सतर्क रहने और नदी किनारे के इलाकों से दूर रहने की अपील की है। मौसम विभाग ने यह भी बताया कि अरब सागर के पूर्व-मध्य भाग में एक और निम्न दबाव का क्षेत्र सक्रिय है। कुल नुकसान की दृष्टि से सर्वाधिक हानि तटीय राज्य आंध्र प्रदेश में ही हुई है। राज्य के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि नुकसान की विस्तृत रिपोर्ट शीघ्र ही केन्द्र सरकार को भेजी जाएगी। हालांकि पहले तूफान और बाद में बारिश के कारण राज्य के प्रमुख जलाशय 90 प्रतिशत तक भर चुके हैं। तूफान के कारण बिहार, राजस्थुान, मध्यप्रदेश व उत्तर प्रदेश में भी काफी बारिश हो रही है। 25 जिलों में बारिश का अलर्ट है। इससे सभी उत्तरी राज्यों में ठंड बढ़ गई है और आसमान पर बादल और कई जगह कोहरा छा गया है। इससे ऐसा लगता है कि मानो सर्दियां एक माह पहले ही आ गई हैं। गौरतलब है कि बंगाल की खाड़ी में आए इस तूफान को 'मोंथा' नाम थाईलैंड ने दिया है। जिसका अर्थ होता है 'सुंदर, सुगंधित फूल।' भले ही इसने भारी तबाही मचाई हो। दरअसल तूफानों को उनकी तासीर के विपरीत इतने खूबसूरत नाम वर्ल्ड मीटिरियोलॉजिकल ऑर्गनाइजेश (डब्लूएमओ) तथा इकॉनॉमिक एंड सोशल कमीशन फॉर एशिया एंड पेसिफिक पैनल द्वारा दिए जाते हैं। इस संगठन के 13 सदस्य हैं, जिनमें थाईलैंड भी शामिल है।

समुद्र में तूफान आना एक प्राकृतिक और निरंतर होती रहने वाली घटना है। उसमें भी बंगाल की खाड़ी में अरब सागर की तुलना में ज्यादा तूफान आते हैं। हर तूफान अपने पीछे बर्बादी की कहानी छोड़ जाता है। अच्छी बात यह है कि केन्द्र व राज्य सरकार ने अब पहले की तुलना में तूफानों को लेकर पहले से ज्यादा सतर्कता बरतना शुरू कर दिया है। तूफान की सूचना मिलते ही राहत और बचाव के काम शुरू कर दिए जाते हैं। लोगों को सुरक्षित स्थान पर जाने की चेतावनियां दी जाती हैं। सरकारी मशीनरी स्वयं लोगों को सुरक्षित जगहों पर स्थानांतरित कर देती हैं। लोगों के आश्रय के साथ-साथ खाने आदि की व्यवस्था भी की जाती है। बेशक तूफान, प्रकृति का प्रकोप है, लेकिन उसके नुकसान को कम करना मनुष्य के हाथ में है।

सरकारी स्कूल की मजबूती में विकास की बुनियाद

आज देश में लगभग 97 लाख शिक्षक कार्यरत हैं, जिनमें लगभग 55 लाख सरकारी स्कूलों में तैनात हैं। इनमें से एक बड़ा हिस्सा मल्टी-ग्रेड शिक्षा जैसी कठिन परिस्थिति में काम कर रहा है—जहाँ एक ही कक्षा में कई स्तरों के बच्चे होते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं निरंतर सीखने के अवसरों की कमी शिक्षा-गुणवत्ता पर स्पष्ट असर डाल रही है। कई राज्यों में संविदा या अतिथि शिक्षक वर्षों तक अस्थिर सेवा परिस्थितियों में रहते हैं, जो उनके मनोबल और जिम्मेदारी दोनों को प्रभावित करती हैं। वहीं ऐसे भी विद्यालय हैं जहाँ तीन-चार शिक्षक छात्रों से कहीं अधिक संख्या में तैनात हैं। यह शिक्षक वितरण की गंभीर खामी है, जिसके समाधान के बिना शिक्षा की स्थिति सुधरना मुश्किल है।

नजरिया

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्तंभकार हैं।

भारत में शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के बाद यह व्यापक अपेक्षा थी कि हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचेगी और सरकारी स्कूल समाज में समान अवसरों के वाहक बनेंगे। लेकिन ताज़ा आँकड़े हमें ऐसे चौंकाने वाले तथ्य दिखा रहे हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि देश की शिक्षा व्यवस्था में संसाधनों की उपलब्धता और उनके उपयोग के बीच भारी असंतुलन मौजूद है। केंद्र सरकार की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, देश में लगभग 8,000 ऐसे सरकारी स्कूल हैं, जिनमें एक भी छात्र नामांकित नहीं है। इनमें 20,000 से अधिक शिक्षक अब भी पदस्थ हैं। यानी शिक्षक हैं, भवन भी मौजूद हैं, वेतन भी दिया जा रहा है, लेकिन पढ़ने वाला एक भी बच्चा नहीं। यह स्थिति न केवल सरकारी धन के उपयोग पर सवाल खड़े करती है, बल्कि नीति-निर्माता सोच की जमीन से दूर होने का संकेत भी देती है।

दूसरी ओर, कई राज्य- विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और मध्यप्रदेश - उन क्षेत्रों में हैं जहाँ छात्र-शिक्षक अनुपात राष्ट्रीय मानक 30:1 से कई गुना अधिक है। कहीं शिक्षक खाली बैठे हैं और कहीं एक शिक्षक सौ-सौ बच्चों की सीखने की जिम्मेदारी ढो रहा है। यह स्थिति त्रुटिपूर्ण नियुक्ति, अनुपयुक्त तैनाती और योजनागत नासमझी का सम्मिलित संकेत है।

पिछले दशक में ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर तेजी से पलायन हुआ। रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा – तीनों की तलाश ने अभिभावकों को कस्बों और महानगरों की ओर धकेला। इससे अनेक गाँवों में जनसंख्या इतनी कम हो गई कि स्कूल प्रायः खाली हो गए। दूसरी ओर निजी विद्यालयों की चमक, अंग्रेज़ी माध्यम और बेहतर परिणामों के दावों ने अभिभावकों का विश्वास सरकारी विद्यालयों से दूर कर दिया। ऐसे में सरकारी स्कूलों में शिक्षक और भवन तो रह गए, पर बच्चे खोते चले गए।

आज देश में लगभग 97 लाख शिक्षक कार्यरत हैं, जिनमें लगभग 55 लाख सरकारी स्कूलों में तैनात हैं। इनमें से एक बड़ा हिस्सा मल्टी-ग्रेड शिक्षा जैसी कठिन परिस्थिति में काम कर रहा है—जहाँ एक ही कक्षा में कई स्तरों के बच्चे होते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं निरंतर सीखने के अवसरों की कमी शिक्षा-गुणवत्ता पर स्पष्ट असर डाल रही है। कई राज्यों में संविदा या अतिथि शिक्षक वर्षों तक अस्थिर सेवा परिस्थितियों में रहते हैं, जो उनके मनोबल और जिम्मेदारी दोनों को प्रभावित करती हैं। वहीं ऐसे भी विद्यालय हैं जहाँ तीन-चार शिक्षक छात्रों से कहीं अधिक संख्या में तैनात हैं। यह शिक्षक वितरण की गंभीर खामी है, जिसके समाधान के बिना शिक्षा की स्थिति सुधरना मुश्किल है।

अगर हम मध्यप्रदेश की बात करें, यहाँ लगभग 1.2 लाख प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय हैं, जिनमें लाखों बच्चों का भविष्य आकार लेता है।

लेकिन 'असर' और नेशनल अचीवमेंट जैसे सर्वे बताते हैं कि चौथी-पाँचवीं कक्षा के अनेक बच्चे अपनी कक्षा-स्तर के हिसाब से सरल गणित नहीं कर पा रहे और पढ़-समझने में असमर्थ पाये जा रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल स्कूल जाने की क्रिया तक सीमित रह गई है, सीखना केंद्र में नहीं है। बुनियादी ढाँचे में भी असमानता है—कहीं शौचालय, पेयजल, बिजली जैसी सुविधाएँ नहीं, तो कहीं शिक्षक व संसाधन बहुतायत में।

मध्यप्रदेश में कुछ सकारात्मक पहल देखने को मिली है—जैसे राज्य में सांदीपनी स्कूलों (CM RISE) की शुरुआत, कई स्कूलों में स्मार्ट क्लास, विज्ञान-गणित लैब और डिजिटल शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। परंतु राज्य के एक बड़े हिस्से में स्थिति अब भी चिंताजनक है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों को मिलाने और दूरी बढ़ने के कारण छोटे बच्चों विशेषकर लड़कियों के नियमित विद्यालय आने में कठिनाइयाँ बढ़ी हैं। शिक्षक वितरण में असमानता के कारण कुछ स्कूलों में आवश्यक विषयों के शिक्षक उपलब्ध ही नहीं होते। यह समस्या विशेष शिक्षकों की कमी के रूप में अधिक दिखाई देती है - जैसे विज्ञान, गणित या अंग्रेज़ी के शिक्षक।

शिक्षक केवल संख्या नहीं, शिक्षा-प्रणाली का केंद्र हैं। पर वास्तविकता यह है कि कई राज्यों में उन्हें चुनावी कार्य में बीएलओ बनाकर तैनात कर दिया जाता है। उदाहरणस्वरूप गुजरात में इस वर्ष लगभग 39,000 शिक्षक बीएलओ बनाए गए। शिक्षा संघों का दावा है कि संबंधित कर्मचारियों में 95त्न शिक्षक ही हैं। बिहार के पटना जिले में भी बीएलओ तैनाती के कारण कक्षाएँ प्रभावित होने की खबरें सामने आईं। अमूमन ये स्थितियां सभी राज?यों में देखने को मिलती है।

इस सुधार-प्रक्रिया में एक अहम बिंदु यह रहेगा कि शिक्षक-कार्य का बोझ केवल पाठ-शिक्षण तक सीमित रहे, अन्य सरकारी भूमिकाओं में उनकी तैनाती न्यूनतम हो। चुनाव आयोग या राज्य निर्वाचन आयोग को यह सुनिश्चित करना होगा कि बीएलओ तैनाती के लिए ऐसे सरकारी कर्मचारी नियुक्त हों जिनकी प्राथमिक भूमिका शिक्षा न हो या यदि शिक्षक को नियोजित किया जाए, तो उनकी मुख्य कक्षात्मक जिम्मेदारी सुरक्षित रहनी चाहिए। इससे विद्यालय व्यवस्था में 'शिक्षक तो तैनात हैं, पर पढ़ा नहीं पा रहे' जैसी स्थिति से पार पाया जा सकेगा।

भारत जैसे विशाल और विविधता-पूर्ण देश में एक समान शिक्षा-नीति चलाना व्यावहारिक नहीं है। हर क्षेत्र, हर समुदाय का अपना परिप्रेक्ष्य, अपनी चुनौतियाँ हैं। इसलिए नीतियाँ बनाते व लागू करते समय लचीलापन व स्थानीय जरूरतों की समझ केंद्र में होनी चाहिए।

मध्यप्रदेश सहित भारत भर में शिक्षा नीति का अगला चरण यही होना चाहिए कि विद्यालयों में शिक्षक-मुख्य कर्तव्य (कक्षा-शिक्षण) पर हों, अन्य कार्य उनकी भूमिका को बाधित न करें, और शिक्षा-संसाधनों का पुनर्वितरण इस दृष्टि से हो कि खाली स्कूल, शिक्षक-अवंटन की अनियमितताएँ और गैर-शिक्षण जिम्मेदारियाँ हट कर वास्तविक सीखने-परिणामों पर केन्द्रित हों। इस तरह जब शिक्षक पूरी तरह 'पढ़ाने' में समर्पित हों, तभी हम कह सकते हैं कि शिक्षा-व्यवस्था छात्रों के लिए सचमुच काम कर रही है।

इसलिए बहुत जरूरी है कि हम आज स्वयं से यह सवाल पूछें—क्या हम स्वीकार कर सकते हैं कि सरकारी संसाधन बेकार पड़े रहें और बच्चे शिक्षा से वंचित हों? जवाब स्पष्ट है—नहीं। शिक्षा का अधिकार तभी सार्थक होगा जब हर स्कूल में न केवल शिक्षक व भवन हों, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण—बच्चे हों। और उन बच्चों के सीखने के लिए आवश्यक गुणवत्ता, वातावरण और प्रेरणा भी हो। अब समय आ गया है कि हम इन खाली स्कूलों से सीख लेकर एक ऐसी योजना बनाएँ जहाँ किसी भी बच्चे का स्कूल तक पहुँचना और सीखना संघर्ष का विषय नहीं, बल्कि सहज और स्वाभाविक अधिकार हो। देश का भविष्य आज भी सरकारी विद्यालयों में बनता है। उन्हें मजबूत किए बिना समानता और विकास की बात अधूरी रहेगी।

पर्यावरण को बचाने में हमसफर साबित हो सकता है एआई

पर्यावरण संरक्षण

डॉ. मनीष जैसल

लेखक आईटीएम विवि ग्वालियर में मीडिया प्राध्यापक हैं।

धरती आज जिस मोड़ पर खड़ी है, वहाँ विकास और विनाश की रेखा बेहद पतली हो चुकी है। एक ओर इंसान ने विज्ञान और तकनीक की मदद से इस समाज को अभूतपूर्व ऊँचाई दी है, तो दूसरी ओर यही प्रगति पर्यावरण पर भारी भी पड़ रही है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों का पिघलना और जैव विविधता का संकट हमारी ही जीवन शैली की देन हैं। ऐसे दौर में, जब परंपरागत उपाय पर्याप्त नहीं रह गए हैं, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक नए साथी के रूप में सामने आया है। सवाल यह है कि क्या यह तकनीक केवल मशीनों को और स्मार्ट बनाएगी या हमारी धरती को भी बचाने में मददगार सिद्ध होगी?

धरती का वातावरण लगातार बदल रहा है। कहीं बाढ़ है, कहीं सूखा, कहीं जंगल जल रहे हैं तो कहीं हवा इतनी दूषित हो चुकी है कि सांस लेना कठिन हो गया है। यह संकट अब केवल किताबों या सम्मेलनों की चर्चा नहीं रहा, बल्कि हमारे चारों ओर घटित हो रही वास्तविकता है। इस वर्ष पंजाब और बिहार की बाढ़ ने इसका सबसे कठोर उदाहरण पेश किया। पंजाब में 2025 की बरसात को 'तीस वर्षों की सबसे भयंकर बाढ़' कहा गया, जिसने हज़ारों गाँवों को डुबो दिया, खेत बर्बाद कर दिए और लाखों लोग विस्थापन का शिकार हुए हैं। वहीं बिहार में गंगा और उसकी सहायक नदियों के उफान ने सैकड़ों गाँवों को जलमग्न कर दिया है। इन आपदाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि जलवायु परिवर्तन अब किसी दूर के ख़तरे का नाम नहीं बचा, बल्कि हमारे दरवाज़े पर दस्तक दे चुका है। ऐसे समय में जब पारंपरिक उपाय अपर्याप्त साबित हो रहे हैं, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) सिर्फ़ तकनीकी विकास के प्रतीक के बजाय एक संभावित सहारा बन सकता है। सवाल यह है कि क्या हम इस तकनीक को केवल मशीनों को और स्मार्ट बनाने तक सीमित रखेंगे, या इसे अपने पर्यावरण और जीवन को सुरक्षित बनाने की दिशा में भी उपयोग करेंगे? भारत में पर्यावरणीय संकट केवल बाढ़, सूखा या प्रदूषण तक ही सीमित नहीं है। हमारे शहरों की नालियों और सीवर लाइनों की सफाई करने वाले हज़ारों सफाई कर्मचारी हर साल मौत के मुंह में चले जाते हैं। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग की रिपोर्टों में दर्ज है कि अब भी मैनुअल स्कैवेंजिंग पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है और सीवर में उतरना कई बार उनकी आखिरी ड्यूटी साबित होती है। जहरीली गैसों का दबाव, ऑक्सीजन की कमी और असुरक्षित कार्य-स्थितियाँ इन मौतों की मुख्य वजह हैं। यह हमारी सामाजिक और पर्यावरणीय व्यवस्था की सबसे गहरी त्रासदियों में से एक है। यहीं पर आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक बड़ा सहायक साबित हो सकता है। रोबोटिक सीवर क्लीनिंग मशीनें, जो एआई-सक्षम सेंसर और कैमरों से लैस होती हैं, बिना इंसान को जोखिम में डाले सीवर की गहराई तक जाकर कचरा और गाद साफ़ कर सकती हैं। भारत में बैंडिकूट रोबोट जैसे उपकरण पहले ही कई शहरों में इस्तेमाल किए जा रहे हैं, जिन्हें एआई एल्गोरिद्म से और भी बेहतर और सुरक्षित बनाया जा सकता है। ये मशीनें रियल-टाइम डेटा भेजकर यह बता सकती हैं कि नाली या सीवर में कितनी गैस भरी है, कहाँ जाम है और सफाई के लिए किस स्तर की तकनीकी ज़रूरत होगी।

एआई की सबसे बड़ी ताक़त डेटा को पढ़ना और उससे पैटर्न निकालना है। उपग्रह से ली गई तस्वीरों से लेकर मौसम और स्वास्थ्य से जुड़े आँकड़े, सबको जोड़कर यह हमें बताता है कि भविष्य में क्या संकट खड़े हो सकते हैं और उनसे कैसे निपटा जा सकता है। भारत में इस दिशा में कई अहम प्रयोग शुरू हो चुके हैं। तमिलनाडु सरकार ने हाल ही में जलाशयों और तालाबों की सुरक्षा के लिए एआई-आधारित ऐप की योजना बनाई है, जिससे जल संकट वाले क्षेत्रों की समय रहते पहचान की जा सकेगी और आवश्यक कदम उठाए जा सकेंगे। इसरो और राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग केंद्र भी अब वन आवरण की निगरानी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सहारा ले रहे हैं। पहले जहाँ जंगलों की कटाई का अनुमान सालों बाद मिल पाता था, वहीं अब हर महीने ताज़ा आंकड़े उपलब्ध हो रहे हैं। इसके साथ ही ग्रीनवायरनमेंट एआई कुछ निजी संस्थाएँ रियल टाइम सेंसर और डिजिटल मॉडलिंग के ज़रिए पानी और ऊर्जा की खपत कम करने के अभिनव उपाय खोज रही हैं।

कृषि के क्षेत्र में भी एआई नई संभावनाएँ खोल रहा है। 'लीला' जैसे टूल्स सैटेलाइट इमेजरी के माध्यम से भूमि की गुणवत्ता और कार्बन अवशोषण की क्षमता का आकलन कर रहे हैं। 'वरह' जैसे प्रोजेक्ट छोटे किसानों को कार्बन क्रेडिट्स से जोड़ रहे हैं, जिससे वे न केवल टिकाऊ खेती कर सकें बल्कि अतिरिक्त आय भी कमा सकें। स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'एपी क्लिम' जैसे प्रयास मौसम और बीमारियों के बीच के संबंधों का अध्ययन कर रहे हैं, ताकि डेंगू या मलेरिया जैसी बीमारियों के संभावित फैलाव का अनुमान पहले ही लगाया जा सके। दुनिया के अन्य हिस्सों में भी यह प्रयोग तेजी से बढ़ रहे हैं। अमेरिका में गूगल की मूल कंपनी अल्फ़ाबेट का प्रोजेक्ट 'बेलवेदर' जंगल की आग और बाढ़ जैसी आपदाओं का पूर्वानुमान लगाने की कोशिश कर रहा है। पर्यावरण के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता नामक कार्यक्रम समुद्री जीवन और महासागरों के स्वास्थ्य पर निगरानी रख रहा है। इन वैश्विक अनुभवों से भारत भी बहुत कुछ सीख सकता है।लेकिन यह तस्वीर पूरी तरह उजली नहीं है। एआई जितनी ऊर्जा और पानी खपत करता है, उतना ही बड़ा प्रश्न उठता है कि क्या हम एक संकट को टालने के लिए दूसरा संकट पैदा कर रहे हैं। डेटा की गुणवत्ता और पारदर्शिता भी महत्वपूर्ण है। अगर इन मॉडलों को अधूरे या पक्षपाती आँकड़े मिलते हैं तो नतीजे ग़लत हो सकते हैं।इसके बावजूद यह साफ है कि पर्यावरण और एआई की साझेदारी भविष्य की ज़रूरत है। भारत जैसे विविध भूगोल और जटिल पारिस्थितिकी वाले देश के लिए यह अवसर और भी बड़ा है। यहाँ हिमालयी ग्लेशियरों से लेकर रेगिस्तानी इलाकों और तटीय शहरों तक हर जगह अलग-अलग संकट हैं। अगर सही नियामक ढाँचा बने, नवीकरणीय ऊर्जा पर ध्यान दिया जाए और तकनीक को लोगों की भागीदारी से जोड़ा जाए, तो यह साझेदारी विकास और प्रकृति के बीच संतुलन ला सकती है। सवाल यह नहीं है कि एआई हमें पर्यावरण बचाने में मदद करेगा या नहीं। सवाल यह है कि हम इसे किस दृष्टिकोण से इस्तेमाल करेंगे। यदि इसे केवल मुनाफ़े का साधन बना दिया गया तो यह बोझ बढ़ा देगा। लेकिन यदि इसे पर्यावरणीय न्याय और सतत विकास की दिशा में लगाया गया, तो यह धरती के लिए नई सांस, और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य बन सकता है।

व्यक्तित्व को तराशता है बातचीत का हुनर

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

व्यक्ति के चाल-चलन और व्यवहार के आंतरिक सौंदर्य का परिचय उसकी वाणी ही दिया करती है। दरअसल व्यक्ति जब किसी से वार्तालाप करता है, उसके अन्तस के मनोभावों को समझना कोई जटिल कार्य नहीं है। गहराई से देखा जाए तो व्यक्ति जो कुछ बोल रहा होता है या कि जो कुछ वह छुपाएं हुए बैठा है, मुंह खोलते ही उसका परिचय मिलने लगता है। व्यक्ति के हाव-भाव और व्यवहार के आधार पर उसके अंतर्मन की दशा और दिशा को 'बॉडी लैंग्वेज' से समझ लेना भी काफी हद तक आसान हुआ करता है। बशर्ते कि बिना किसी पूर्वाग्रह से युक्त धारणा के आधार पर यह जानने की कोशिश की जाएं कि सामने वाले के मन में क्या चल रहा है ? वास्तव में व्यक्ति की वाणी उसके मन का दर्पण हुआ करती है।

हालांकि सामाजिक परिवेश में अत्यंत सहजतापूर्वक मिथ्या कथन करने वालों की भी कोई कमी नहीं है। बावजूद इसके व्यक्ति जब कुछ कहता है, अपने कथन की प्रामाणिकता के प्रति उसके अंतर्मन में कितना विश्वास है ? यह समझ पाना भी कोई मुश्किल नहीं है। वास्तव में जब व्यक्ति 'मन में कुछ और मुंह पर कुछ' के चरित्र का परिचय देता है, तब बोलने के लहजे में कितना आत्मविश्वास है ? इसका परिचय मिलने लगता है। वैसे यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब अंतर्मन में कुटिलता के भाव हो, तब ऐसे भाव को मुंह खोलकर छुपा पाना एकदम आसान नहीं होता। लेकिन जो सरल चित्त के होते है, उनकी वाणी की धार सहज रूप से बहा करती है।

व्यवहार में देखा गया है कि वाचाल मनोवृत्ति के व्यक्ति का जीवन चक्र एक खुली किताब के समान हुआ करता है। वह बातों ही बातों में अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का सार्वजनिक प्रदर्शन करने का आदी हुआ करता है। लेकिन जो मितभाषी होते हैं, उनको समझ पाना थोड़ा जटिल हो सकता है। लेकिन फिर भी व्यक्ति के द्वारा कहा गया एक-एक शब्द एवं वाक्य उसके आंतरिक सौंदर्य से युक्त व्यक्तित्व का बोध करा सकता है। बाह्य सौंदर्य का क्या है, वह तो बनावट की बुनावट से निखारा गया हो सकता है। हालांकि आजकल के दौर में सहजता और स्वाभाविकता का स्थान औपचारिकता ने ले लिया है। इसके बावजूद बनावट की बातों को समझ पाना कठिन नहीं है।

सामाजिक जनजीवन में तमाम तरह की औपचारिकताएं देखी जा सकती है। लेकिन किसी व्यक्ति से वार्तालाप करते हुए औपचारिक और अनौपचारिक का भेद समझ में आ सकता है। कोई भी व्यक्ति चाहे कितना भी अधिक चतुर क्यों न हो, अंतर्मन के मनोभावों को मुंह खोलकर छुपा पाना आसान नहीं होता। व्यावहारिक जीवन में भी ऐसा होता है कि जब कहीं कोई वाद विवाद की स्थिति निर्मित हो जाती है। उभय पक्षों से संवाद स्थापित करते हुए मामले की तह तक जाकर विवाद का पटाक्षेप करना आसान हो जाता है। इसके मूल में यही अर्थ होता है कि परस्पर संवाद अंतर्मन की गुत्थी सुलझाने में प्रबल रूप से सहायक सिद्ध होता है।

एक प्रकार से व्यक्ति के मुखारविंद से प्रस्फुटित हर एक शब्द के बहुत गहरे मायने हुआ करते है। जब व्यक्ति अपने सहज स्वरूप मे रहता है,आमतौर पर धाराप्रवाह तरीके से अपनी बात रखा करता है। इसके विपरीत असहज व्यक्ति किसी प्रकार के आक्रोश, भावावेश या अपने पूर्वाग्रहों के चलते अपने ही कथन पर विशेष जोर देता है। ऐसे में अपने कुतर्क को भी तर्क का आधार देकर तर्कसम्मत ठहराने का प्रयास किया करता है। लेकिन ऐसा अधिक समय तक नहीं किया जा सकता। क्योंकि ऐसे व्यक्ति स्वयं ही अपने पूर्व कथन के जाल में उलझ कर रह जाया करते हैं। इसके विपरीत सरल सत्य आचार विचार और व्यवहार व्यक्ति के व्यक्तित्व को अत्यंत विश्वसनीय बना दिया करता है।

वैसे ऐसा भी हो सकता है कि जिस किसी व्यक्ति की प्रामाणिकता संदेह की परिधि में आंकी जाती हो, उसका किसी विषय विशेष पर सत्य कथन भी संदेह की परिधि में आ जाता है। यह स्थिति किसी भी व्यक्ति को उसके संपूर्ण स्वरूप को समझने में बाधक हो सकती है। इसलिए बेहतर यही है कि किसी प्रकार के पूर्वाग्रह के चलते बिना परस्पर संवाद के किसी भी व्यक्ति के बारे में कोई धारणा बना लेना ठीक नहीं। दरअसल आजकल के दौर में व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवेश में इस कदर 'छलावा' देखने को मिला करता है कि हमारा अपना नाता वास्तविकता से टूट जाया करता है। ऐसी स्थिति में बेहतर यही हो कि हम ताजा परिस्थितियों के संदर्भ में ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के आंतरिक सौंदर्य पर अपनी राय कायम करें।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कानून/सिस्टम बराबर है और लिटमस पेपर पर बस फेल है

व्यंग्य

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

कानून की देवी अंधी हैं तो अंधा कानून है। न्याय में सबूत की अहमियत जात देखकर है।
अगड़ी है तो कानून के बूते में हैं और अगले चौराहे पर अपराधी को पैर में गोली लगी होगी। मैं भी समझता हूँ न्याय अंधा नहीं, काना है व एक ही तरफ देख पाता है और केवल अगड़ी की किसी प्रकार सुन पाता है। कानून/सिस्टम बहुजन की भीड़ का दबाव से निकली ऊँची आवाज को धीरे से सुनता है और फिर खानापूर्ति की कार्यवाही करता है। मुआवजा भी जात देखकर निर्धारित होती है।ये बात निन्यानबे प्रतिशत सच में पका हुआ आम खबर में है। कानून/सिस्टम कहता है न्याय निष्पक्ष होता है ? हाँ यह सच है, लेकिन बस अंधा-काना है।अगर न्याय काना नही होता तो न्याय धन-दौलत , धर्म और जात देखकर नही किया जाता।

बेरोजगारी, पेपर लिक या कानून पर जब सवाल उठाते तो निर्दोषों पर चले लाठियां,दोषी सब बच जाते हैं और मीडिया सरकार की महिमा गाते हैं। उन्मादी बन के दल्ले घूम रहे हैं और नफरत फैला कर वह अपना खूब गुण गाते हैं। सबके सब नहीं लेकिन ज्यादातर चोर उचक्के हैं और सबके सब सत्ता के मद में मतवाले हैं। पैर धुलवाकर चरणामृत पिलाते और बूढ़े-बीमार से पेशाब चटाते नहीं आघाते हैं। उनकी मानवता की आत्मा मृत है। फिर भी श्रेष्ठ बेचारे केसरिया - हरा करके बहलाते हैं। ऐसे घोर जातिवादी मानसिकता वाले क्या कहलाते हैं? लेकिन उल्टा चोर कोतवाल को डांटे...! वंचित दलित पिछड़ों को जातिवादी कह कर नहीं अघाते हैं। जातिवाद के नाम पर खूब चिल्लाते हैं। बिंदु खतरे में कहकर बड़े प्यार से हमें पुचकारते हैं।समझ के परे नहीं है, जलील क्यों करते हैं? अभी संविधान का राज है फिर भी जाति दंभ में अटके हैं। बहुजन फिर भी यातनाओं को भूले भटके हैं। शर्म नहीं आती जातिवादी नासूर को नमक छिड़कने में। बेइंतहा दर्द को तुम क्या जानों? पहले झाड़ू और मटका बांध घूमो तो... तब ना पीर पराई जाणे रे..! ऐसी अजब व्यवस्था में हम कैसे खुद को संभाले हैं।

सिस्टम तीन अंग होते हैं... ईमानदारी द्वारा चुने हुए, घूस से रोपे हुए और तीसरे वे, जो सरकार अपने लफंगों सिस्टम में बाइज्जत भेजती है। इनकी भी जात होती है। पिछले दशकों से अगड़ी जात ही श्रेष्ठ है और सब छोर वही छाया हुआ है। समाज में किधर से भी गुजर जाइये, अगड़ी ही अगड़ी, दलित पिछड़े ही भद्दे राजनीतिक फलाने ही फलाने के पोस्टर छाये रहते हैं। दरअसल इन फलाने ही फलाने से मतलब यह होता है कि इनकी ही क्वालिटी और वैराइटी है।आप अपनी औकात और जरूरत के हिसाब से ज्ञान खरीद लीजिये या पढ़ लीजिये लेकिन यह आपको अज्ञानी ही मानेंगे। बाबा साहेब को दुनिया ने नॉलेज मैन माना पर यह नहीं मानेंगे। बस कुतर्क का स्वांग रचेंगे। स्वयं ही जय जयकार करेंगे। आपकी इच्छा हो या ना हो। जात हर साइज, हर गहराई के हैं जिन्हें आप अपनी इच्छा या औकात के अनुसार नहीं चुन सकते। बस केसरिया रंग में रंगकर रहिए और जय जय कहकर भी अपमान झेलिए। इस तरह की अभद्रता और बहुत सी चीजें आपको अनचाहे मिलती हैं, जिसे ना तो आप चाहते हो, ना आप बच सकते हो। जैसे- महंगाई, भ्रष्टाचार,कानून और जातपात!

इसी न्याय के मंदिर में जूता कांड की गूंज में जातपात का छुआछूत प्रकट हुआ। अगड़ी अक्सर कानूनों की वैधानिकता जांचने की बजाय न्याय ही न्याय कर देती है। जातिवाद का विरोध ही विरोध हो रहा है, और दूसरी तरफ वंचित बहुजन को न्याय ही न्याय देने की तैयारी अगड़ी द्वारा चल रही है। बहरहाल कानून या सिस्टम बराबर है और लिटमस पेपर पर बस फेल है।

म.प्र. स्थापना दिवस पर विशेष

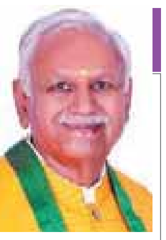

सुरेश पचौरी

लेखक भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री हैं।

पीएम मोदी के मार्गदर्शन में समृद्धि की ओर मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश राज्य की तस्वीर और तकदीर बदलने की दिशा में केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा जो कल्याणकारी कदम उठाये गये हैं, उनकी सार्थकता ज़मीनी स्तर पर साफ दिखाई देती है। प्रदेश की जनता की खुशहाली और समरस विकास के लिए तमाम जनहितैषी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जो इस बात की गवाह हैं कि मध्यप्रदेश आने वाले दिनों में सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहेगा। इस विकासोन्मुखी अभियान के पीछे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वह दूरगामी सोच है, जिसमें समाज के अंतिम छोर में बैठे व्यक्ति को भी शासन की योजनाओं से लाभान्वित करने का संकल्प है। खुद को प्रधान सेवक कहने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अनेक बार अपनी इस भावना को अभिव्यक्त कर चुके हैं कि विकास के उजाले का लाभ चंद लोगों को नहीं, बल्कि हर देशवासी को मिलना चाहिए। मध्यप्रदेश के निवासियों के लिए यह खुशी की बात है कि हमारे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में उनकी पूरी टीम प्रदेशवासियों की सेवा करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रख रही है। अब तो कई राज्य मध्यप्रदेश को माडल मानकर यहां की योजनाओं को अपने यहां लागू कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश राज्य की स्थापना का एक नवम्बर का दिन मध्यप्रदेशवासियों के लिए खास अहमियत रखता है। भारत का हृदय कहा जाने वाला मध्यप्रदेश 1 नवम्बर 1956 को अस्तित्व में आया, जिसका गठन तत्कालीन मध्यभारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल रियासत तथा महाकौशल के कुछ हिस्से को एकीकृत कर किया गया था। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर तथा झीलों की नगरी कहे जाने वाले भोपाल को प्रदेश की राजधानी बनाया गया। 44 वर्षों के बाद प्रदेश का विभाजन हुआ और जनता की मांग पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा नए राज्य म.प्र. का गठन किया गया। अतीत पर नजर डाली जाए तो मध्यप्रदेश ने अपने गठन और विभाजन के दौर में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं लेकिन अब यह राज्य प्रगति के नये सोपान नाप रहा है। एक ओर जहां इस राज्य को देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विशेष वरदहस्त एवं मार्गदर्शन प्राप्त है, वहीं दूसरी ओर कर्मठ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कुशल नेतृत्व है। डबल इंजन की सरकार में मध्यप्रदेश तरक्की की ठोस बुनियाद पर खड़ा दिखाई दे रहा है।

मध्यप्रदेश राज्य की तस्वीर और तकदीर बदलने की दिशा में केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा जो कल्याणकारी कदम उठाये गये हैं, उनकी सार्थकता ज़मीनी स्तर पर साफ दिखाई देती है । प्रदेश की जनता की खुशहाली और समरस विकास के लिए तमाम जनहितैषी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जो इस बात की गवाह हैं कि मध्यप्रदेश आने वाले दिनों में सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहेगा। इस विकासोन्मुखी अभियान के पीछे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वह दूरगामी सोच है, जिसमें समाज के अंतिम छोर में बैठे व्यक्ति को भी शासन की योजनाओं से लाभान्वित करने का संकल्प है। खुद को प्रधान सेवक कहने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अनेक बार अपनी इस भावना को अभिव्यक्त कर चुके हैं कि विकास के उजाले का लाभ चंद लोगों को नहीं, बल्कि हर देशवासी को मिलना चाहिए। मध्यप्रदेश के निवासियों के लिए यह खुशी की बात है कि हमारे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में उनकी पूरी टीम प्रदेशवासियों की सेवा करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रख रही है। अब तो कई राज्य मध्यप्रदेश को माडल मानकर यहां की योजनाओं को अपने यहां लागू कर रहे हैं।

अतीत के आईने में मध्यप्रदेश के इतिहास, भूगोल और संस्कृति पर दृष्टिपात करें तो यह राज्य अनेक विविधताओं को अपने में समेटे हुए है। प्रचुर वन संपदा, अथाह जल वाली नदियां, विपुल खनिज भंडार, खूबसूरत पर्यटन स्थल, पुरातात्विक धरोहर आदि सब कुछ इस प्रदेश में उपलब्ध है । धार्मिक नगरी उज्जैन में भगवान महाकाल का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है, तो ओरछा में राम राजा विराजमान हैं। मध्यप्रदेश अपने ऐतिहासिक महत्व के लिए भी जाना जाता है। नर्मदा, सोन, चंबल, बेतवा, केन, ताप्ती, पेंच, पार्वती, बेनगंगा, रेवा तथा माही आदि नदियों के उद्गम स्थल यहीं पर हैं । ये नदियां प्रदेश की चारों दिशाओं में प्रवाहित होती हैं। नर्मदा को तो मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी माना जाता है । प्रदेश के एक तिहाई भूभाग के निवासियों को नर्मदा आर्थिक रूप से संपन्न बनाती है। नर्मदा नदी पर निर्मित सरदार सरोवर, इंदिरा सागर और ओंकारेश्वर परियोजनाओं से प्रदेश की खुशहाली और समृद्धि के द्वार खुल गये हैं। भारतीय जनता पार्टी की सरकार के शासन काल में नर्मदा को क्षिप्रा से जोड़ा जा चुका है।

केन्द्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश अव्वल - प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशा-निर्देशन में मध्यप्रदेश तेजी से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं के क्रियान्वयन और उनका लाभ पात्र हितग्राहियों को दिलाने में म.प्र. देश में लगातार अग्रणी बना हुआ है। पीएम स्वनिधि योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पीएम आवास योजना, कृषि अवसंरचना निधि, प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना, पीएम स्वामित्व योजना, नशामुक्त भारत अभियान, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन और स्वच्छ भारत मिशन आदि योजनाओं के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश देश में सबसे अग्रणी है ।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में मध्यप्रदेश में 8 लाख 50 हजार से ज्यादा आवास बनाए जा चुके हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में प्रदेश में लगभग 38 लाख आवासों का निर्माण किया जा चुका है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत म.प्र. में 89,612 किलोमीटर लंबी सड़कें बन चुकी हैं। किसान क्रेडिट कार्ड योजना में 65.83 लाख से अधिक किसानों के क्रेडिट कार्ड तैयार हो गए हैं। अटल पेंशन योजना में 498,111 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया है। पीएम स्वनिधि योजना के क्रियान्वयन में म.प्र. देश में पहले नम्बर पर है।

यह एक सुखद पक्ष है कि मध्यप्रदेश सरकार की दूरगामी सोच के चलते कृषि क्षेत्र में उन्नति, औद्योगिक विकास, आईटी एवं पर्यटन में बढ़ते सेवा-क्षेत्रों से राज्य के आर्थिक विकास को मजबूती मिल रही है। वित्तीय वर्ष 2024 -2025 में प्रदेश में प्रति व्यक्ति की आय 1 लाख 52 हजार 615 रुपए हो गयी है। म.प्र. की कृषि विकास दर देश के अन्य राज्यों की तुलना में काफी अधिक है। म.प्र. गेहूं निर्यात के मामले में देश में नम्बर एक पर है। इसी प्रकार 2024-2025 में प्रदेश में 225.75 लाख टन दूध का उत्पादन हुआ,जिससे मध्यप्रदेश देश में दुग्ध उत्पादन में तीसरे नम्बर पर है। यशस्वी प्रधानमंत्री द्वारा मुख्य मंत्री किसान योजना के तहत प्रदेश के 83 लाख से अधिक किसानों के खाते में 17,500 करोड़ रुपए की सहायता राशि का अंतरण किया गया।

मध्यप्रदेश में बिजली की बात की जाए तो विद्युत उत्पादन की स्थापित क्षमता 23,000 मेगावाट है, जिसमें 17125 मेगावाट बिजली पारंपरिक स्रोत से तथा 5,875 मेगावाट नवकरणीय ऊर्जा स्रोत से उत्पादित हो रही है। प्रदेश में कृषि और उद्योगों को जरूरत के हिसाब से पर्याप्त बिजली मिल रही है। मध्यप्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार विस्तार कर रही है । प्रदेश में आयुष्मान भारत योजना में 4.26 करोड़ हितग्रहियों को डिजिटल आयुष्मान कार्ड जारी किये जा चुके हैं। आयुष्मान भारत योजना में सरकार प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपए तक अस्पताल में भर्ती व्यय प्रदान करती है। आयुष्मान भारत योजना के क्रियान्वयन में म.प्र. देश का प्रथम राज्य बन चुका है। म.प्र. में बेटी बोझ नहीं, वरदानमध्यप्रदेश में बेटी अब बोझ न होकर वरदान बन गयी है। प्रदेश की महिलाओं के कल्याणार्थ राज्य सरकार द्वारा तमाम योजनाएं चलाई जा रही हैं। लाड़ली बहना, लाड़ली लक्ष्मी, कन्यादान योजनाओं द्वारा महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त बन रही हैं, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक ठोस कदम है। इन लाभकारी योजनाओं का अनुसरण देश के कई राज्यों ने किया है। इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से महिलाओं के स्वास्थ्य व पोषण स्तर में सुधार आया है। म.प्र में लाड़ली बहना योजना के तहत 1.27 करोड़ महिलाओं को प्रति माह 1500 रुपए दिये जा रहे हैं।

म.प्र. में महिला सशक्तिकरण का नया अध्याय मुख्यमंत्री के नेतृत्व में लिखा जा रहा है। प्रदेश सरकार की अनेक योजनायें महिलाओं के उत्थान में सहायक हो रही हैं। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से प्रदेश में सामूहिक विवाह प्रथा आरंभ हुई है। इस योजना में प्रदेश सरकार नवविवाहितों को आर्थिक सहायता देती है। 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' योजना के तहत बेटियों को हायर सेकण्डरी तक निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान है।

अपार संभावनाएं हैं मध्यप्रदेश मेंमध्यप्रदेश में जिस तेजी के साथ तरक्की की रफ्तार बढ़ रही है और आम आदमी को सरकारी योजनाओं का भरपूर फायदा मिल रहा है, उसके मद्देनजर यह कहा जा सकता है कि म.प्र. अपार संभावनाओं वाला प्रदेश बन रहा है। इसमें समृद्ध राज्य बनने की क्षमता तथा संसाधन दोनों मौजूद हैं। प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर हम सबको मध्यप्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने का संकल्प लेने की जरूरत है। मध्यप्रदेश के निवासियों के लिए यह गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मध्यप्रदेश से आत्मीय लगाव है। उनका जब भी मध्यप्रदेश आगमन होता है तो वे प्रदेश को कोई न कोई बड़ी सौगात देकर ही जाते हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि यशस्वी प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश विकास की तीव्र उड़ान भरेगा। मध्यप्रदेश की विकास यात्रा में हमें यथासामर्थ्य अपनी जिम्मेदारी निभाने की आवश्यकता है। यह आत्मबोध हमारे सुनहरे भविष्य का पर्याय बनेगा। मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस के सुअवसर पर प्रदेशवासियों की खुशहाली व सुख-समृद्धि के लिए मेरी हार्दिक मंगलकामनायें।

देवोत्थान एकादशी

सपना सी.पी. साहू 'स्वप्निल'

लेखक रचनाकार हैं।

चातुर्मास के विराम पश्चात नव-शुभारंभ

हमारे सनातन धर्म की चार स्वयंसिद्ध तिथियों में से एक देवोत्थान एकादशी है। जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की ग्यारस या दीपावली के पश्चात ग्यारहवीं तिथि होती है। इसे भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। इसके प्रचलित नामों में देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी, देवोत्थान, देवुत्थान, हरिप्रबोधिनी, तुलसी विवाह मुहूर्त आदि है। यह मात्र एक तिथि नहीं अपितु वह स्वर्णिम मुहूर्त है जो सृष्टि के प्राण-चक्र को नव विस्तार देता है। यह प्रबोधन पर्व, जागरण का उत्सव है।

आषाढ़ की देवशयनी एकादशी पर जगत पालक श्री विष्णु चातुर्मास में योगनिद्रा में लीन होते है, तब उस समय से लेकर देव उठनी एकादशी तक उनके सृष्टि दायित्व महादेव संभालते है। जब इस पावन देवोत्थान पर श्री हरि जागृत होते है तो महादेव उन्हें पुनः सृष्टि का कार्यभार सौंप देते हैं। यह एकादशी केवल पंचांग का परिवर्तन नहीं, यह प्रकृति का पावन महाघोष है। इस देव जागरण से चारों ओर फैली ठंडक में भी एक अद्भुत ऊष्मा का संचार हो जाता है। नदियां, पर्वत और पवन, जगत पालक के जागरण का उत्सव मनाते प्रतीत होते हैं। चातुर्मास की लंबी अवधि, जहां शुभ और मांगलिक कार्यों पर एक आध्यात्मिक विराम लगा था, आज जाकर पूर्ण होती है। यह विश्राम पूर्णता और नव-सृजन के आनंद का उद्घोष है।

अब, शुभ कार्यों का दिव्य महा-उत्सव आरंभ होता है और मंगल ध्वनि गूंजती है। भगवान विष्णु के जागने का अर्थ, सृष्टि में शुभता का प्रवाह पुनः निर्बाध होना है। देव प्रबोधिनी एकादशी इसलिए शुभ कार्यों का दिव्य महाउत्सव कहलाती है क्योंकि यह अबूझ मुहूर्त है, यहां पंचांग देखने की आवश्यकता नहीं होती, विवाह की शहनाई, नए घर के गृह प्रवेश, मुंडन और उपनयन के संस्कार, सब इसी दिन से प्रारंभ होते है और आठ माह गतिशील रहते हैं।

यह उत्सव इस बात का प्रतीक है कि सृष्टि के कण-कण में अब मंगल का वास है। जड़-चेतन सब आनंदित हैं। किसान अपनी नई फसल की तैयारी करते है, व्यापारी नए बही-खाते खोलते है, गृहस्थ जीवन में रिश्तों को एक नई दिशा देते है और युवा विवाह बंधन में बंधते है। यह धार्मिकता और सामाजिकता का ऐसा अनूठा संगम है, जहां परमात्मा का जागरण मनुष्य के जीवन में उल्लास और क्रियाशीलता भर देता है। धरती से लेकर आकाश तक, हर जगह एक नई आशा, एक नया संकल्प जन्म लेता है। यह पर्व हमें कर्म और विश्राम के बीच संतुलन का महत्व भी समझाता है।

प्रबोधिनी एकादशी का हृदय तुलसी विवाह है। यह पर्व वस्तुतः साक्षात जीवात्मा और परमात्मा के मिलन की एक दिव्य प्रस्तुति है। तुलसी-शालिग्राम विवाह भक्ति और विरह का भावनात्मक रूपक है। इसका भावनात्मक अंश एक उपासिका वृंदा (तुलसी) का वह अनन्य प्रेम, वह तप और दृढ़ता, जिसने उन्हें भगवान के अत्यंत प्रिय स्वरूप शालिग्राम से विवाह का अधिकार दिया। हर भक्त के लिए यह प्रेरणा है।

तुलसी विवाह केवल एक अनुष्ठान नहीं है, यह जीवात्मा की उस विरह वेदना का अंत है। तुलसी विवाह के लिए मंडप सजता है, मंगल गीत गाए जाते हैं, और तुलसी की हरीतिमा से छनकर आती धूप शालिग्राम शिला पर पड़ती है। यह क्षण दर्शाता है कि भक्ति की शक्ति से ईश्वर को साधा जा सकता है। तुलसी की पवित्रता, त्याग और समर्पण, जीवात्मा की उस अनन्य भक्ति का प्रतीक है, जिसके माध्यम से वह परम-सत्ता से एकाकार हो जाती है। इस पवित्र अवसर पर, हमें न केवल तुलसी-शालिग्राम विवाह की रस्म निभानी चाहिए, बल्कि प्रकृति के प्रति अपने दायित्व को समझते हुए तुलसी का कम से कम नया पौधा अवश्य लगाना चाहिए। पर्यावरण के लिए जागृत होने का संकल्प लेना भी इस पर्व का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह उत्सव स्मृति बोध है कि जिस प्रकार हम अपनी चेतना का जागरण करते हैं, उसी प्रकार हमें अपनी धरती माता और प्रकृति के कण-कण की रक्षा का भी दृढ़ निश्चय करना चाहिए। शालीग्राम-तुलसी विवाह केवल एक रीति नहीं है अपितु मनुष्य को मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ाने वाला पहला भावनात्मक कदम है।

यह मोक्ष दायिनी शक्ति का संचार और आत्मबोध का द्वार खुलने का आभास है। इस पर्व का सबसे गहरा महत्व इसकी मोक्ष दायिनी शक्ति में निहित है। देवउठनी ग्यारस को स्कंद पुराण और पद्म पुराण में ब्रह्मदेव और नारद मुनि के संवाद में व्रतों में शिरोमणि कहा गया है। यह एकादशी भक्तों को आत्मबोध कराती है। चार मास के शयन काल के बाद भगवान विष्णु का जागना, वास्तव में हमारे अंदर की भी सुषुप्त चेतना का जागरण का समय है। यह पर्व हमें सिखाता है कि केवल बाहरी कर्मकांड पर्याप्त नहीं हैं। इस दिन उपवास रखना, जागरण करना, विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करना और दीन-दुखियों को दान देना, ये सभी कर्म हमारे अनंत जन्मों के पापों का क्षय करते हैं। व्रत का उद्देश्य केवल भूखे रहना नहीं, बल्कि इंद्रियों पर संयम स्थापित करना है, ताकि मन की भटकाव शांत हो और आत्मा सत्य के समीप पहुंच सके। हमारे स्कंद, ब्रह्मवैवर्त, नारद और पद्म पुराण में वर्णित है कि प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करने वाले को न केवल इस लोक में सुख-समृद्धि, सौभाग्य मिलता है, बल्कि मृत्यु के पश्चात वह सीधे वैकुण्ठ धाम को जाता है। यह व्रत मनुष्य को भौतिक बंधनों से मुक्त करता है और उसे धर्म के मार्ग पर स्थिर करता है।

जिस प्रकार भगवान विष्णु अपनी निद्रा त्याग कर सृष्टि का संतुलन साधते हैं, उसी प्रकार भक्त भी इस दिन अपने आलस्य, अज्ञान और मोह की निद्रा को त्याग कर धर्माचरण के पथ पर अग्रसर होते हैं। इस दिन किया गया एक छोटा सा जप या एक बूंद जल का दान भी अक्षय फलदायी हो जाता है। देव प्रबोधिनी एकादशी इसलिए भी अत्यंत विशिष्ट है क्योंकि यह भौतिक जीवन में मांगलिक कार्यों का श्रीगणेश करती है, वहीं आध्यात्मिक पथ पर यह मोक्ष का द्वार खोल देती है। यह हमें संतुलन सिखाती है कि जीवन में उल्लास भी आवश्यक है और वैराग्य भी। आइए, इस जागरण पर्व पर हम भी अपनी चेतना जागृत करें और जीवन को मंगलमय और मोक्षगामी बनाएं।

अखिल भारतीय कालिदास समारोह

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

कालिदास समारोह अपने इतिहास से कुछ सीखे

प्रतिवर्ष देवप्रबोधिनी एकादशी के दिन उज्जैन में सात दिवसीय अखिल भारतीय कालिदास समारोह की शुरुआत होती है। इस वर्ष भी 1नवम्बर से 7नवम्बर तक यह आयोजन होने जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों से कोशिश की जा रही है कि समारोह में ऐसे नवाचार हों, जिससे इस ओर लोग सहज ही खिंचे चले आयें। इस बार विशेष रूप से सामाजिक सहभागिता के लिये भी पहल हुई है। समारोह शुरू होने के दो दिन पहले से आयोजक मंडल लोगों को जगाने के लिये शहर भर में पारम्परिक कलशयात्रा निकालता है, जिसमें बड़ी संख्या में लोक-कलाकार नृत्य करते हुए चलते हैं। महाकवि कालिदास की आराध्या गढ़कालिका के परिसर में विशाल बटु-समुदाय द्वारा वागर्चन के साथ-साथ मनोहारी स्तुतिगान भी होता है। आयोजन समिति जानती है कि समारोह के लिये लोगों की पूर्व मानसिकता बनाना आजकल कितना कठिन है। पूरे भारत में ऐसा दूसरा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जब किसी महाकवि के सम्मान में आयोजित होने वाले समारोह के लिये ऐसी पूर्व तैयारी की जाती हो।

कहने को तो यह अब तक का 67वाँ कालिदास समारोह है, लेकिन बीच के कई समारोह खंडित हुए हैं, और संकल्प भी। कारण आम चुनाव रहे हों, या और कुछ। इस बार समारोह के लिये स्थानीय प्रशासन तो जुटा ही है, कालिदास संस्कृत अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् और मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग मिलकर इसे सफल बनाने के लिये पूरा जोर लगा रहा है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि समारोह का उद्घाटन कौन करेगा, महत्व इस बात का है कि समारोह के सातों दिन कैसी रस-वर्षा होगी। इस बार केरल की प्रसिद्ध गायिका सूर्यागायत्री, विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक महेश काळे संगीत की प्रस्तुति देंगे। अनन्या गौड़ के कत्थक नृत्य, अमिता खरे की नृत्य नाटिका, श्री पियाल भट्टाचार्य (कोलकाता) के निर्देशन में संस्कृत नाटक 'शिवभाणकम्', संस्कृत समवाय, लोकगायन के अतिरिक्त भी बहुत सारी समृद्ध प्रस्तुतियाँ होंगी। सारस्वत व्याख्यान और शोधपत्र वाचन के साथ स्कूल-कॉलेज के छात्र भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल हो रहे हैं।

अखिल भारतीय कालिदास समारोह 1958 से लगातार मनाया जा रहा है। यूँ तो उससे भी पहले यह समारोह मनाया जाता रहा था। पं.सूर्यनारायण व्यास ने 1928 में बहुत ही छोटे स्वरूप में कालिदास जयंती मनाना शुरू किया था। कभी वे महाकाल प्रांगण में एकत्रित होते, कभी शिप्रातट पर, और कभी अपने आवास भारतीभवन में। पं. व्यास जी के सम्बंध देश-विदेश के विद्वानों और राजनयिकों से थे। ऐसा कभी नहीं हुआ, कि उनके बुलावे को किसी ने अनदेखा किया हो। समारोह का न कोई बजट होता था, न कोई बड़ा ताम-झाम। उधर देश स्वतंत्र होने के लिये छटपटा रहा था, इधर सांस्कृतिक जागरण के लिये कवि कालिदास की आत्मा के द्वार को खटखटाने के लिये साहित्यप्रेमी लोग पं.व्यास जी की अगुआई में इकट्ठे होने लगे। महाकवि कालिदास की स्मृति में मनाये जाने वाले इस उत्सव ने तब उज्जैन को भारत की सांस्कृतिक राजधानी बना दिया था। देश आजाद होने से महज तीन वर्ष पहले विक्रम संवत् के दो हजार वर्ष पूरे होने पर मालवप्रदेश में जो जलसा मनाया गया, उसने कालिदास के उत्सव में अनायास उत्साह की चमक भर दी थी। उस दौर की जानी-मानी हस्तियों का ध्यान विक्रमादित्य के साथ ही कालिदास पर भी गया, और फिर मालवा की हृदयस्थली उज्जयिनी ने सबको अपनी ओर खींच लिया।

लगभग तीस बरस तक चले इस उत्सव की लोकप्रियता का ही परिणाम था, कि वर्ष 1958 में शासन ने रुचि ली। पं.सूर्यनारायण व्यास के नये उपक्रम विक्रम विश्वविद्यालय के साथ जुड़ कर कालिदास समारोह की जो पहचान बनी, उसने भारतीय साहित्य के लोकव्यापीकरण का नया और विलक्षण इतिहास रच डाला। शासन के स्तर पर पहला सात दिवसीय अखिल भारतीय कालिदास समारोह 1958 में आयोजित हुआ। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्रप्रसाद समारोह के पहले दिन सुबह से देर रात तक उज्जैन में रहे। राज्यपाल हरिविनायक पाटस्कर, मुख्यमंत्री कैलासनाथ काटजू, डॉ.शंकरदयाल शर्मा, जीवाजीराव सिंधिया सहित सभी बड़े राजनेता संस्कृत के विद्वानों और कलाकारों के आगे झुक-झुक कर सम्मान देते हुए दिखाई दिये। राष्ट्रपति जी ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, ओंकारनाथ ठाकुर, भगवतशरण उपाध्याय और आम जनता के साथ बैठ कर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का मंचन देखा। रूसी विद्वान वारान्निकोव भी आये, और भारत भर के जाने-माने संस्कृत विद्वान, कवि, रंगकर्मी और प्रसिद्ध नृत्यांगनाओं की उपस्थिति ने कालिदास समारोह को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया।

उसके बाद तो साल दर साल कालिदास समारोह ने ऊँचाई को छूना शुरू कर दिया। उज्जैन और आसपास के लोग साल भर समारोह की प्रतीक्षा करते, और देश-विदेश के विद्वान् यहाँ आने के लिये व्याकुल होने लगे। सात दिनों तक चलने वाले कालिदास समारोह में रोज उच्चस्तर की शोध-चर्चाएँ होतीं, लोकप्रिय व्याख्यान होते, महाविद्यालयीन और विश्वविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की सक्रिय भागीदारी से समारोह का मदमाता यौवन छलक उठता, चित्रकला और मूर्तिकलाओं से सजी हुई दीर्घाएँ सबका ध्यान आकर्षित करने लगीं। संध्या समय कार्तिक की ठिठुरती हुई ठंड में मुक्ताकाशी मंच पर दूर-दूर से आये हुए कलाकारों के समूह हजारों दर्शकों का मन मोह लेते। कमलारत्नम्, रेवाप्रसाद द्विवेदी, सुंदरलाल त्रिपाठी, जानकीवल्लभ शास्त्री सहित और भी कई नाम हैं, जो पूरे सात दिन समारोह में रहते, और उज्जैन शहर सारस्वत सौन्दर्य से खिल उठता।

याद आते हैं प्रो.वि.वेंकटाचलम्, जिन्होंने समारोह का स्तर बनाये रखने के लिये अपना जीवन खपा दिया। उनके बाद आचार्य श्रीनिवास रथ ने अपने कौशल से कालिदास समारोह में नये रंग भरे। कवि-समवाय की शुरुआत हुई, तो देश भर के संस्कृत कवि एक मंच पर दिखाई देने लगे। समारोह के सारस्वत मंच पर विमल मित्र, उमाशंकर जोशी, विद्यानिवास मिश्र, आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, बलदेव प्रसाद उपाध्याय और ऐसे ही कई विद्वानों को सुनने में जो रस मिलता, वह हृदय में घुल कर अमृत संजीवनी बन जाता था।

वर्ष 1979 में कालिदास अकादमी अस्तित्व में आई। प्रख्यात रंगकर्मी आद्यरंगाचार्य अकादमी के प्रथम निदेशक हुए। उनके बाद जब आचार्य कमलेशदत्त त्रिपाठी आये, तब उनके निर्देशन में कालिदास समारोह की रजत जयंती भी मनी और समारोह की नई सांस्कृतिक परम्परा का सूत्रपात भी हुआ। उन दिनों अशोक वाजपेयी प्रदेश के संस्कृति सचिव थे, उनका समारोह में गहरा हस्तक्षेप भी था, नतीजा यह हुआ कि कालिदास समारोह के पुनराविष्कार का नया खाका खींचा गया। यह 1982 से 1984 के बीचकी बात है। कालिदास अकादमी परिसर में नामवरसिंह, बाबा नागार्जुन, शमशेर बहादुरसिंह, विद्यानिवास मिश्र, कुमार गंधर्व, हबीब तनवीर, कवलम् नारायण पणिक्कर और इसी ऊँचाई के कई दिग्गज महारथियों की शिरकत से कालिदास के प्रति लोक-रुचि जगाने की शुरुआत शुरू से हुई। अकादमी में आचार्य श्रीनिवास रथ, डॉ.कृष्णकान्त चतुर्वेदी, डॉ.प्रभातकुमार भट्टाचार्य, प्रो. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी के निर्देशक रहते हुए कालिदास के नाटकों को लेकर नये प्रयोग तो हुए, लेकिन कालिदास और लोगों के बीच जो दूरी बन गई थी, वह कभी कम नहीं हुई।

पिछले दशकों में यह जरूर हुआ कि कालिदास समारोह पर राजनेताओं ने अपना शिकंजा कसा। परिणाम यह हुआ कि संस्कृतिकर्मियों और विद्वानों ने समारोह से मुँह फेर लिया। सात दशकों की परम्परा बीच-बीच में कई बार खंडित होती रही, संकल्प टूटते रहे। लोक और प्रशासन, दोनों की ही उदासीनता के कारण इस महान् सांस्कृतिक पर्व पर धूल की कई परतें जम गईं। राष्ट्राध्यक्षों और केन्द्रीय नेताओं के पास इस समारोह के लिये वक्त नहीं होता। प्रदेश शासन की रुचि बजट स्वीकृत करने से आगे नहीं है। पहले समारोह में विद्वानों का मेला लग जाता था, अब कालिदास साहित्य से पूरी तरह अनभिज्ञ नौकरशाहों की भीड़ जुटती है, और वे येन-केन-प्रकारेण सात दिनों की ड्यूटी पूरी कर अपने मुकाम पर लौट जाते हैं।

कालिदास समारोह को अब पूरी तरह शासन के भरोसे छोड़ दिया गया है। पहले की अपेक्षा अब भरपूर बजट आता है, दिखावा भी खूब होता है, स्थानीय नेताओं का असर कालिदास समारोह के सिर पर चढ़कर बोलता है। कालिदास समारोह के नाम पर विशाल शिल्प मेला और खान-पान की दुकानें सजती हैं। उद्घाटन से लेकर समापन तक अधिकारीगण नेताओं को खुश करने में ही लगे रहते हैं। पूरे सात दिनों तक कालिदास उन नेताओं और अधिकारियों से ही घिरे दिखाई देते हैं, जिन्होंने कभी कालिदास का साहित्य छूकर भी नहीं देखा।

भारी-भरकम सरकारी रकम खर्च करने के बाद भी हम कालिदास के साहित्य को सरल भाषा में लोगों तक नहीं पहुँचा पाये, इसके लिये दोषी हम सभी हैं। कालिदास को केवल भोग और श्रृंगार का कवि बता कर संस्कृत के कतिपय पंडितों ने भी ठीक नहीं किया है। उनका साहित्य मन बहलाने की चीज नहीं। वे भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता है। रघुवंश और कुमारसम्भव के बिना भारतीयता का पूरा चित्र बनता ही नहीं। पं.सूर्यनारायण व्यास ने भारतीय संस्कृति का दीप जलाये रखने के लिये ही उज्जयिनी में कालिदास समारोह की नींव रखी थी। हिन्दू संस्कृति के पोषकों को आगे आ कर इस समारोह की ध्वजा उठाना चाहिए। कालिदास समारोह अपने इतिहास से कुछ सीखे। जो बीत गया है, उसे बिसरा कर आगे की सुधि लेने में ही सबकी भलाई है।

कविता

ध्रुव शुक्ल

महिमा मध्यप्रदेश की

चित्रकूट में बाट जोहते पूछ रहे रघुवीर कहां !
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां।
हरबोलों की बानी, सदियों से घर-घर में गूंज रही।
तमसा की धारा में घुलकर, रामायण की कथा बही।
ऋषि अगस्त्य और जाबालि के तप से पावन भूमि यही।
छत्रपाल-सी वीर धरोहर, इस धरती पर खूब रही।
विन्ध्य-सतपुड़ा के आंगन से बहे नर्मदा नीर यहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां!
आल्हा के गीतों में डूबी, मध्यप्रदेश की तरूणाई।
गोंडराज की रानी दुर्गा, झांसी की लक्ष्मीबाई।
मधुकरशाह बुंदेला जैसे मर-मिटने वाले भाई।
शंकर और रघुनाथ शाह की गाथा कभी न बिसराई।
घने जंगलो में दहाड़ते हैं, कान्हा के शेर जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां!

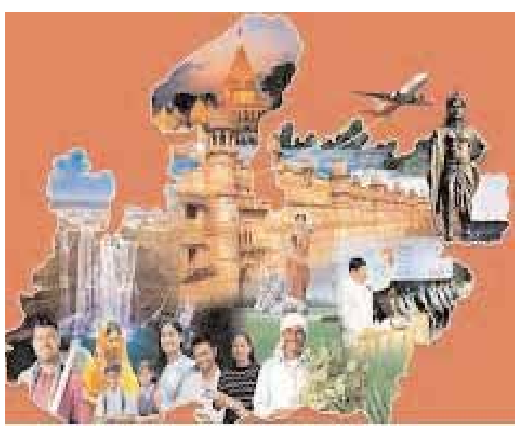

तानसेन सोये हैं लेकिन अब भी सब सुर जाग रहे।
कितने ही गंधर्व जिन्हें अपने कंठों में साध रहे।
मानसिंह ने ध्रुव पद बांधे, लोकगीत आबाद रहे।
करमा की गति से वनवासी अपना जन्म संवार रहे।
स्वर न टूटे कभी किसी का, इस 'खयाल'की बात जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां!
पद्माकर की शब्द छटा पर सब न्यौछावर होते हैं।
कवि ईसुरी फागें रचकर सब के मन को धोते हैं।
प्राणदान हरदौल बुंदेला का सुनकर सब रोते हैं।
बिस्मिल की गजलों को गाकर अपना आपा खोते हैं।
ह्रदय में रस घोल रही है, केशव की कविप्रिया जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर वहां!
विश्व धरोहर खजुराहो में झांकी राग-विराग की।
भीम बैठका में आती है याद पुरानी आग की।
अपने दीप स्वयं बन जाओ सांची हमे पुकारती।
बजे बधाई नगर ओरछा करे राम की आरती।
पंतजलि और परशुराम के मिलते हैं पद चिन्ह जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां!
श्रीकृष्ण ने इस जनपद में सांदीपनि गुरू को पाया।
भर्तृहरि के राज छोड़कर त्यागी सब ममता माया।
नारी की महिमा का गायक बाणभट्ट सबको भाया।
भवभूति ने मर्म खोलकर 'उत्तर रामचमरित' गाया।
इस जगती के भाग्यचक्र को वराहमिहिर ने पढ़ा जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां!
कालिदास के मेघदूत उज्जयिनी का मन हरते हैं।
महाकाल की नगरी में सब आकर पार उतरते हैं।
भोजराज और विक्रम की गाथाएं सभी सुमरते हैं।
देवि अहिल्या के घाटों पर नित-नित मेले भरते हैं।
रानी रूपमती रेवा का दर्शन करने खड़ी जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर वहां!
काठी बांधे है निमाड़, कांधे गणगौर उठाए है।
जहां महेश्वर की साड़ी तो लहरों-सी लहराए है।
जब बसंत में हुए मगन टेसू ने रंग झराए हैं।
होली के मेलों में फिर भीलों ने रंग बरसाए हैं।
एक-दूसरे को पाने की खोज चल रही वहां जहां।
तुलसीदास चंदन घिसते हैं, भई संतन की भीर जहां!

हम मजबूत और एक रहेंगे तो प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में बुलंदियों पर पहुंचेंगे : हेमंत खण्डेलवाल

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत माता की सेवा के भाव के साथ वर्तमान भारत की इबारत लिखी, पीएम मोदी जी अतीत की गलतियों को सुधारने का कार्य कर रहे हैं: सीएम

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने शुक्रवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय में सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती, राष्ट्रीय एकता दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संदेश का श्रवण कर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत माता की सेवा करने के साथ वर्तमान भारत की इबारत लिखने का काम किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जो कहते हैं उसे पूरा करते हैं। चाहे अयोध्या में राम मंदिर निर्माण हो, कश्मीर में धारा 370 या तीन तलाक का कलंक हो, अतीत की ऐसी अनेक गलतियों को सुधारने का कार्य प्रधानमंत्री जी कर रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने आजादी के बाद देश को एक करने का काम किया। आजादी हमें महात्मा गांधी जी के नेतृत्व और भगत सिंह जैसे हजारों बलिदानियों के कारण मिली, लेकिन सरदार पटेल की सूझबूझ नहीं होती तो शायद हमारी आजादी अधूरी रह जाती।

सरदार वल्लभभाई पटेल एकता, दृढ़ता और राष्ट्र निर्माण के प्रतीक : डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि जब आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने एकता परेड कार्यक्रम में राष्ट्र को संबोधित किया, तो ऐसा लगा मानो सरदार वल्लभभाई पटेल से लेकर आज के भारत तक की पूरी यात्रा उनके शब्दों में जीवंत हो उठी हो। सरदार पटेल ने केवल देश को आज़ादी दिलाने में भूमिका नहीं निभाई, बल्कि उन्होंने विभिन्न रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर आधुनिक भारत का नक्शा तैयार किया। उन्होंने अंग्रेजों की सार्वभौम सत्ता के बाद आने वाली चुनौतियों का समाधान पहले से ही खोज लिया था। स्वतंत्रता के संघर्ष के बीच, जब देश विभाजन की भीषण पीड़ा से गुजर रहा था, तब भी उन्होंने अटूट विश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ कहा कि 'मुझे भारत माता की सेवा करनी है।' सरदार पटेल ने जो ठान लिया, उसे पूरा करके दिखाया। वे केवल नीति निर्माता नहीं, बल्कि भारत की एकता के शिल्पकार थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सरदार पटेल ने पंडित नेहरू जी को कई बार अपनी असहमति और सुझाव स्पष्ट रूप से दिए थे। कश्मीर मुद्दे पर वे सीधी और दो-टूक बातचीत के पक्षधर थे, जबकि नेहरू जी ने इस विषय को संयुक्त राष्ट्र में ले जाकर एक अलग राह चुनी थी।

भाजपा उन सभी को स्मरण करती है जिन्होंने राष्ट्र के लिए कार्य किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी का यह दृष्टिकोण है कि महापुरुष किसी दल या विचारधारा की सीमाओं में नहीं बंधते। भारतीय जनता पार्टी ने सदा उन सभी महान व्यक्तित्वों को सम्मान दिया है जिन्होंने देश के लिए उल्लेखनीय कार्य किया, चाहे वे सरदार पटेल हों या पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय प्रणब मुखर्जी।

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में 'प्रधानमंत्री संग्रहालय' का निर्माण कराया गया है, जहाँ सभी प्रधानमंत्रियों के योगदान को ससम्मान प्रदर्शित किया गया है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' की भावना के कारण ही भाजपा आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में उभरी है।

एक भारत–श्रेष्ठ भारत की भावना को साकार कर रहे मोदी जी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि सरदार पटेल का जीवन कर्तव्य, सेवा और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय उदाहरण है। वे केवल भारत के पहले उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के वास्तुकार थे। उन्होंने प्रशासनिक कुशलता और दृढ़ नेतृत्व से भारतीय लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज सरदार पटेल के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विचारों को धरातल पर उतारा जा रहा है। यदि हम सब उनके बताए मार्ग पर चलकर एकता, परिश्रम और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखकर काम करेंगे तो भारत न केवल सशक्त बनेगा, बल्कि 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा।

श्री खण्डेलवाल ने कहा कि सरदार पटेल का जीवन हमें यह सिखाता है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि हम दृढ़ निश्चय और सूझबूझ के साथ आगे बढ़ें, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। हमें युवा पीढ़ी को भी यही संदेश देना है कि हम सब एक रहेंगे, तो भारत सदैव अजेय और प्रगतिशील रहेगा।इस अवसर पर प्रदेश शासन की मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर, श्री धर्मेन्द्र लोधी, पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र शर्मा, प्रदेश महामंत्री श्री राहुल कोठारी, प्रदेश मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राजपूत, विधायक श्री भगवानदास सबनानी, श्री रामेश्वर शर्मा, पूर्व कार्यालय मंत्री डॉ. राघवेन्द्र शर्मा, युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री वैभव पंवार, अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री एम. ऐजाज खान, जिला अध्यक्ष श्री रविन्द्र यति सहित पार्टी पदाधिकारी, जिला पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धार में गूंजा एकता का संदेश

रन फॉर यूनिटी में देश की अखंडता के लिए दौड़े हजारों कदम

धार। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर धार में राष्ट्रीय एकता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन हुआ, जिसमें जनभागीदारी का अद्भुत उत्साह देखने को मिला। नागरिकों ने देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के संकल्प के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ लालबाग परिसर से हुआ, जहाँ से दौड़ इंदौर नाका होते हुए पुनः लालबाग परिसर पहुंची। देशभक्ति गीतों और नारों से पूरा वातावरण गूंज उठा।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, तथा एसपी मयंक अवस्थी,डीएफओ विजयनाथम टीआर, सीईओ अभिषेक चौधरी ने दौड़ में शामिल होकर सभी को एकता का संदेश दिया। यहाँ प्रधान जिला न्यायाधीश संजीव कुमार अग्रवाल भी उपस्थित थे। जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने परिसर में 'एकता वृक्ष' रोपित कर पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक एकता का संदेश भी दिया। केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने प्रतिभागियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई और कहा कि सरदार पटेल ने जिस अखंड भारत का सपना देखा था, उसकी रक्षा और सशक्तिकरण की जिम्मेदारी आज हर नागरिक की है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे समाज में आपसी सद्भाव, भाईचारे और देशप्रेम की भावना को सशक्त करें। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने कहा कि 'रन फॉर यूनिटी केवल एक दौड़ नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है।' उन्होंने प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना करते हुए कहा कि धार जिले के नागरिक हर राष्ट्रीय पर्व पर एकजुट होकर देश के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करते हैं।

एसपी मयंक अवस्थी ने कहा कि एकता और अनुशासन किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत हैं। उन्होंने युवाओं से समाज में शांति और समरसता का संदेश फैलाने का आग्रह किया। रन फॉर यूनिटी में स्कूली छात्र-छात्राओं, सामाजिक संगठनों, खेल संस्थाओं, पुलिस बल, एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों और बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया। पूरा आयोजन राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना से ओत-प्रोत रहा, जिसने यह संदेश दिया कि भारत की विविधता ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर धार में धार विधायक नीना वर्मा के मुख्य आतिथ्य में होगा भव्य समारोह

धार। मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस के अवसर पर धार में भव्य समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आयोजित मुख्य कार्यक्रम 1 नवम्बर को शाम 6 बजे पी.जी. कॉलेज के सभागृह, धार विधायक नीना वर्मा के मुख्य आतिथ्य में होगा।जिला प्रशासन धार द्वारा आयोजित इस समारोह में विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आयोजित की जाएंगी, जिनमें नृत्य, गायन तथा स्थानीय कलाकारों की लोक प्रस्तुतियाँ शामिल रहेंगी। साथ ही जिले की विशिष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। समारोह में जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, गणमान्य नागरिकों, विद्यार्थियों तथा आमजन की सहभागिता रहेगी। आयोजन का उद्देश्य राज्य के गौरवशाली इतिहास, एकता और प्रगति की भावना को जन-जन तक पहुँचाना है।जिला प्रशासन धार ने नागरिकों से अपील की है कि वे इस ऐतिहासिक अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित होकर मध्यप्रदेश की स्थापना दिवस की इस महत्त्वपूर्ण घड़ी के साक्षी बनें।

कांग्रेसजनों ने सरदार पटेल जयंती और इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि पर किया नमन

बैतूल। जिला कांग्रेस कार्यालय में शुक्रवार 31 अक्टूबर का दिन देशभक्ति से सराबोर रहा। यहां भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि पर कांग्रेसजनों ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में जिला कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने दोनों महान नेताओं के योगदान को याद किया और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस मौके पर जिला कांग्रेस

कमेटी के अध्यक्ष निलय विनोद डागा, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी शहर अध्यक्ष मोनू बडोनिया, कार्यवाहक अध्यक्ष प्रशांत राजपूत, पिछड़ा वर्ग विभाग से नारायण धोटे, पिंटू लिखितकर सहित अनेक कांग्रेसजन मौजूद रहे। उपस्थित जनों ने कहा कि सरदार पटेल ने भारत की एकता को सूत्र में बांधा, वहीं इंदिरा गांधी ने देश की सुरक्षा और स्वाभिमान के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

दीपावली मेलों में बढ़ रही तीन गोटियां और जुए की प्रवृत्ति

प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग, ग्रामीणों को बना रहे निशाना

बैतूल। आदिवासी बहुल जिले में दीपावली पर्व केवल एक दिन का नहीं, बल्कि पूरे एक माह तक अलग-अलग गांवों में उत्सव, नृत्य और मेलों के रूप में मनाया जाता है, लेकिन इस पारंपरिक और सांस्कृतिक रौनक के बीच अब एक चिंताजनक पहलू भी सामने आने लगा है। मेलों में बाहरी तत्वों द्वारा तीन गोटिया और जुआ जैसे अवैध खेलों के संचालन में भोले-भाले ग्रामीण इनके जाल में फंसकर अपनी मेहनत की कमाई गंवा रहे हैं। बानाबेहड़ा, फोफलिया, बरजोरपुर, सलीमेट और आसपास के गांवों में लगने वाले दीपावली मेलों में कुछ बाहरी लोगों द्वारा तीन गोटिया वाला डब्बा खेल संचालित किया जा रहा है। 100 पर 200 का लालच देकर ग्रामीणों को दांव लगाने के लिए उकसाया जाता है, पर यह खेल पूरी तरह से ठगी पर आधारित है। बताया गया कि कई स्थानों पर ग्रामीणों ने अपनी मेहनत की कमाई इन खेलों में हार दी। इस खेल में एक डब्बे पर छह अलग-अलग चित्र बनाए जाते हैं और अंदर तीन गोटियां रखी जाती हैं हर गोटी के नीचे अलग निशान या आकृति होती है। संचालक गोटियों को तेजी से हिलाकर किसी एक निशान पर दांव लगाने को कहते हैं।

हर दिन किसी न किसी गांव में लगता है मेला – दीपावली माह में आदिवासी अंचलों में लगभग हर दिन किसी गांव में गुठान मेला आयोजित होता है। जहां एक ओर ये आयोजन पारंपरिक डंडार नृत्य, गायकी नृत्य और सामूहिकता के प्रतीक हैं, वहीं दूसरी ओर बाहरी जुआरियों की सक्रियता से इनकी सांस्कृतिक गरिमा पर असर पड़ रहा है। स्थानीय ग्रामीण महादेव मास्कोले, दिलीप माधव और अशोक मालवीय ने बताया कि मेलों में बाहरी ठग सक्रिय हो गए हैं, जो भोले-भाले लोगों को झांसे में लेकर ठगी करते हैं। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि मेलों में पुलिस गश्त बढ़ाई जाए और ऐसे लोगों पर तत्काल कार्रवाई हो ताकि मेले अपनी मूल भावना और सादगी के साथ मनाए जा सकें।

विधायक बोली संस्कृति की गरिमा बचाना सभी की जिम्मेदारी– क्षेत्रीय विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके ने कहा कि आदिवासी अंचल के मेलें हमारी संस्कृति और परंपरा की पहचान हैं। इन्हें स्वच्छ और सुरक्षित बनाए रखना हम सभी का दायित्व है। बाहरी तत्वों द्वारा मेलों में अवैध गतिविधियां चलाने की शिकायतें गंभीर हैं।

मैंने प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि ऐसे आयोजनों में नियमित निगरानी रखी जाए और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए। यह पर्व हमारी सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है, इसे जुए और ठगी से मुक्त रखना आवश्यक है। भौंरा पुलिस चौकी प्रभारी नीरज खरे ने कहा कि मेलों में जुआ या तीन गोटिया जैसे अवैध खेल संचालित करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस टीम आगामी मेलों पर विशेष निगरानी रखेगी हमारा उद्देश्य है कि दीपावली के मेलों की परंपरा और उत्सव की भावना सुरक्षित रहे।

इनका कहना है –

मेलों में जुआ या तीन गोटिया जैसे अवैध खेल संचालित करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस टीम आगामी मेलों पर विशेष निगरानी रखेगी। हमारा उद्देश्य है कि दीपावली के मेलों की परंपरा और उत्सव की भावना सुरक्षित रहे।

नीरज खरे, चौकी प्रभारी, भौंरा

18 वार्डों में 70 से ज्यादा जगहों पर अवैध शराब बिक्री

बैतूल/आमला। आमला शहर के वार्डों में लगभग 70 से ज्यादा स्थलों पर अवैध शराब के अड्डे फलफूल रहे हैं। तेजी से पनप रहे अवैध शराब के अड्डों और उसको चलाने वाले लोग मंदिरों के आसपास भी अपना धंधे चला रहे हैं, शहर के कुछ धार्मिक प्रांगण भी अब इस कारोबार से अछूते नहीं रहे हैं। कुल मिलाकर सवाल पूरी कानून व्यवस्था पर है कि आखिर ये अवैध कारोबार इतनी तेजी से क्यों फैल रहे हैं। जानकारी के अनुसार शहर और शहर की सीमा से सटे ज्यादातर ढाबे और होटल केवल शराब बेचने के मकसद से ही चलाए जा रहे हैं। यहां कुछ ढाबे तो बाकायदा ग्राहकों की मांग अनुसार देशी-विदेशी और महुआ की कच्ची शराब भी उपलब्ध करा रहे हैं। शराब का हब बनते जा रहे शहर और आसपास के ग्रामीण इलाकों से ही कच्ची शराब की आपूर्ति की जा रही है। सूत्रों की माने तो कहीं दो पहिया, तो कहीं चौपहिया वाहनों से बड़ी मात्रा शहर में शराब पहुंचाई जाती है और पूरे शहर में अवैध शराब का कारोबार किसी उद्योग की तरह निकल पड़ा है। सूत्र ने बताया है कि शहर में अब शराब का बढ़ता कारोबार एक उद्योग बनता जा रहा है। शहर में इस तरह के अवैध धंधे कई मासूमों की जिंदगी से जरूर खेल रहे है, ऐसे में उड़ता आमला को बचाना पुलिस अधीक्षक के लिए भी एक बड़ी चुनौती होगा।

इनका कहना है –

हमारे द्वारा इलाके में लगातार अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही की जाती रही है, मैं इसको दिखवाता हूं।

– वीरेंद्र जैन, पुलिस अधीक्षक, बैतूल

राष्ट्रीय एकता दिवस पर बैतूल में एकता दौड़ का आयोजन

केंद्रीय राज्यमंत्री ने दिलाई एकता की शपथ, दिखाई हरी झंडी

बैतूल। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस पूरे देशभर में मनाया जा रहा है। इसी अवसर पर बैतूल जिला मुख्यालय स्थित पुलिस परेड ग्राउंड में एकता दौड़ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्यमंत्री (जनजातीय कार्य) दुर्गादास उईके उपस्थित रहे। केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उईके ने सभी उपस्थितजन को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई और हरी झंडी दिखाकर एकता दौड़ का शुभारंभ किया। अपने उद्बोधन में श्री उईके ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय एकता के शिल्पकार थे, जिनके अद्वितीय प्रयासों से भारत एक सशक्त और अखंड राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। उन्होंने कहा कि आज पूरा देश उनके योगदान को नमन कर रहा है। एकता दिवस के ये कार्यक्रम प्रत्येक नागरिक में देशभक्ति, एकजुटता और संगठन की भावना को और सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने कहा कि हम सबके संगठित प्रयासों से वर्ष 2047 तक भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाना है, यही प्रेरणा हमें सरदार पटेल के आदर्शों और आज के इस एकता दिवस से प्राप्त होती है। यह एकता दौड़ पुलिस परेड ग्राउंड से प्रारंभ होकर कारगिल चौक, जिला अस्पताल, कोठीबाजार पेट्रोल पंप, शिवाजी चौक होते हुए पुनः पुलिस ग्राउंड पर संपन्न हुई। दौड़ में बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थी, जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी और गणमान्य नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष बैतूल श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, सुधाकर पवार, आनंद प्रजापति, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं नागरिक उपस्थित रहे।

जिले में टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना के शिविर होंगे आयोजित

बैतूल। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा संचालित टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए जिलेभर में शिविर आयोजित किए जाएंगे। इस संबंध में कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने आदेश जारी किया है। जारी आदेश के अनुसार जिले की विभिन्न बैंक शाखाओं में शिविरों का आयोजन 3 नवंबर से 14 नवंबर तक किया जाएगा। सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में भीमपुर 3 नवंबर को पहला शिविर आयोजित किया जाएगा। इसी प्रकार सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया रानीपुर में 4 नवंबर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया भैंसदेही में 6 नवंबर, बैंक ऑफ इंडिया चिचोली में 7 नवंबर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया कोलगांव में 8 नवंबर को शिविर आयोजित होगा। इसके अलावा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया शाहपुर में 10 नवंबर, बैंक ऑफ इंडिया आमला में 11 नवंबर, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया प्रभात पट्टन में 12 नवंबर, म.प्र. ग्रामीण बैंक मुलताई में 13 नवंबर तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया बैतूल में 14 नवंबर को शिविर आयोजित किया जाएगा। इस दौरान बैंक अधिकारी, जनजातीय कार्य विभाग के अधिकारी-कर्मचारी तथा योजनांतर्गत हितग्राही उपस्थित रहकर आवेदन एवं स्वीकृति की प्रक्रिया पूर्ण करेंगे। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्देश दिए हैं कि सभी संबंधित अधिकारी इन शिविरों में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर अधिक से अधिक हितग्राहियों को योजना का लाभ दिलाना सुनिश्चित करें।

मध्य प्रदेश स्थापना दिवस

सय्यद असीम अली

लेखक पत्रकार हैं

हिंदुस्तान का दिल - जहाँ संस्कृति, इतिहास और विकास मिलते हैं, राष्ट्र निर्माण के दौर में उभरा 'भारत का हृदय'

राज्यों के पुनर्गठन से 'दिल' बनने तक की कहानी

जब ट्रेन भोपाल से निकलती है और सतपुड़ा की हरी-भरी पहाड़ियों को चीरते हुए बिलासपुर की दिशा में बढ़ती है, तो बाहर की हर झलक मानो भारत के दिल की धड़कन बन जाती है। खिड़की से झाँकते हुए कभी खेतों में झूमती सरसों की सुनहरी चादर दिखाई देती है, तो कभी घने साल और सागौन के जंगल अपनी हरियाली से मन को मोह लेते हैं। यह वह धरती है जहाँ प्रकृति, संस्कृति और इतिहास का संगम एक मधुर राग की तरह गूँजता है।

यहाँ खजुराहो की नक्काशीदार मूर्तियाँ केवल कला की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानव जीवन के सौंदर्यबोध की कथा कहती हैं। साँची का शांत स्तूप बौद्ध करुणा और ध्यान की अमिट छाप छोड़ता है, जबकि भीमबेटका की प्राचीन शिलाचित्र गुफाएँ मानव सभ्यता की आरंभिक यात्रा की गवाही देती हैं। कान्हा और बांधवगढ़ के जंगलों में बाघ की गर्जना हमें प्रकृति की अदम्य शक्ति का स्मरण कराती है, तो नर्मदा के किनारे बहती ठंडी हवा इस प्रदेश के जीवनदायिनी स्वर को प्रकट करती है। मध्य प्रदेश की पहचान केवल उसके भौगोलिक केंद्र होने से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक विविधता, लोक परंपराओं और मानवीय संवेदनाओं से बनी है। यहाँ की मिट्टी में लोकगीतों की धुन, लोकनृत्यों की ताल और लोककथाओं की गर्मजोशी घुली हुई है। यहाँ के आदिवासी समुदायों ने अपने जीवन में प्रकृति को पूजा का दर्जा दिया है और पर्यावरण के साथ गहरे तालमेल की मिसाल पेश की है। आज़ादी के बाद इस प्रदेश ने कई बार खुद को नए रूप में गढ़ा है। 1956 में राज्य पुनर्गठन के बाद जब मध्य भारत, भोपाल और विंध्य प्रदेश एक होकर 'मध्य प्रदेश' बने, तब इस भूभाग की पहचान केवल एक प्रशासनिक इकाई नहीं रही – यह एक जीवंत सांस्कृतिक प्रदेश बन गया। यहाँ की राजधानी भोपाल ने आधुनिकता और परंपरा दोनों को अपनाया, जहाँ झीलों का सौंदर्य और स्थापत्य की सादगी ने एक नया शहरी चरित्र गढ़ा।

'भारत का हृदय' कहलाने की यह पहचान किसी प्रचार का परिणाम नहीं, बल्कि उस गहराई का प्रतीक है जो इस प्रदेश की आत्मा में बसती है – जीवन की सहजता, संस्कृति की विविधता, और प्रकृति की धड़कन। यह प्रदेश भारत के नक्शे में भले बीचोंबीच स्थित हो, लेकिन इसकी भूमिका पूरे देश के लिए जीवनरस जैसी है – जैसे दिल शरीर के हर हिस्से में रक्त प्रवाहित करता है, वैसे ही मध्य प्रदेश अपनी संस्कृति, ऊर्जा और जीवंतता से पूरे भारत को जोड़ता है।

क्यों कहा जाता है मध्य प्रदेश को 'भारत का हृदय'?

मध्य प्रदेश को 'भारत का हृदय' कहा जाना केवल इसके भौगोलिक केंद्र में स्थित होने का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उपाधि इसकी आत्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गहराई का प्रतीक है। देश के मानचित्र के ठीक मध्य में बसे इस प्रदेश ने उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम भारत को जोड़ने का सेतु बनने का गौरव पाया है। यहाँ की मिट्टी में विविधता के साथ एकता की भावना रची-बसी है। यह भूमि वीरता, त्याग और संघर्ष की कहानियों से भरी है – झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का अंतिम रण, तांत्या भील का जनआंदोलन, और लोकनायक तात्या टोपे की वीरता इसकी पहचान हैं। साथ ही, यहाँ की संस्कृति, इतिहास और प्रकृति का संगम अद्भुत है – खजुराहो की कला, साँची की शांति, कान्हा के जंगल और नर्मदा की अविरल धारा इसे आध्यात्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र बनाते हैं। मालवा की गेर से लेकर गोंड जनजातियों के नृत्य तक, उज्जैन के महाकाल लोक से लेकर भोपाल की झीलों तक – मध्य प्रदेश में भारत की आत्मा की झलक मिलती है। यही कारण है कि यह प्रदेश केवल नक्शे का केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र की धड़कन है – सचमुच, 'भारत का हृदय'।

आज जिस मध्य प्रदेश को हम जानते हैं, वह कई ऐतिहासिक चरणों से गुज़रकर अस्तित्व में आया।

1947 – स्वतंत्रता के बाद : नया भारत, बँटा हुआ मध्य प्रदेश

1947 में जब भारत ने आज़ादी का सूरज देखा, तब वर्तमान मध्य प्रदेश की तस्वीर वैसी नहीं थी जैसी आज है। उस समय यह क्षेत्र चार अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित था – मध्य भारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल राज्य और मध्य प्रांत-बरार। इन सभी क्षेत्रों की अपनी-अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान थी। मध्य भारत मुख्य रूप से ग्वालियर, इंदौर, उज्जैन और अन्य रियासतों का संघ था, जहाँ मराठा और बुंदेली प्रभाव गहराई से मौजूद थे। विंध्य प्रदेश रीवा, सतना और छतरपुर जैसे बुंदेलखंडी इलाकों को समेटे हुए था। भोपाल राज्य, जो नवाबों के शासन में एक स्वतंत्र इकाई रहा था, नवाबी तहज़ीब और इस्लामी स्थापत्य का केंद्र था। वहीं मध्य प्रांत-बरार में नागपुर, जबलपुर और छिंदवाड़ा जैसे क्षेत्र शामिल थे, जिनका प्रशासनिक ढाँचा ब्रिटिश काल में विकसित हुआ था। इन चारों क्षेत्रों की अलग-अलग शासन प्रणालियाँ, भाषाएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ थीं। आज़ादी के बाद सबसे बड़ी चुनौती थी – इन विविध हिस्सों को एक साझा पहचान और एक संगठित राज्य के रूप में जोड़ना। यही यात्रा आगे चलकर 1956 के राज्य पुनर्गठन का आधार बनी, जिसने 'भारत के हृदय' यानी मध्य प्रदेश को जन्म दिया।

1956 – राज्य पुनर्गठन: 'भारत के हृदय' का नया जन्म

1956 का वर्ष मध्य प्रदेश के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ लेकर आया। स्वतंत्रता के बाद भारत में भाषाई और प्रशासनिक आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की आवश्यकता महसूस की गई। इसी उद्देश्य से गठित राज्य पुनर्गठन आयोग ने देशभर की सीमाओं को नई परिभाषा देने की सिफारिशें कीं। इन सिफारिशों के अनुसार मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्य को मिलाकर एक नया राज्य बनाया गया, जिसे नाम दिया गया 'मध्य प्रदेश'। इस पुनर्गठन से पहले ये सभी क्षेत्र अपनी अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयाँ थीं, लेकिन सांस्कृतिक रूप से एक ही धारा से जुड़े हुए थे – हिंदी भाषा, साझा इतिहास और मध्य भारतीय परंपराओं से। हालाँकि, इस प्रक्रिया में नागपुर और बरार के कुछ हिस्सों को अलग कर महाराष्ट्र में सम्मिलित कर दिया गया। नए राज्य की राजधानी पहले जबलपुर निर्धारित की गई, जो ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से केंद्र में स्थित थी। लेकिन शीघ्र ही प्रशासनिक सुविधा, भू-स्थिति और राजनीतिक संतुलन को देखते हुए भोपाल को स्थायी राजधानी का दर्जा दिया गया। 1956 का यह पुनर्गठन केवल सीमाओं का नहीं, बल्कि एक एकीकृत पहचान के जन्म का प्रतीक था – जिसने मध्य प्रदेश को 'भारत का हृदय' बनने की दिशा में अग्रसर किया।

2000 – छत्तीसगढ़ का गठन : नए राज्य की नई पहचान

1 नवंबर 2000 का दिन मध्य भारत के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण अध्याय लेकर आया। इसी दिन मध्य प्रदेश से अलग होकर 'छत्तीसगढ़' एक स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। यह विभाजन केवल प्रशासनिक पुनर्गठन नहीं था, बल्कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं, सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक विकास की मांग का परिणाम था। छत्तीसगढ़ क्षेत्र, जो पहले मध्य प्रदेश का हिस्सा था, अपनी विशिष्ट भाषा, परंपरा और सामाजिक संरचना के कारण अलग पहचान रखता था। यहाँ की गोंड, बैगा, और हल्बा जैसी जनजातियाँ, लोककला, नृत्य और त्योहार इस भूभाग को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाते थे। लेकिन लंबे समय तक यह क्षेत्र विकास की मुख्यधारा से पीछे रहा। लोगों की यही भावना थी कि अलग राज्य बनने पर उनकी स्थानीय आवश्यकताओं और संसाधनों पर अधिक ध्यान दिया जा सकेगा। राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 2000 के तहत यह ऐतिहासिक फैसला लागू हुआ। भोपाल मध्य प्रदेश की राजधानी बनी रही, जबकि रायपुर को छत्तीसगढ़ की राजधानी का गौरव मिला। इस विभाजन ने दोनों राज्यों को अपनी-अपनी राह पर आगे बढ़ने का अवसर दिया – एक ओर मध्य प्रदेश ने प्रशासनिक स्थिरता और विकास को गति दी, वहीं छत्तीसगढ़ ने अपने प्राकृतिक संसाधनों और लोकसंस्कृति के बल पर नई पहचान गढ़नी शुरू की।

2025 – नया आत्मविश्वासी मध्य प्रदेश विकास और विरासत का संगम

2025 का मध्य प्रदेश एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। यह प्रदेश अब केवल भारत का भौगोलिक केंद्र नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और पर्यावरणीय संतुलन का सशक्त प्रतीक बन चुका है। स्मार्ट शहरों, विकसित अवसंरचना और पर्यटन विस्तार के साथ-साथ यह अपनी लोक परंपराओं और प्राकृतिक धरोहर को भी संजोए हुए है। 'अजब है, ग़जब है एमपी' अब सिर्फ नारा नहीं, बल्कि उसकी जीवंत पहचान है – एक ऐसा प्रदेश जो विकास और विरासत दोनों को दिल से जीता है।

नायक और नायिकाएँ – जिन्होंने पहचान गढ़ी

मध्य प्रदेश की मिट्टी में शौर्य और त्याग की असंख्य कहानियाँ समाई हैं।

रानी लक्ष्मीबाई: ग्वालियर की धरती पर 1857 की क्रांति की अमर वीरांगना, जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी।

तात्या टोपे: स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे सेनानी, जिन्होंने रणनीति और साहस से इतिहास में अमर स्थान पाया।

तांत्या भील: जिन्हें 'भारत का रॉबिनहुड' कहा गया – एक आदिवासी योद्धा, जिसने शोषण के खिलाफ हथियार उठाया।

हबीब तनवीर: रायपुर के रंगकर्मी, जिन्होंने लोकनाट्य और थिएटर को विश्व मंच तक पहुँचाया।

हरिवंश राय बच्चन: हिंदी कविता के स्तंभ, जिनकी रचनाओं ने साहित्य को नई ऊँचाई दी। इन सबने मिलकर मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक और वैचारिक चेतना को दिशा दी।

प्रधानमंत्री ने भी माना 'एमपी अजब है, ग़जब है'

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का यह कथन – 'एमपी अजब है, ग़जब है' – केवल एक प्रचार वाक्य नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश की आत्मा का सार है। यह नारा अपने भीतर उस भाव को समेटे हुए है, जो इस प्रदेश की मिट्टी, संस्कृति, लोगों और प्रकृति में गहराई से धड़कता है।मध्य प्रदेश, भारत के केंद्र में स्थित वह भूमि है जहाँ इतिहास और वर्तमान साथ-साथ चलते हैं। एक ओर साँची के शांत स्तूप हैं, जो सम्राट अशोक के बौद्ध युग की गवाही देते हैं, तो दूसरी ओर इंदौर और भोपाल जैसे आधुनिक शहर हैं, जो स्मार्ट सिटी की नई परिभाषा गढ़ रहे हैं। यह प्रदेश परंपरा और प्रगति का अद्भुत संगम है – जहाँ प्राचीनता पीछे नहीं छूटती और आधुनिकता अपनी जड़ें खोती नहीं। प्रधानमंत्री का यह कथन इस सच्चाई को रेखांकित करता है कि मध्य प्रदेश 'अजब' है अपनी विविधता में – यहाँ आदिवासी संस्कृति, मराठी प्रभाव, बुंदेली बोली, और मालवी मिठास सब एक साथ मिलकर एक अनोखा सामाजिक ताना-बाना बुनते हैं। और 'ग़जब' है अपनी क्षमता में – यहाँ का कृषि विकास, औद्योगिक प्रगति, पर्यटन विस्तार और पर्यावरण संरक्षण के प्रयास, सब मिलकर इसे आत्मनिर्भर भारत का मजबूत स्तंभ बनाते हैं। उज्जैन का महाकाल लोक और ओंकारेश्वर का ज्योतिर्लिंग जहाँ आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं, वहीं इंदौर की सफाई और सुशासन मॉडल आधुनिक भारत के लिए प्रेरणा हैं। भोपाल की झीलें और उसका हरित परिवेश पर्यावरण संरक्षण की मिसाल पेश करते हैं। कान्हा, बांधवगढ़ और पेंच जैसे राष्ट्रीय उद्यान न केवल जैव विविधता के केंद्र हैं, बल्कि पर्यटन और स्थानीय आजीविका के स्रोत भी हैं। प्रधानमंत्री का यह वाक्य प्रदेशवासियों के आत्मविश्वास को और भी गहराई से छूता है। यह केवल शब्दों की गूंज नहीं, बल्कि उस सच्चाई का स्वीकार है कि मध्य प्रदेश सचमुच 'भारत का दिल' है – एक ऐसा प्रदेश जो अपनी धड़कन से पूरे देश को ऊर्जा देता है।

मध्य प्रदेश की यही खासियत है – यहाँ जीवन में सादगी है पर आत्मा में गहराई, यहाँ संस्कृति में परंपरा है पर सोच में आधुनिकता, और यही उसे बनाती है 'अजब' भी और 'ग़जब' भी।

विकास की राह: आधुनिक मध्य प्रदेश की नई पहचान

आज का मध्य प्रदेश विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है। राज्य ने बुनियादी ढाँचे, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। सड़क, बिजली और डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार ने न केवल उद्योगों के लिए अनुकूल माहौल तैयार किया है, बल्कि गाँव-गाँव तक विकास की रोशनी पहुँचाई है।स्मार्ट सिटीज़ मिशन के तहत भोपाल, इंदौर, जबलपुर और ग्वालियर जैसे शहर आधुनिक शहरी प्रबंधन और स्वच्छता के मॉडल बनकर उभरे हैं। वहीं, नर्मदा घाटी विकास परियोजनाओं ने सिंचाई और जल संरक्षण में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं, जिससे कृषि क्षेत्र को नई ऊर्जा मिली है। महिलाओं के सशक्तिकरण में लाड़ली बहना योजना और महिला स्वावलंबन मिशन जैसी योजनाएँ आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश कर रही हैं। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, शिक्षा में नवाचार और पर्यटन स्थलों के उन्नयन से प्रदेश का समग्र विकास स्पष्ट रूप से झलकता है। नतीजतन, मध्य प्रदेश आज न सिर्फ 'भारत का दिल' कहलाता है, बल्कि 'विकास का प्रतीक' बनकर देश की प्रगति यात्रा में अपना अहम योगदान दे रहा है।

दिल से जुड़ा प्रदेश

मध्य प्रदेश का सफर केवल राजनीतिक सीमाओं या नक्शे की लकीरों से तय नहीं हुआ। यह सफर उन लोगों के साहस, श्रम और संस्कृति से बना, जिन्होंने इस भूमि को अपनी पहचान दी।आज जब हम 'मध्य प्रदेश स्थापना दिवस ' मनाते हैं, तो यह केवल एक प्रशासनिक तारीख नहीं, बल्कि उस आत्मा का उत्सव है जो इस प्रदेश की धड़कनों में बसी है।यह प्रदेश न केवल भौगोलिक रूप से भारत का केंद्र है, बल्कि इसकी संस्कृति, संगीत, लोककला और प्रकृति भारत की आत्मा को धारण करती है। इसलिए जब प्रधानमंत्री कहते हैं – 'एमपी अजब है, ग़जब है' – तो यह केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि इस दिल की धड़कन की पहचान है, जो पूरे देश की रगों में बहती है।

सेनथॉम एकेडमी के विद्यार्थियों ने 79 मिनट तक लगातार स्केटिंग कर बनाया विश्व रिकॉर्ड

देवास। सेन थॉम एकेडमी, भोपाल रोड के विद्यार्थियों ने एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया है जिस पर विद्यालय को गर्व है। विद्यालय केविद्यार्थियों ने एक रिकॉर्ड. ब्रेकिंग स्केटिंग कार्यक्रम में भागलिया, जिसेयूनाइटेड स्टेट्सऑफ़ अमेरिका बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, जीनियस इंडियन बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, और यू.एन. बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई है।

यह आयोजन 26 अक्टूबर 2025 को एक्सीलेंस स्कूल कैम्पस, देवास में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस दौरान सेनथॉम एकेडमी के 24 प्रतिभागियों ने अपनी लगन और कौशल का परिचय देते हुए 79 मिनट तक लगातार स्केटिंग कर एक अद्भुत रिकॉर्ड बनाया। प्रतिभागियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और समर्पण के लिए पदक और तीन विश्व रिकॉर्ड प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया। उनका यह अद्वितीय प्रयास दृढ़ संकल्प और टीम भावना का प्रेरणादायक उदाहरण है।विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य और स्टाफ ने सभी प्रतिभागियों को इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई दी।

अपर तहसीलदार बहरानी 15 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

देवास। आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ ने शुक्रवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए तहसील कार्यालय देवास में पदस्थ अपर तहसीलदार हर्षल बहरानी को 15 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ गिरफ्तार किया। यह कार्रवाई नागोरा निवासी किसान ताराचंद पटेल की शिकायत पर की गई। किसान ने बताया था कि जमीन संबंधी तीन मामलों नपती, नामांतरण और दुरुस्तीकरण के निराकरण के लिए

अधिकारी द्वारा रिश्वत मांगी जा रही थी।

किसान ताराचंद पटेल ने 27 अक्टूबर को ईओडब्ल्यू एसपी उज्जैन को शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया, कि अपर तहसीलदार ने उनके तीन लंबित प्रकरणों के निपटारे के लिए 20 हजार रुपए की मांग की थी, बाद में 15 हजार रुपए पर सौदा तय हुआ। शिकायत की सत्यापन रिपोर्ट सही पाए जाने के बाद, ईओडब्ल्यू ने डीएसपी अमित वट्टी के नेतृत्व में 12 सदस्यीय टीम गठित की। टीम ने शुक्रवार को तहसील कार्यालय पहुंचकर ट्रैप कार्रवाई की, जहां अपर तहसीलदार हर्षल बहरानी को रिश्वत की राशि लेते हुए रंगेहाथ पकड़ लिया गया।

आठ महीने से लंबित थे प्रकरण–शिकायतकर्ता किसान ताराचंद पटेल ने बताया कि उनका नामांतरण का एक मामला आठ महीने से लंबित था, जबकि पिता के नाम से जुड़ी एक अन्य फाइल और दुरुस्तीकरण से संबंधित प्रकरण भी अटके हुए थे। अधिकारियों द्वारा बार-बार नए नियम बताकर उन्हें परेशान किया जा रहा था। डीएसपी अमित वट्टी ने बताया कि शिकायत के बाद एसपी ईओडब्ल्यू उज्जैन द्वारा जांच कराई गई, जिसमें आरोप सही पाए गए। इसके बाद आज ट्रैप कार्रवाई की गई। आगे की जांच जारी है।

देवास संगम बाल पथ संचलन रविवार को निकलेगा

दो स्थानों से संचलन प्रारंभ होकर सयाजी द्वार स्थित विवेकानंद स्मारक पर संगम होगा

देवास। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा शताब्दी वर्ष पर प्रत्येक नगर एवं मंडल में संचलन निकले जा रहे हैं। नगरीय केंद्रों पर बाल पथ संचलन भी निकल जा रहे हैं। देवास में प्रतिवर्ष निकलने वाला बाल पथ संचलन इस वर्ष 2 नवंबर रविवार शाम को निकाला जाएगा। जिसमें आठ वर्ष से अधिक आयु के हजारों विद्यार्थी स्वंयसेवक सम्मिलित होंगे। शताब्दी वर्ष पर यह संचलन विशेष होने जा रहा है, यह बाल पथ संचलन इस वर्ष 'संगम संचलन' के रूप में निकल जाएगा।दो स्थानों से संचलन प्रारंभ होकर सयाजी द्वार स्थित विवेकानंद स्मारक पर संगम होगा।वएक संचलन उत्कृष्ट विद्यालय मैदान से प्रारंभ होगा जिसमें छत्रपति शिवाजी एवं महाराणा प्रताप उपनगर के बाल स्वयंसेवक सम्मलित होंगे, यह संचलन इंदिरा गांधी प्रतिमा से होता हुआ सयाजी द्वार स्थित विवेकानंद स्मारक पहुंचेगा। दूसरा संचलन लाल के राजा प्रांगण से प्रारंभ होगा जिसमें महाराजा छत्रसाम एवं गुरुगोबिं सिंह उपनगर के स्वयंसेवक सम्मलित होंगे यह संचलन महात्मा गांधी अस्पताल के सामने से कोठारी नर्सिंग होम चौराहा होते सयाजी द्वार स्थित विवेकानंद स्मारक पहुंचेगा, जहां दोनों संचलनो का संगम होगा।

पुण्यतिथि

डॉ. रामचंद्र शर्मा

(साहित्यकार)

अमृता प्रीतम का साहित्य और मानवीय संवेदना

साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं होता; वह समाज के हृदय की धड़कन, समय की पीड़ा और भविष्य की दिशा का सूचक भी होता है। हिंदी और पंजाबी साहित्य की महान लेखिका अमृता प्रीतम (31 अगस्त 1919 से 31 अक्टूबर 2005) ने अपने लेखन से यह साबित किया कि सच्चा साहित्यकार वही है, जो शब्दों के पीछे छिपे आँसुओं, करुणा,वेदना और प्रेम को महसूस कर सके। उनका साहित्य केवल स्त्री जीवन या प्रेम तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानवीय संवेदनाओं के हर कोने का जीवंत दस्तावेज है, जहां विभाजन की त्रासदी है, स्त्री की पीड़ा है, समाज की विसंगतियां हैं, प्रकृति का लोक जीवन से सामंजस्य है और प्रेम का आध्यात्मिक सौंदर्य है।

सन् 1947 का भारत-पाक विभाजन केवल राजनीतिक निर्णय नहीं था, बल्कि करोड़ों लोगों की आत्मा का टुकड़ा-टुकड़ा हो जाना था। अमृता प्रीतम ने इसे नज़दीक से देखा और महसूस किया। उनकी प्रसिद्ध कविता 'अज्ज आखाँ वारिस शाह नूं' (आज मैं वारिस शाह को पुकारती हूँ) विभाजन की पीड़ा का ऐसा चित्रण है जो आज भी दिल दहला देता है। इस कविता में उन्होंने पंजाब की धड़कन, माताओं-बहनों की चीख और टूटे हुए घरों की वेदना को स्वर दिया। यह केवल एक स्त्री कवयित्री का आर्तनाद नहीं था, बल्कि पूरे समाज का करुण गीत था। यह कविता 18वीं सदी के पंजाबी कवि वारिस शाह को संबोधित है , जिन्होंने पंजाबी रोमांस,त्रासदी, हीर रांझा का सबसे लोकप्रिय संस्करण लिखा था। यह वारिस शाह से अपनी कब्र से उठने, पंजाब की त्रासदी को दर्ज करने और पंजाब के इतिहास में एक नया पृष्ठ खोलने की अपील करती है। उनका उपन्यास 'पिंजर' भी विभाजन के दौरान स्त्री की असहायता, अपमान और संघर्ष की कहानी है। 'पिंजर' में पूरो नामक पात्र के माध्यम से अमृता ने दिखाया कि कैसे स्त्री का शरीर और अस्तित्व राजनीति और समाज की हिंसा व शोषण का शिकार बनता है। परंतु यही पीड़ा पाठकों के हृदय में मानवीय संवेदना जगाती है।

अमृता प्रीतम को स्त्री चेतना की प्रतिनिधि माना जाता है। उन्होंने स्त्री को केवल रोने-बिलखने वाली या पुरुष पर आश्रित प्राणी के रूप में नहीं दिखाया, बल्कि एक सोचने-समझने वाली, संघर्षशील और विद्रोही इंसान के रूप में प्रस्तुत किया।अमृता प्रीतम ने उपन्यास में अपने अनुभवों को डाला है। उन्होंने विभाजन काल में महिला जीवन को चित्रित किया है। यह एक हिंदू लड़की, पूरो की कहानी है, जिसका अपहरण एक मुस्लिम व्यक्ति, रशीद द्वारा किया जाता है, जब पूरो राशिद के घर से भागने में सफल हो जाती है, तो उसके माता-पिता अपवित्र लड़की को स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं। 'पिंजर' को भारत के विभाजन की अवधि के दौरान स्थापित भारतीय कथा साहित्य के उत्कृष्ट कार्यों में से एक माना जाता है।

उनकी कहानियों और कविताओं में स्त्री अपने अस्तित्व की तलाश करती है। 'कच्चा धागा' और 'रस्मी रिवाज' जैसी रचनाएँ स्त्री की उसी आत्म खोज और समाज की बेड़ियों को तोड़ने के संघर्ष की कहानियाँ हैं। मानवीय संवेदना यहाँ केवल करुणा के रूप में नहीं आती, बल्कि आत्मसम्मान और स्वाभिमान की ज्वाला के रूप में प्रकट होती है। 'मैं तुम्हें फिर मिलूंगी' 'मुलाकात' जैसी कविताएं अमृता जी द्वारा संवेग और संवेदनाओं का संगम दिखती है साथ ही मरुस्थल की लीला प्रकृति प्रेम व प्रकृति के साथ मानवीय आत्मीयता को भी जीवंत करती है। अमृता प्रीतम के साहित्य का सबसे जीवंत पक्ष उनका प्रेम-दर्शन है। उनके लिए प्रेम केवल आकर्षण या भावुकता नहीं है, बल्कि आत्मा की गहराइयों में उतरने वाला अनुभव है। 'मेरी ख़ता' कविता साक्षात उदाहरण है, उनका जीवन और उनका साहित्य दोनों इस बात के साक्षी हैं कि प्रेम, संवेदना और करुणा मानवता को बचाने का सबसे बड़ा आधार हैं। उनकी कविताओं और आत्मकथाओं में इमरोज़ और साहिर लुधियानवी जैसे पात्र केवल व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि प्रेम के वे प्रतीक हैं जो मानवीय संबंधों को आध्यात्मिक ऊंचाई देते हैं।उनकी आत्मकथा 'रसीदी टिकट' इस प्रेम-दर्शन और संवेदना की सच्चाई को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। अमृता प्रीतम का साहित्य केवल स्त्री या प्रेम तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने समाज के उन तबकों की आवाज़ भी उठाई जिन्हें अक्सर अनसुना कर दिया जाता है। गरीब, किसान, मजदूर और दलित उनकी रचनाओं में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि समाज का विकास केवल ऊँचे वर्ग की प्रगति से नहीं होगा, बल्कि तब होगा जब हर वह

व्यक्ति जो हाशिए पर है, सम्मान और संवेदना के साथ जी सके।

उनकी कहानियों में खेत-खलिहान, मजदूरी, भूख और वंचना के दृश्य मानवीय करुणा जगाते हैं। बाद के वर्षों में अमृता प्रीतम के साहित्य में एक अद्भुत आध्यात्मिक संवेदना दिखाई देती है। उन्होंने जीवन और मृत्यु को, प्रेम और वियोग को, केवल व्यक्तिगत अनुभव के रूप में नहीं बल्कि सार्वभौमिक सत्य के रूप में देखा। उनकी कविताओं में यह आध्यात्मिक स्वर पाठक को केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं रखता, बल्कि पूरी मानवता के लिए संदेश देता है।अमृता के लिए आज़ादी का मतलब पहले था भावनात्मक आज़ादी और फिर सामाजिक आज़ादी। अपने जीवन में अपने लिए उन्होंने ये दोनों आज़ादी हासिल की। मेरे लिए अमृता प्रीतम आज की उन तमाम दोगली स्त्रीवादी नेताओं कार्यकर्ताओं से ज़्यादा बड़ी हो जाती हैं क्योंकि अमृता सिर्फ़ स्त्री आज़ादी के लिए लिखती नहीं, बोलती नहीं, बल्कि अपने जीवन में अमल भी करती हैं।

अमृता प्रीतम की भाषा सरल, मार्मिक और हृदयस्पर्शी है। वे जटिल शब्दावली के बजाय सीधे हृदय को छूने वाली शैली में लिखती हैं। अमृता प्रीतम के उपन्यासों में कई ऐसे पात्र हैं जो सामाजिक जीवन में स्त्री उत्पीड़न का असली चेहरा दिखाते हैं 'नागमणि' की अलका, 'कम्मी' उर्फ 'बंद दरवाजा' की कम्मी,नीना उर्फ 'घोषाला' की नीना जैसे पात्रों के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करती है। अमृता प्रीतम जी का उपन्यास 'उनके हस्ताक्षर' स्त्री चेतना को दर्शाने वाला मिल का पत्थर साबित होता है। अमृता प्रीतम ने बारहमासे की तर्ज पर प्रिय की विरह वेदना को लोक मन से जोड़ा है। चैत, वैशाख, आषाढ़ और फिर सावन जब धरती ने अंजुरी बना कर अंबर की रहमत को पीया, सावन की ठण्डी बयार को अंतर्मन में महसूस किया पर वह नहीं आया- 'बदला दी दुनिया छा गई/ धरती ने बुक्कां जोड़ के अंबरदी रहमत पी लई/ पर तूं नहीं आया।' चांद, सूरज, आकाश, तारे, धरती रसोई के उपकरण- सब अमृता के नाजुक खयालों को जामा पहनाने के लिए होड़ में रहते थे। ऐसे टटके उपमान सुनने वाले की संवेदनाओं को तीखा करते जाते हैं। फिर अमृता प्रीतम की लय से भरपूर वाणी कविता की भीतरी आत्मा की हिलोरें देने वाली संवाहक थी।

उनकी कविताएँ मानो करुणा के आँसुओं से भीगी हों और उनकी कहानियाँ मानो समाज की पीड़ा का आईना हों। अमृता प्रीतम एक ऐसा व्यक्तित्व जिन्हें जितना पढ़ा और समझा जाए कम ही है। जब भी एक मानवीय आज़ाद रूह, एक नारीवाद और एक सशक्त महिला की बात होती है तो अमृता प्रीतम का नाम सबसे पहले आता है। अमृता, जिन्होंने अपनी कलम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था, शोषण और समाज में मौजूद रूढ़िवाद पर गहरा प्रहार किया। एक ऐसी औरत जिसने बनी-बनाई सामाजिक मान्यताओं और पैमानों को तोड़ते हुए अपने ढंग से अपना जीवन जिया और इसके लिए दूसरी औरतों को प्रेरित भी किया। यही कारण है कि उनके साहित्य को पाठक पढ़ते नहीं, बल्कि जीते आज जब दुनिया युद्ध, हिंसा, असमानता और स्त्री-उत्पीड़न जैसी समस्याओं से जूझ रही है, तब अमृता प्रीतम का साहित्य हमें संवेदना की ओर लौटने का आह्वान करता है।

उनकी कविताएँ हमें यह याद दिलाती हैं कि इंसान की सबसे बड़ी ताकत उसकी संवेदनशीलता है। यदि यह संवेदनशीलता खो गई, तो विज्ञान, प्रगति और राजनीति सब व्यर्थ हो जाएँगे। अमृता प्रीतम का साहित्य मानवीय संवेदना का जीवंत दस्तावेज है। विभाजन की त्रासदी हो या स्त्री का संघर्ष, प्रेम की गहराई हो या समाज के वंचित वर्ग की पुकार उन्होंने हर विषय को करुणा, संवेदना और मानवता की दृष्टि से प्रस्तुत किया।आज जब साहित्य और समाज दोनों को मानवीय दृष्टि की सबसे अधिक आवश्यकता है, तब अमृता प्रीतम की रचनाएँ हमें यह सिखाती हैं कि साहित्य का सबसे बड़ा उद्देश्य मानवता की रक्षा करना और संवेदनाओं को जागृत रखना है।

भोपाल में बूंदाबांदी, इंदौर समेत 9 जिलों में हल्की बारिश

मुरैना के गांव में बाढ़ जैसे हालात

11 जिलों में बूंदाबांदी होगी; प्रदेश में बारिश के साथ तेज हुई ठंड

भोपाल (नप्र)। एक साथ 3 सिस्टम की एक्टिविटी होने से मध्यप्रदेश में आंधी, बारिश और गरज-चमक का दौर जारी है। इस वजह से दिन के तापमान में रिकॉर्ड गिरावट देखने को मिल रही है। कई शहर ऐसे हैं, जहां दिन का तापमान 23 डिग्री से नीचे है। भोपाल इंदौर समेत 9 जिलों में हल्की बारिश हुई। मुरैना के गांव जनवेद का पुरा में बारिश से नदी का जलस्तर बढ़ गया है। नदी का पानी सड़क के ऊपर से बह रहा है। खेत तालाब बन गए हैं। गांव में बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं।

बारिश से कई जिलों में पारा लुढ़का- गुरुवार को दतिया, गुना, नौगांव और टीकमगढ़ सबसे ठंडे रहे। देर रात उज्जैन में बारिश हुई। शुक्रवार को भी कई जिलों में ऐसा ही मौसम बना रहेगा। मौसम विभाग के अनुसार दतिया में सबसे ज्यादा डेढ़ इंच पानी गिर गया। जबलपुर में सवा इंच, मलाजखंड में पौन इंच, गुना में आधा इंच से ज्यादा और मंडला में आधा इंच पानी गिरा।

भोपाल में दिनभर रिमझिम पानी बरसा। ग्वालियर, पचमढ़ी, शिवपुरी, रायसेन, नर्मदापुरम, टीकमगढ़, निवाड़ी, छिंदवाड़ा, दमोह, छतरपुर के खजुराहो और नौगांव, रीवा, सागर, सतना, सिवनी, सीधी, टीकमगढ़, उमरिया समेत कई जिलों में बारिश हुई। बारिश की वजह से कई जिलों में खेतों में खड़ी फसलें बर्बाद हो गईं। ऐसे में मुआवजे की मांग उठने लगी है। खेतों में पानी भरने की वजह से ये हालात बने हैं।

आज भी बदला रहेगा मौसम- मौसम विभाग ने झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में हल्की बारिश होने की चेतावनी जारी की है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, उत्तरी हिस्से में साइक्लोनिक सर्कुलेशन, एक डिप्रेशन और एक अन्य सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से प्रदेश में मौसम बदला हुआ है।

35 जिलों में बारिश, जबलपुर-खरगोन में सबसे ज्यादा 1.8 इंच पानी गिरा

सिस्टम के एक्टिव होने से मध्यप्रदेश में बारिश का दौर बना हुआ है। पिछले 24 घंटे के दौरान 35 से अधिक जिलों में बारिश हुई। जबलपुर-खरगोन में सबसे ज्यादा 1.8 इंच पानी गिर गया। दतिया में डेढ़ इंच, धार में 1 इंच, गुना-रीवा में पौन इंच, सागर, खंडवा, उमरिया, मंडला-पचमढ़ी में आधा इंच बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, बैतूल, नर्मदापुरम, रतलाम, श्योपुर, शिवपुरी, छिंदवाड़ा, दमोह, छतरपुर के खजुराहो और नौगांव, नरसिंहपुर, सागर, सिवनी, सीधी, टीकमगढ़, बालाघाट के मलाजखंड, सीहोर, राजगढ़, आगर-मालवा, शाजापुर, देवास, विदिशा में भी हल्की बारिश का दौर चला।

शहरों के आसपास सब्जी क्लस्टर विकसित होंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में बढ़ते शहरीकरण में स्वास्थ्य जागरुकता और पोषणयुक्त आहार की मांग को ध्यान में रखते हुए बड़े शहरों के आसपास देशी-सब्जियों की उन्नत किस्म के क्लस्टर विकसित किए जाएंगे। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत देशी-सब्जियों को स्थानीय जलवायु परिस्थितियों के अनुसार उत्पादन प्रोत्साहन का काम उद्यानिकी विभाग द्वारा किया जा रहा है। आयुक्त उद्यानिकी श्री अरविन्द दुबे ने बताया कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत शहरी क्षेत्र के आसपास देशी सब्जियों की नई एवं उन्नत किस्म के उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। विभाग द्वारा सभी 10 संभागों के जिलों के नगरीय क्षेत्र के आसपास परंपरागत सब्जियों की नवीन उन्नत किस्म को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसमें तोरी/गिलकी, परवल, चिचिंडा, लौकी, करेला, टिंडा, खीरा, बैंगन, मुनगा, कुंदरु, चौलाई, पालक, पोई साग, गरूणी/भाजी, कचरी, अरबी, शकरकंद, कसावड़ तथा कटुक/स्टार गूसबेरी सब्जी फसलों के उत्पादन पर अनुदान सहायता दी जा रही है। इस योजना का लाभ लेने के लिए सब्जी उत्पादकों को एमपी एफएसटीएस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करना होता है। परियोजना के तहत हितग्राहियों को प्रति हेक्टेयर निर्धारित इकाई लागत 60 हजार प्रति हेक्टेयर पर 40 प्रतिशत 24 हजार रुपए तक अनुदान दिया जाता है। आयुक्त श्री दुबे ने बताया कि योजना से जुड़ने के लिए कृषक के पास स्वयं की भूमि और सिंचाई सुविधा होना चाहिए।

कोलार में पहली व्हाइट टॉपिंग सड़क बनेगी

मंदाकिनी चौराहा से दानिशकुंज तक फोरलेन होगी सड़क, 11 करोड़ लागत आएगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में पहली व्हाइट टॉपिंग सड़क बनेगी। मंदाकिनी चौराहा से दानिशकुंज तक करीब पौने 2 किलोमीटर सड़क 11 करोड़ रुपए से बनेगी। शुक्रवार शाम को पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह, विधायक रामेश्वर शर्मा भूमिपूजन करेंगे। कोलार सिक्सलेन स्थित मंदाकिनी चौराहा से फोरलेन बनेगा, जो जेके रोड होते हुए अग्रसेन चौराहा (दानिशकुंज चौराहा) तक पहुंचेगा। करीब पौने दो किलोमीटर लंबी यह सड़क काफी जर्जर हालत में है। इस वजह से हजारों लोगों को हर रोज परेशान होना पड़ रहा है। जेके हॉस्पिटल के सामने तो बारिश की वजह से सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गए हैं। इस वजह से हादसे होने का डर भी बना रहता है।

सीमेंट क्रांकीट होगी सड़क, गड्ढों से मिलेगी राहत- यह सड़क सीमेंट क्रांकीट होगी। इससे राहगीरों को गड्ढों से बड़ी राहत मिल जाएगी। विधायक शर्मा ने गुरुवार को समीक्षा बैठक भी की और अधिकारियों को अच्छी क्वॉलिटी की सड़क बनाने को कहा।

मुख्य सचिव अनुराग जैन ने राष्ट्रीय एकता दिवस की दिलायी शपथ

भोपाल (नप्र)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में प्रातः 10 बजे राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलायी। इसके पूर्व सरदार वल्लभ भाई पटेल के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। शपथ में सभी अधिकारियों-कर्मचारियों ने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करने और अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प लिया। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, श्री के.सी. गुप्ता, श्री संजय दुबे, श्री संजय कुमार शुक्ल, श्री शिवशेखर शुक्ला सहित मंत्रालय, विंध्याचल,सतपुड़ा भवन और पुलिस विभाग के अधिकारी- कर्मचारी उपस्थितरहे।

मंत्री सुश्री भूरिया ने झाबुआ में हरी झंडी दिखाकर किया 'एकता दौड़' का शुभारंभ

- सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर राष्ट्रीय एकता का संदेश

भोपाल (नप्र)। देश के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर झाबुआ में भव्य 'एकता दौड़ ' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर उनके साथ पुलिस अधीक्षक श्री शिव दयाल सिंह, जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे। झाबुआ के ऐतिहासिक राजवाड़ा परिसर में मंत्री सुश्री भूरिया ने सरदार पटेल के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसके बाद उपस्थित जनसमूह को राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाई गई। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्र भारत को एक सूत्र में पिरोने का महान कार्य किया। उन्होंने देश की 562 रियासतों का एकीकरण कर अखंड भारत का निर्माण किया। हमें उनके जीवन से एकता, दृढ़ संकल्प और राष्ट्र सेवा की प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि वे राष्ट्रीय एकता, भाईचारे और समर्पण की भावना को अपने जीवन में अपनाएँ। कार्यक्रम में स्कूली एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थी, एनसीसी कैडेट, एनएसएस स्वयंसेवक, पुलिस विभाग के अधिकारी-कर्मचारी एवं सामाजिक संस्थाएँ बड़ी संख्या में शामिल हुईं।

अंजुमन इस्लामिया स्कूल का फरमान शुक्रवार को होगा अवकाश

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के मालवीय चौक स्थित अंजुमन इस्लामिया इंग्लिश मीडियम स्कूल ने एक नया आदेश जारी किया। इसमें कहा गया कि नए सत्र 2025-26 से स्कूल शुक्रवार को बंद रहेगा और रविवार को खुलेगा। मैसेज बच्चों के पेरेंट्स के मोबाइल पर भेजा गया। मैनेजमेंट का कहना है कि जुमे की नमाज के कारण बच्चे स्कूल नहीं आते हैं, इसलिए शुक्रवार को छुट्टी रखने का निर्णय लिया गया। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा ने स्कूल के इस आदेश को तुगलकी फरमान बताते हुए कड़ा विरोध जताया था। जिला शिक्षा अधिकारी को जानकारी मिलने के बाद टीम स्कूल पहुंची और गेट पर लगे ताले को तुड़वाया गया है। ऐसे में अंजुमन इस्लामिया बोर्ड ने शुक्रवार को स्कूल की छुट्टी और रविवार को स्कूल लगने का आदेश निरस्त कर दिया गया है।

स्कूल प्रबंधन पर कार्रवाई की मांग- भाजपा मोर्चा ने कलेक्टर को पत्र लिखकर स्कूल प्रबंधन पर कार्रवाई की मांग की थी। पत्र में कहा गया कि 2024 तक स्कूल रविवार को बंद रहता था और परिवार, माता-पिता और बच्चों की सुविधाओं के लिए यह जरूरी है।

प्रबंधन बोला- बच्चे जुमे के दिन नहीं आते- स्कूल प्रबंधक अन्नू अनवर ने बताया कि अंजुमन इस्लामिया के शहर में 6 स्कूल और 1 कॉलेज हैं। मालवीय चौक स्थित इंग्लिश मीडियम स्कूल को छोड़कर सभी स्कूल में शुक्रवार को छुट्टी रहती है। इसका कारण यह है कि इस दिन बच्चों की उपस्थिति बहुत कम रहती है।

पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने मंच से गालियां दीं, मारने धमकाया

दामोदर यादव बोले- ठठरी बार देना मतलब जला देना होता है, ये नालायक की भाषा

भोपाल (नप्र)। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री 7 नवंबर को दिल्ली के छतरपुर से सनातन एकता पदयात्रा शुरू करने जा रहे हैं। इस यात्रा को रुकवाने के लिए दलित पिछड़ा समाज संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दामोदर यादव सोमवार को हाईकोर्ट में याचिका दायर करेंगे।

भोपाल में दामोदर यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा, धीरेंद्र शास्त्री ने हरियाणा के एक मंच पर मुझे गालियां दीं। मारने की धमकी दी। धीरेंद्र ने कहा कि जो श्रीमान हमारी यात्रा रोकना चाहते हैं, मेरे पास उसका मोबाइल नंबर नहीं है, नहीं तो मैं फोन करके मोबाइल पर ही ठठरी बार देता।

दामोदर ने कहा - मैं बुंदेलखंड से आता हूं, ठठरी बार देने का मतलब होता है आदमी को जला देना। किसी नालायक की भाषा ऐसी हो सकती है। वे कहते हैं कि अछूत हमसे दूर हो जा।

प्रदेशभर में धीरेंद्र शास्त्री के पुतले जलाएंगे- दामोदर यादव ने कहा, 2 से 6 नवंबर तक मध्यप्रदेश के दर्जनों जिलों में इस यात्रा के विरोध में धरना प्रदर्शन, आंदोलन और ज्ञापन दिए जाएंगे। पुतला दहन भी किया जाएगा, क्योंकि मैं धीरेंद्र शास्त्री को एक संत नहीं मानता। कोई संत ऐसी भाषा नहीं बोलता। वह धार्मिक कथाओं के माध्यम से उन्माद फैलाने की कोशिश कर रहा है। हम यह तय कर रहे हैं कि कौन से थाने में एफआईआर कराएंगे।

यात्रा रोकने की मांग पर शास्त्री ने कहा था- छोड़ेंगे नहीं

दामोदर यादव ने मंगलवार को धीरेंद्र शास्त्री की यात्रा को रोकने की मांग की थी। इस संबंध में राष्ट्रपति को पत्र लिखने और भोपाल में बड़ा आंदोलन करने की चेतावनी भी दी थी। पलटवार करते हुए धीरेंद्र शास्त्री ने बुधवार को हरियाणा में कथा के दौरान कहा था - लोग यात्रा रोकने के लिए कोर्ट जाने की धमकी दे रहे हैं। उन्हें पता ही नहीं है कि हम बहुत टेढ़े आदमी हैं। उन्हें छेड़ना नहीं चाहिए था, छेड़ा है तो हम छोड़ेंगे भी नहीं। आज वो 20 परसेंट हैं, आप 9 राज्यों में अल्पसंख्यक हो गए। जिस दिन वो 50 परसेंट पहुंच जाएंगे, तो आपके ब्रज में भी वही टोपी वाले दिखाई पड़ेंगे। भारत को बचाना है, अपनी संस्कृति को बचाना है, तो जातिवाद और भेदभाव से ऊपर उठकर हमको सनातनी बनना है।

बैतूल-भोपाल हाईवे की बदहाली पर गडकरी नाराज

बैतूल (नप्र)। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने बैतूल-भोपाल हाईवे की जर्जर हालत पर नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि इसकी खराब हालत के लिए प्रोजेक्ट डायरेक्टर (पीडी) और रीजनल ऑफिसर (आरओ) की जवाबदेही तय होनी चाहिए।

गडकरी ने यह बयान 28 अक्टूबर को औद्योगिक संगठन सीआईआईके एक कार्यक्रम में दिया, जिसका वीडियो शुक्रवार (31 अक्टूबर) को सामने आया।

गडकरी ने कहा कि खराब सड़क पर अगर हादसों की संख्या बढ़ रही है तो अधिकारी के परफॉर्मेंस का ऑडिट करो। देखो उसने कैसा काम किया। ऐसे अधिकारी का प्रमोशन मत करो। जो काम किया गया है उसका परफॉर्मेंस ऑडिट जरूरी है। अच्छी सड़कों की जरूरत है। बैतूल-भोपाल सड़क को लेकर मैंने मंत्रालय के सचिव को पत्र भी भेजा है।

परिवार समेत बरेठा घाट से गुजरे थे गडकरी- दरअसल, 25 अक्टूबर को गडकरी परिवार के साथ सतपुड़ा टाइगर रिजर्व आए थे। इस दौरान वे बैतूल-भोपाल हाईवे पर बरेठा घाट होकर गुजरे थे। यहां का एक वीडियो भी वायरल हुआ था। जिसमें भरी बारिश में सड़क निर्माण हो रहा था। दावा किया गया कि गडकरी के दौरे को देखते हुए बारिश में डामरीकरण किया गया।

45 साल बाद स्कूल लौटे थल सेना और नौसेना प्रमुख

आर्मी चीफ बोले-इस स्कूल ने मेरे जीवन की नींव रखी डिप्टी सीएम बोले-ऑपरेशन सिंदूर के दोनों हीरो रीवा में

रीवा (नप्र)। रीवा के सैनिक स्कूल के पूर्व छात्र नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी और थल सेना प्रमुख उपेंद्र कुमार द्विवेदी 45 साल बाद अपनी स्कूल यानी रीवा के सैनिक स्कूल पहुंचे। यहां उन्होंने एक प्रतियोगी कार्यक्रम में भाग लिया। शुक्रवार को शहर में कड़ी सुरक्षा के बीच वे रीवा पहुंचे। इस दौरान प्रशासन और पुलिस हाई अलर्ट मूड में रहे। इस दौरान दोनों सेना प्रमुख स्कूल के दिनों को याद करते हुए नजर आए। बता दें कि नेवी चीफ दिनेश कुमार त्रिपाठी और आर्मी चीफ उपेंद्र द्विवेदी दोनों एक ही स्कूल से पढ़े हुए हैं। स्कूल के दिनों से ही दोनों के बीच दोस्ती भी पक्की है। जनरल द्विवेदी और एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी साल 1973 से 1981 तक मध्यप्रदेश के सैनिक स्कूल रीवा में छात्र थे। भारत के सैन्य इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि सेना और नौसेना प्रमुख एक ही राज्य, स्कूल और बैच से हैं। वास्तव में वे कक्षा में एक ही बेंच पर बैठते थे। रविवार को कार्यभार संभालने वाले थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी और एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी सैनिक स्कूल रीवा (1973 बैच) के पूर्व छात्र हैं।

बड़वानी में बस पलटी, एक श्रद्धालु की मौत

नर्मदा परिक्रमा पर जा रहे 54 यात्री घायल, दबे हुए लोगों को क्रेन से निकाला

बड़वानी (नप्र)। बड़वानी जिले के खेतिया थाना क्षेत्र में नर्मदा परिक्रमा के लिए जा रही श्रद्धालुओं से भरी बस खेतिया-पाटी रोड घाट पर पलट गई। हादसे में एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 54 से अधिक लोग घायल है। घटना के बाद रेस्क्यू अभियान चलाकर घायलों को निकाला और अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं मौके पर फंसे दो लोगों को निकालने के लिए क्रेन बुलाई गई। जानकारी के अनुसार, हादसे के समय बस में करीब 55 यात्री सवार थे। ये सभी अलग-अलग जिलों के रहने वाले थे। श्रद्धालु इंदौर से वाहन में ओंकारेश्वर और बड़वानी होते हुए प्रकाशा जा रहे थे। स्थानीय लोगों ने बताया कि हादसा मंगलवार सुबह लगभग 9 बजे खेतिया और पाटी के बीच बायगौर में हुआ। बस पलटते ही चीख-पुकार मच गई। ग्रामीण तुरंत मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचित किया। खेतिया और पाटी थाना प्रभारी सहित पुलिस बल तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे।